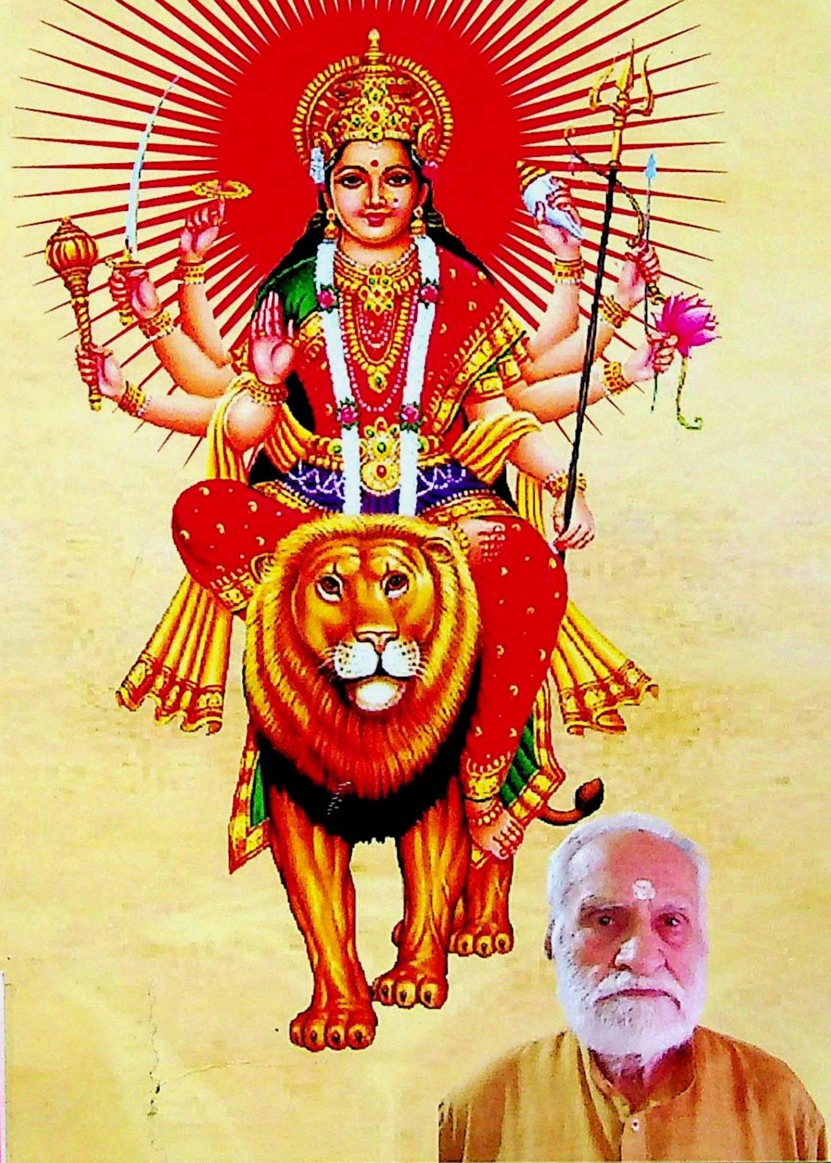
सच्ची-मुच्ची



लेखक
हितेश कुमार शर्मा
गणपति भवन, सिविल लाईन, बिजनौर-246701 (उ.प्र.)

परिचय

नाम - हितेश कुमार शर्मा

पिता का नाम - डॉ. स्व. आर.पी.शर्मा

माता का नाम - स्व. श्रीमति रामसुमरनी शर्मा

शिक्षा - बी.काम, एल.एल.बी (एडवोकेट)

पत्नी का नाम - श्रीमति ऊषा शर्मा

पुत्रगण - तपेश शर्मा अधिवक्ता, ललित शर्मा अधिवक्ता, आशुतोष शर्मा प्राकृतिक चिकित्सक एवं व्यवसाय तथा विदुर भारद्वाज, कमाण्डेन्ट सी.सु.ब.

जन्म तिथि- 30 दिसम्बर सन् 1936

प्रकाशन - स्वरचित कविताओं के 27 संकलन प्रकाशित तथा सामूहिक 15 काव्य संकलन संपादित व्यंग्य पुस्तक हम आज़ाद हैं समसामयिक लेख जनता जाग्रत हो तथा लघु पुस्तिकाएँ महँगाई की मार व खामोश सरकार सो रहे हैं तथा हमारी न्यायिक व्यवस्था भ्रष्टाचार कहाँ है, प्रजातंत्र कहाँ है, यह देश किसका है, यक्ष प्रश्न (प्रलय चार वर्ष बाद क्यो) जय हो हिन्दुस्तान की, अत्र तत्र जनतंत्र सत्यम शिवम् सुन्दरम, बेटियाँ कैकेयी, दादी सीधी सादी थी, मैं गजल हूँ, फर्जन्दे काश्मीर,मैं स्वयंभू तीन शोध-पत्र स्वीकृत एवं प्रकाशित।

संपादन - ब्राह्मण अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

व्यापार कर कानून-पर 11पुस्तकें लिखी। इसके अतिरिक्त भिन्न-भिन्न विषयों पर लगभग 19 पुस्तकें लिखी और प्रकाशित की।

विशेष सम्मान-1. ए.बी.आई. यू.एस.ए.द्वारा मैन ऑफ दी इयर 2000 की उपाधि 2. इन्टरनेशनल नैचरोपैथी इन्सटीट्यूट द्वारा डाक्टर की उपाधि 3. रोटरी अन्तर्राष्ट्रीय मण्डल 3100 के गवर्नर (98-99)

साहित्यिक सम्मान - भिन्न-भिन्न संस्थाओं द्वारा अब तक 215 सम्मान प्राप्त हो चुके हैं।

सम्पर्क - गणपति भवन, सिविल लाइन्स, बिजनौर-246701 (उ0प्र0)

फोन. - 01342-262085 **मो.**- 9319935979

ई-मेल- kumar1936hitesh@gmail.com

सादर भेंट

सच्ची-मुच्ची

सच्ची-मुच्ची

2021

प्रथम संस्करण

मूल्य रु० 180/- मात्र प्रति पुस्तक

लेखक

हितेश कुमार शर्मा

गणपति भवन, सिविल लाइंस,
बिजनौर-246701 (उ०प्र०)

दूरभाष : 01342-262085, चलभाष : 9319935979
Email : kumar1936hitesh@gmail.com

कम्प्यूटर टाइप सैटिंग: बब्लू सैनी
bablu9012216659@gmail.com

प्रकाशक

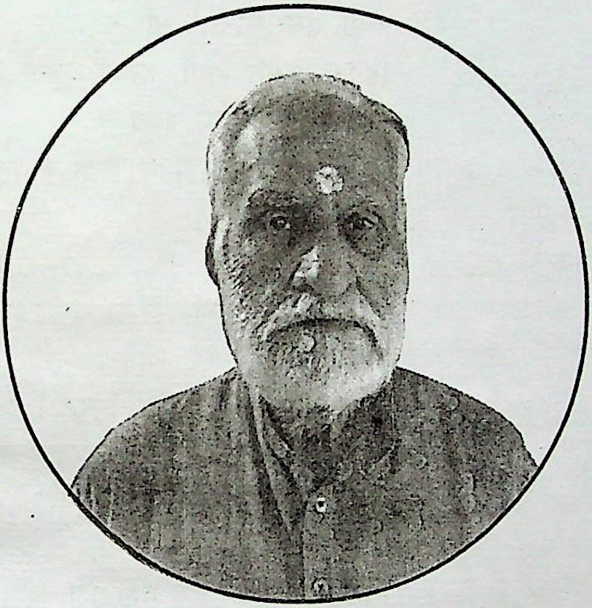
**हरिगंगा प्रकाशन, गणपति भवन, सि विल लाइंस,
बिजनौर-246701 (उ०प्र०) भारत**

मुद्रक

रवि आफसैट प्रिंटर्स

निकट-रामलीला ग्राउंड, बिजनौर
सम्पर्क-7017832056

सच्ची-मुच्ची



लेखक
हितेश कुमार शर्मा
गणपति भवन, सिविल लाइंस, बिजनौर-246701 (उ.प्र.)

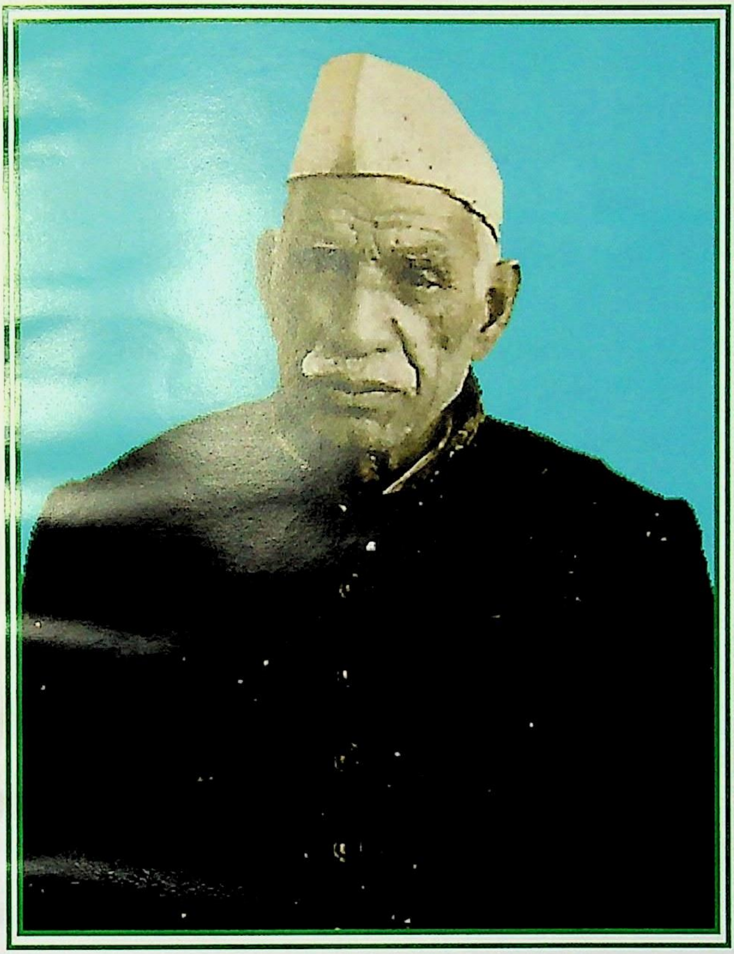
परिचय

स्व० हरिस्वरूप शर्मा

पिता का नाम	स्व0 बलदेव सहाय
माता का नाम(सम्भवत:)	स्व0 कल्याणी
पत्नी -	स्व0 गंगादई
पुत्र -	स्व0 पं0 रघुनाथ प्रसाद शर्मा
पुत्र वधु -	स्व0 रामसुमरनी शर्मा
पौत्र -	हितेश कुमार शर्मा, हरीश कुमार शर्मा
पौत्र वधु -	उषा शर्मा, कुसुम शर्मा
पौत्री -	सरोज, रमा, उमा, पूनम, लता, लवली, हिमानी, भारती
पौत्री जामाता -	स्व. ऋषि कुमार गौड़, ज्ञानेश्वर कुमार गौड़, सुरेश कुमार शर्मा, रोहित वेदी, मुकेश शर्मा, पंकज शर्मा, शरद, योगेन्द्र कुमार
प्रपौत्र -	तपेश, ललित, आशुतोष, विदुर, विवेक, नवनीत
प्रपौत्र वधु -	अलका, बबीता, वन्दना, ममता, नैना, विभा
परपौत्री -	भावना, श्रद्धा, ईशा, वृन्दा, तरणी, काम्या, रिधिमा
परपौत्र -	सार्थक, मयंक, दक्ष भारद्वाज, यश भारद्वाज, येधान्त, किआंश, अव्युक्त।
परपौत्र वधु -	चारू भारद्वाज, अर्षिता
परपौत्र जामाता -	अनुज अग्निहोत्री, मनन गुप्ता

■■■

समर्पण



आयुर्वेद शास्त्री ज्योतिषाचार्य

कीर्तिशेष पं0 स्व. हरिस्वरूप शर्मा

की

पुण्य स्मृति में समर्पित यह पुस्तक

●

उषा शर्मा

हितेश कुमार शर्मा

प्रथमाक्षर

जब मैं कक्षा-10 का विद्यार्थी था तब विद्यालय में सब बच्चों से कहा गया कि सब बच्चे रामायण की एक चौपाई कागज पर लिखकर लायेगे। और अच्छी अच्छी चौपाईयाँ कक्षाओं की दीवारों पर लगाई जायेंगी। तब मेरे बाबा जी ने कहा कि तुम यह चौपाई लिखकर ले जाओ-

कहहिं सत्य प्रिय वचन विचारी-जागत सोवत शरण तिहारी।

मेरी चौपाई बहुत पसंद की गयी। मुझे शाबासी मिली और उसी ही दिन भगवान राम की कृपा से सत्य बोलने का अभ्यास हो गया। झूठ पर क्रोध आने लगा प्रयास करता रहा और आज भी करता हूँ कि झूठ ना बोलूँ जब तक साथ दे तब तक सत्य ही बोलता रहूँ।

मैं रोटरी में गवर्नर निर्वाचित हुआ। रोटरी में चार सिद्धान्त है।

1. क्या यह सत्य है।
2. क्या यह सबके लिए उचित और सही है।
3. क्या इससे सदभावना और मित्रता दृढ़ होगी।
4. क्या यह सबके लिए लाभदायक है।

रोटरी का जन्म 1905 में हुआ और रामायण इससे लगभग 400 वर्ष पूर्व लिखी गयी। मैंने रोटरी के सिद्धान्तों को रामायण की उक्त चौपाई से जोड़ दिया और यह सिद्ध किया कि जो बात रामायण में पहले लिखी गयी वही रोटरी ने भी दोहराई अतः हमें सत्य के अनुरूप आचरण करना चाहिए और मेरी प्रत्येक चौपदी जिसको मैंने सच्ची मुच्ची का नाम दिया है इसी सत्य पर आधारित है। कल्पनात्मक अथवा झूठे सपनों पर कोई सच्ची मुच्ची नहीं लिखी गयी। प्रत्येक बात को काव्य में ढालना आदत बन चुकी है। सैकड़ों लेख, हजारों कविताऐं, गज़लें, चौपदियाँ, छंद लिख दिये। उसमें से कुछ सच्ची मुच्ची इस पुस्तक में संकलित की गयी हैं। प्रयास किया है कि किसी सच्ची मुच्ची से कोई आहात न हो। किन्तु यदि कहीं भूल हो गयी है तो उसके लिए क्षमा प्रार्थी हूँ।

मेरी प्रार्थना को स्वीकार करके साहित्य भूषण श्री सुरेश प्रकाश शुक्ल द्वारा इस पुस्तक की भूमिका लिखी गयी जिसके लिए मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। उनकी भूमिका ने पुस्तक को सवार दिया। बहुमूल्य बना

दिया। मैं उनका अभिनन्दन करता हूँ।
पुस्तक में सच्ची मुच्ची की परख मेरी पत्नि उषा द्वारा की गयी है जो सच्ची मुच्ची उन्हें पसंद नहीं आई वह निकाल दी गयी। सदैव वह मेरा मार्ग दर्शन करती रही है इस पुस्तक में भी किया है। आशा है मेरी अन्य पुस्तकों में भी उनका सहयोग मुझे मिलता रहेगा। उषा के बगैर जैसे सूरज का अस्तित्व नहीं है ऐसे ही उषा के बगैर मैं भी शून्य हूँ। बब्लू सैनी ने पुस्तक के टाईप में परिश्रम करके बिखरी हुई सच्ची मुच्ची एकत्रित करके पुस्तक का रूप दिया। मेरे सहयोगी जागेश ने प्रूफ रीडिंग किया और पुस्तक प्रकाशनार्थ रवि ऑफसैट प्रिन्टर्स को सौंप दी।
यह पुस्तक बाबा जी की पुण्य स्मृति में समर्पित है। मेरे बाबा जी बहुत अच्छे थे। मुझसे बहुत प्यार करते थे। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह जहाँ भी रहें सुख और शांति से रहें। उनकी आत्मा को प्रभु का आशीर्वाद प्राप्त हो और उनका आशीर्वाद हमें मिलता रहे।
मेरी बहन वीरबाला शर्मा ने मेरी मद्द की और उसी के सहयोग से मैं बाबा जी के पिता जी का नाम जान सका। वह प्रत्येक काम में मेरा सहयोग करती रहती है। उसे बहुत बहुत आशीर्वाद। मेरे सभी परिजन पुरजन इस साहित्यिक यज्ञ में मेरा सहयोग करते रहे हैं। मैं सभी के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।
स्वतंत्रता दिवस की वर्षगांठ के अवसर पर प्रकाशित यह पुस्तक पाठकों को समर्पित है। कृपया इसके संदर्भ में अपनी निष्पक्ष राय देकर अनुग्रहीत करें।
दिनांक 15.08.2021

हितेश कुमार शर्मा
गणपति भवन, सिविल लाईन,
बिजनौर-246701 (उ0प्र0)

भूमिका

वयोवृद्ध वरिष्ठ साहित्यकार श्री हितेश कुमार शर्मा जी अपनी साहित्य और समाज सेवा के लिए देश भर में विख्यात हैं। वे एक समर्थ कवि, लेखक और संपादक होने के साथ ही कानून के ज्ञाता कुशल एडवोकेट भी हैं। दशकों से मेरा उनसे परिचय है, आत्मीयता है। दशकों से उनके द्वारा संपादित और प्रकाशित हो रही हिन्दी मासिक पत्रिका ब्राह्मण अन्तर्राष्ट्रीय समाचार देशभर में लोकप्रिय है। साहित्यकार होने के नाते मुझे भी वे इसमें प्रकाशित करते हैं। उन्होंने बहुत लिखा है। उनके अपने उन्नीस काव्य संग्रह पंद्रह सम्पादित काव्य संकलन, व्यापार कर कानून पर ग्यारह और अन्य विविध विषयों पर लिखे सत्रह ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। शर्मा जी की इस अनवरत साहित्य साधना और सामाजिक सेवा के लिए उन्हें देश की अनेक संस्थानों द्वारा दो सौ पंद्रह से अधिक सम्मान प्राप्त हो चुके हैं।

उनके हरिगंगा प्रकाशन द्वारा उनकी नवीनतम प्रकाशित होने वाली पुस्तक चौपदिया या चतुष्पदी संग्रह "सच्ची-मुच्ची" की भूमिका लिखने हेतु पांडुलिपि के अवलोकन करने का सुअवसर मिला।

चतुष्पदी का उल्लेख यद्यपि काव्य शास्त्रों में नहीं किया गया है और न मुक्तक का ही, लेकिन रोचक छंद के रूप में आज बड़ी संख्या में कवि इनका सृजन व प्रकाशन कर रहे हैं। चौपदियाँ या चतुष्पदी से तात्पर्य चार समान पद या चरणों वाले उन सभी छंदों से है, जिसमें मात्रिक अनुशासन और सुन्दर लय का समावेश हो। चारों चरणों में तुकांत समान या दो-दो में असमान भी हो सकते हैं। इस दृष्टि से मुक्तक छंद भी चतुष्पदी में आता है जिसमें तीसरा चरण अतुकांत रहा करता है। हितेश कुमार शर्मा जी के इस संग्रह 'सच्ची-मुच्ची' में उनकी सभी चौपदियाँ मुक्तक की भाँति ही सृजित की गई हैं, जिनकी कुल संख्या एक हजार तेरह है। इनमें घोर भ्रष्टाचार के प्रति आक्रोश व्यक्त है तो सामाजिक विसंगतियों पर घोर चिंता है। नेताओं और अपराधियों पर कटाक्ष है तो देशभक्ति का जज्बा भी है। काला धन, आतंकवाद, घुसपैठ, कश्मीर समस्या, रिश्वतखोरी, चोरबाजारी, मिलावट, लचर शिक्षा व्यवस्था, स्वार्थी राजनीति, ढीली न्याय व्यवस्था,

मीडिया का दायित्व, चीन व पाकिस्तान का शत्रुभाव आदि देश व सामाजिक समस्याओं को बखूबी उठाया गया है। लेकिन इनसे लड़ने में और भारत को उन्नति के शिखर पर पहुँचाने को दृढ़ संकल्पित प्रधानमंत्री नरेंद्र दामोदर मोदी जी और उनके शासन की प्रशंसा भी की गई है। देखें कुछ उद्धरण,

कवि ने कृति के आरम्भ में ही घोर भ्रष्टाचार पर चिंता इन शब्दों में जाहिर की है, घोर भ्रष्टाचार की, दलदल में आकर फँस गई,

न्याय करने हो चली, अन्याय में बेबस भई।
बेईमानों ने ईमानदारी को, फिर से दी सजा,
बीच में गुंडों के फिर से हाय रजिया फँस गई।।

देश में अनेक घोटालेबाजों पर आज भी केस चल रहे हैं। जिसे जहाँ अवसर मिलता है वह बेइमानी और लूट-घोटाले करने में लग जाता है। देखें,

देश दलालों के हाथों में फँसा हुआ, सर-पांवों तक घोटालों में धँसा हुआ। दुश्मन से कैसे बदला ले सकता है, तुष्टिकरण आरक्षण में मन बसा हुआ।।

दुष्कर्म नारी जाति की ऐसी वीभत्स त्रासदी है, जिससे वह जीवन भर उबार नहीं पाती है। रुके नहीं दुष्कर्म अभी तक छेड़-छाड़ भी जारी है, शायद कुछ लोगों को इसकी मनोरोग बीमारी है।

कालाधन भारतीय अर्थव्यवस्था को घुन की तरह खा रहा है। कवि लिखता है,

काले धन पर हो रही है जनता उद्विग्न,
नाम खुलासे में पड़ा, किस कारण से विघ्न।

आतंक की समस्या वैसे तो विश्वव्यापी है, लेकिन भारतवर्ष में, विशेष रूप से कश्मीर में यह दशकों से लोगों का जीना मुहाल किये हुए है। कवि कहता है,

आतंकी गुसपैठ में कुछ भी नहीं विचित्र,
अनगिनती गद्दार हैं अपने घर में मित्र।

रिश्वतखोरी, चोरबाजारी और मिलावट पर कवि कहता है,

रिश्वतखोरी, चोरबजारी और मिलावट भइया,
इनके कारण आज देश की डूब रही है नइया।

कवि में देशभक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है। वह कहता है,

मेरा भारत देश महान, मेरा प्यारा हिन्दुस्तान,
सफल हो गया पूर्णरूप से अपना चंद्रयान अभियान।

चीन और पकिस्तान की धूर्तता को भला कवि कैसे उपेक्षित कर सकता है,
चीन हमेशा पाकिस्तानी पक्ष लिया करता है,
बात गलत हो तब भी उसके साथ खड़ा रहता है।

इतनी समस्याएँ होते हुए भी कवि आश्वस्त है कि देश का कुशल नेतृत्व अपने सहयोगियों के साथ मिलकर सब कुछ ठीक कर लेगा। पंक्तियाँ देखें-

अब अभिमन्यु अकेला भी नहीं है दोस्तों,
द्वारका के कृष्ण उसके साथ हैं यह सोच लो।
कंस या चाणूर ज्यादा दिन नहीं बच पायेंगे,
बेईमानों और कुछ दिन ऐश का सुख भोग लो।।

इस प्रकार से सुकवि हितेश कुमार शर्मा जी ने देश के विविध विषयों और विसंगतियों पर चौकड़ियाँ लिखी हैं। उनकी भाषा और शैली अत्यंत सरल है, सम्प्रेषण योग्य है। मुझे विशवास है, यह कृति साहित्य जगत और पाठकों को रुचिकर लगेगी। उनसे पाठकों को ऐसी और उपयोगी कृतियों की आशा है। मैं इस अनूठी रचना के लिए प्रिय मित्र हितेश कुमार शर्मा जी को 'सच्ची-मुच्ची' में बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

-सुरेश प्रकाश शुक्ल

(कवि, उपन्यासकार, व्यंग्यकार), (उ0प्र0 हिंदी संस्थान द्वारा साहित्य भूषण सम्मान से अलंकृत) संस्थापक-प्राची साहित्य एवं अवधी शोध संस्थान, सम्पादक-हिन्दी मासिक पत्रिका **प्राची प्रतिभा**

93, पवनपुरी आलमबाग, लखनऊ-226005

मो. 9452741071

■■■

सच्ची-मुच्ची

1

घोर भ्रष्टाचार की, दलदल में यानि फँस गई।
न्याय करने को चली, अन्याय से बेबस भई।
बेईमानों ने ईमानदारी को, फिर से दी सजा–
बीच में गुण्डों के फिर से, हाय रजिया फँस गई।

2

अब अभिमन्यु अकेला भी नहीं है दोस्तो।
द्वारिका के कृष्ण, उसके साथ हैं, यह सोच लो।
कंस या चाणूर ज्यादा दिन नहीं बच पाएँगे–
बेईमानों जितने दिन भी हो सके सुख भोग लो।

3

जाग्रत जनता हुई है, औ' जनार्दन साथ हैं।
जीत उसकी है सुनिश्चित, साथ जब श्रीनाथ हैं।
अब विभीषण और जयचन्द भी नहीं बच पाएँगे–
अब सुदर्शन चक्र लेकर उठे अनगिन हाथ हैं।

4

शत्रुता जिसकी प्रकृति है, मीत हो सकता नहीं।
जल को कितना भी मथो, नवनीत हो सकता नहीं।
सामने शत्रु है तो क्या भागना रणक्षेत्र से–
सत्य पर मिथ्या कभी भी, जीत हो सकता नहीं।

5

देश में जो हो रहा, होने को या तैयार है।
कह रहे केवल सभी मोदी ही जिम्मेदार है।
तो चलो फिर देश क्यों ना, सौंप दे उसको हितेश–
सबकी नजरों में अगर, वह सबसे जिम्मेदार है।

6

बच्चों को मध्याह्न भोज में, जहर मिल रहा खाने में।
और व्यस्त हैं सारे नीरो, बंशी मधुर बजाने में।
बच्चे बीस मरे या बाईस, इसकी चिन्ता जरा नहीं–
घोटाले में लिप्त सभी हैं, अपनी जान बचाने में।

7

भीष्म पितामह पुनः शान्त हैं, शकुनि फेंक रहा पाँसे।
आज सभी यह सोच रहे हैं, मोदी को कैसे फाँसे।
मोदी अगर आ गया तो फिर, घोटाले कैसे होंगे–
घोटाला करने वालों की, देखों रूकी हुई साँसे।

8

श्री केदारनाथ त्रासदी केवल मात्र झरोखा थी।
जो गन्दा कर रहे तीर्थ को, उनकी टोकी-टोका थी।
देश कर रहे हैं जो गन्दा सावधान वह हो जाएँ–
महाप्रलय आई तो खैर, नहीं है उनकी नौका की।

9

सामूहिक बलात्कार की, घटनाएँ क्यों रूकी नहीं।
क्यों स्वदेश के नेताओं की, आँख शर्म से झुकी नहीं।
तुष्टिकरण रहेगा हावी, जब तक भारत के अन्दर–
दुष्कर्मी हत्यारों की, रूकनी तब तक धुकधुकी नहीं।

10

बेईमान की खातिर जब-जब, ईमानदार दण्डित होगा।
जनता भी जागेगी सारा भूमण्डल कम्पित होगा।
जनादेश जो दिया तुम्हें, जनता ने उसका मान करो–
वर्ना वह दिन दूर नहीं जब, जनादेश खण्डित होगा।

11

जनता अगर नहीं जागी तो देश सभी सो जाना है।
राजनीति को दुःशासन हाथों नंगा हो जाना है।
जितना भी हो सके देश को, जी भरकर लूटो यारो–
घड़ा जरा भर जाने दो फिर, महाप्रलय को आना है।

12

जिन्दगी को हर तरह से, झेलिये हँसकर जनाब।
सिर्फ चिन्ता और चिन्ता में, न कीजै दिन खराब।
दुख अगर आया, तो पीछे-पीछे सुख भी आएगा–
गम गलत करने का माध्यम, तो नहीं केवल शराब।

13

फिर नापाकिस्तान ने की है छल से घात।
पागल घोड़े की तरह, चला रहा है लात।
क्यों लगाम देकर उसे, नहीं कर रहे पस्त–
सिंह पुत्र हो कर रहे, क्यों मैत्री की बात।

14

जिसने अपने कर दिए, पाँच जवान शहीद।
अब तुम भी उठकर करो, उसकी दशा पलीद।
शठे-शाठ्यम् का रहे, समाचरित सिद्धान्त–
शत्रु पर हमला करो, आज तुरन्त मजीद।

15

शत्रु हम पर हो रहा, नित हमलावर मित्र।
भारत माँ के वक्ष पर, बने रक्त के चित्र।
शत्रु पर हमला करो, रहे गगन से बोल–
गुरु गोविन्द, राणा, शिवा और हमारे पितृ।

16

हमलावर को दीजिए, क्रूर कठोर जवाब।
कागज लिखे विरोध के, होगा समय खराब।
आवश्यक जब शस्त्र हो, शास्त्र कीजिए बंद–
शत्रु का कर दीजिए, खाना आज खराब।

17

अब की बार चुनाव में, चयनित हों वह लोग।
जिनको भ्रष्टाचार का, नहीं लगा हो रोग।
जनता के हित में बने, जनता की सरकार–
नहीं असम्भव इस तरह, का बनना संयोग।

18

संसद में घुस ना सके, कोई भी मक्कार।
करो बहिष्कृत उन्हें जो, बने हैं ठेकेदार।
घोटाला अतिरिक्त कुछ, आशा इनसे नाहिं–
सभी पुराने चोर हैं, जनता के गद्दार।

19

रैगिंग कैसे रूके कि जब कानून मुलायम है।
इसलिए भारत में अब तक रैगिंग कायम है।
रैगिंग करने वालों को, हो प्राणदण्ड का दण्ड–
रैगिंग करना भी जघन्यतम, क्रूर जरायम है।

20

अबकी बार बदल दो प्यारे।
ठेकेदार पुराने सारे।
नवजवान अब आगे आएँ –
भारत का भवितव्य सँवारे।

21

देश दलालों के हाथों में फँसा हुआ।
पाँव से सिर तक, घोटालों में धँसा हुआ।
शत्रु से कैसे बदला ले सकता है–
तुष्टिकरण, आरक्षण में मन बसा हुआ।

22

उतर गया विक्रांत आज सागर के अन्दर है।
लोग कह रहे ताकतवर, मजबूत कलन्दर है।
लेकिन केवल बातों से कुछ सिद्ध नहीं होता–
जो शत्रु का तोड़ सके सर, वही सिकन्दर है।

23

पशुओं का चारा खाते हैं, बच्चों का मध्याह्न भोज भी।
घोटाला व भ्रष्टाचारी इनकी आदत बनी रोज की।
यह दिमाग से पैदल सारे नई–नई बातें गढ़ते हैं–
बी.जे.पी. दंगा करवाती कोलम्बस ने नई खोज की।

24

नेताओं के लम्बित वादों का निस्तारण शीघ्र क्यों नहीं।
इनको सजा मिले या माफी यह अवधारण शीघ्र क्यों नहीं।
जानबूझकर यह अपने वादों को लम्बित रखवाते हैं–
न्यायपालिका इसका भी संज्ञान ले रही शीघ्र क्यों नहीं।

25

कब तक हम खामोश रहेंगे, सीमा उल्लंघन पर।
कायम रहना होगा कब तक, मैत्री प्रतिबन्धन पर।
क्यों उसकी ही भाषा में हम, उत्तर ना देते हैं–
जब वह लहू लगाता है, नित माथे के चन्दन पर।

26

रोज सीज फायर उल्लंघन, क्या नापाक इरादे।
भूल गया शान्ति वार्ता में, किए गए जो वादे।
हम क्यों इक बार नहीं, करते सीमा उल्लंघन–
शत्रु हमें समझना छोड़े, कायर सीधे-सादे।

27

वार्ताओं का समय नहीं अब, जो भी था वह बीत गया।
मैत्री का जो अमृत घट था, वैमनस्य में रीत गया।
बहुत हो चुका, अब अन्तिम हो युद्ध, सदा को निर्णायक–
दानवता को फिर परास्त कर, चलो लिखें इतिहास नया।

28

सच्ची-मुच्ची बात लिखी, सच्ची-मुच्ची में।
पूरा है इतिहास छिपा, सच्ची-मुच्ची में।
नेहरू-गाँधी-जिन्ना की, ज़िद था बँटवारा–
झेल रहे हिन्दू-मुस्लिम, सच्ची-मुच्ची में।

29

सोच रहा हूँ मंगल ग्रह पर, जाकर नीड बनाएँ।
गड्ढो वाली भारत की, सड़कों से मुक्ति पाएँ।
अभी वहाँ घोटाला- भ्रष्याचार ना पहुँचा होगा–
ईश्वर करें हमारे नेता, कभी वहाँ ना जाएँ।

30

जयचन्द और विभीषण, जाफर, जो भी मोदी के खिलाफ हैं।
इनकी बातें सभी खोखली, बिना रूई के यह लिहाफ हैं।
शब्द नहीं हैं इनके अपने, इनकी अपनी सोच नहीं है–
इनसे पूछो बात अनर्गल, यह करते किसके बिहाफ हैं।

31

भैया राखी भेज रही हूँ, इसका धर्म निभाना।
सरहद पर शत्रु को अपनी, कभी न पीठ दिखाना।
जिस सेना ने तेरे, बहनोई का सर काटा है–
उनमें से भी कोई एक सर, वीर काटकर लाना।

32

राखी के कच्चे धागों में आशीर्वाद छिपा है।
शुभकामना छिपी बहना की, उसका प्यार छिपा है।
भैया मेरा जुग-जुग जीवे, पाए खुशियाँ सारी–
बहना की रक्षा भाई का वचन, दुलार छिपा है।

33

यात्रा में करना नहीं, प्रेम, प्रीति व्यापार।
अपनी औ' सामान की, रखना साज सँवार।
यदि कोई दे अजनबी खाने को परसाद–
कभी नहीं खाना उसे, हो सकता है वार।

34

अवांछनीय सम्बन्ध है, समलैंगिक व्यभिचार।
सुसमाज करता नहीं, इसे कभी स्वीकार।
चिम्पैंची का दे रहे, जो उदाहरण मित्र–
पशु-पक्षी करते नहीं ऐसा तो व्यवहार।

35

पत्नी आक्रामक हुई, केश हो गए श्वेत।
बच्चों का स्वर भी हुआ, पत्नी के सम्वेत।
कल तक हम हावी रहे, घर के मुखिया सिद्ध–
अब फिसला सब इस तरह ज्यों मुट्ठी में रेत।

36

दूध दही सेवन किया, बने भगत सिंह वीर।
माखन खा श्रीकृष्ण ने, दिया कंस को चीर।
मदिरा-सेवन-माँस ने बदला सभी चरित्र-
नक्सल उग्री बन किया, देशद्रोह बेपीर।

37

फाइल गायब होना भी है गड़बड़ झाला।
और हो गया पक्का, कोयले का घोटाला।
जनता इसकी यदि, प्रतिक्रिया में आई तो-
कर देगी सम्बन्धित लोगों का मुँह काला।

38

डालर महँगा हुआ, हो गया रुपया सस्ता।
इससे बचने का भी ढूँढों कोई रस्ता।
माल विदेशी भारत में, आने से रोको-
तभी सुधर पाएगी अपनी, हालत खस्ता।

39

बहुत हो चुका, अब कुछ और नहीं सहना है।
हिन्दू-मुस्लिम सबको ही मिलकर रहना है।
अच्छे व्यक्ति का चुनाव करना है हमको-
नहीं भुलावे में नेताओं के बहना है।

40

आरक्षण यूँ तो नहीं जन्मसिद्ध अधिकार।
शायद बन्द न कर सकें, इसे कोई सरकार।
किन्तु देशहित के लिए, संशोधन अनिवार्य-
हर वांछित परिवार को, मिले एक ही बार।

41

शत्रु हमला कर रहा संधि रेखा तोड़।
पागल घोड़े की तरह, लगा रहा है दौड़।
कायर नेता दे नहीं, उसको रहे लगाम–
पुनः देश में जन्म ले, वीर शिवा बेजोड़।

42

सुने सभी कानूनदां, मेरी विनती नेक।
दुष्कर्मी कानून की, कभी न पाए टेक।
गैंगरेप, रैंगिंग करे, या फेंके तेजाब–
उसे जमानत ना– मिले, प्राणदण्ड की छेक।

43

हिन्दू-मुस्लिम एक हैं, नेता किन्तु अनेक।
दोनों को लड़वा रहे, रहे रोटियाँ सेक।
मिल-जुलकर दोनों रहे, बढ़े प्रेम सौहार्द–
कौमी ठेकेदार यदि मिट जाएँ प्रत्येक।

44

गैंगरेप, तेजाब के दुरुपयोग का खेल।
नहीं रुक रहे किसलिए, रही है जनता झेल।
इन आरोपों से हटें, जमानती कानून–
वाद सिद्ध हो तो चले, मृत्युदण्ड की रेल।

45

यू॰पी॰ नहीं बँटेगी बोले मंत्री श्री शिवपाल।
तीन सौ सत्तर नहीं हटेगी उमर कहा तत्काल।
यह जो मंत्री समझ रहे हैं, प्रान्तों को जागीर–
ऐसे सब ठेकेदारों की कुर्सी देओ उछाल।

46

एक करे यदि समर्थन, दूजा करे विरोध।
परिभाषित ऐसे हुआ, राजनीति का बोध।
बात सही हो या गलत, अन्तर पड़ता नाय–
सत्ता पक्ष विरोध ही, है विपक्ष का शोध।

47

गंगा-यमुना रहीं हैं, सभी किनारे तोड़।
जाए तो जाए कहाँ, जनता घर को छोड़।
महाकुम्भ के नगर में, महाप्रलय का नाच–
सत्ता ने भी मदद से लिया आज मुँह मोड़।

48

बलात्कारियों को मिले, प्राणदण्ड या फाँसी।
नेता हो अधिकारी हो, या फिर कोई संन्यासी।
कानूनी-प्रक्रिया, दबाब में, नहीं किसी के आए–
तभी न्यायपालिका बनेगी, जनता की विश्वासी।

49

वह कैसा महन्त है, जो दुष्कर्म कर रहा।
नाबालिग कन्या से भी अपकर्म कर रहा।
ऐसे पाखण्डी को सजा, देशहित में है–
ना समाज की, नहीं न्याय की शर्म कर रहा।

50

निर्दोषों को मारकर, क्या पाया यासीन।
ना जन्नत ही मिलेगी, ना दुनिया ना दीन।
हत्यारों को खुदा भी कभी न करता माफ–
आतंकी तकदीर में दो गज सिर्फ जमीन।

51

कृष्ण जन्म के शुभ दिवस मिली अनोखी जीत।
भटकल भी अब सुनेगा, मृत्यु का संगीत।
पहनेगा दाऊद भी, हथकड़ियाँ अतिशीघ्र–
श्रीकृष्ण इच्छा यही होती हमें प्रतीत।

52

टी.वी. पर अब देखिए महाराणा परताप।
बीते अत्याचार भी, जान सकेंगे आप।
तदनुसार ही ढालिये, जीवन मित्र हितेश–
तभी मिटेगा देश का– अपना भी सन्ताप।

53

पहले वह दीवार गिराओ, जिसके भीतर पापी है।
अन्धे-विश्वासों के बल पर सारी आपाधापी है।
कानूनी नियमों के अन्दर, पूछताछ यह भी तो हो–
कहाँ से आया है अकूत धन, कहाँ करेंसी छापी है।

54

महँगी गाड़ी में घूमे हैं, तथाकथित महाराज।
अन्धे-रुग्ण भिखारी से, है भला इन्हें क्या काज।
सबकुछ होता है आश्रम में, बाहर खबर ना आती–
आश्रम में इनकी सेना है, इनका अपना राज।

55

जनता अन्ध-विश्वास में डूबी सर से पाँव।
ढूँढ रही है बाबाओं के, आश्रम जाकर छाँव।
सज्जन साधु कम हैं, दुर्जन, चोर, लम्पटी ज्यादा–
घर को छोड़ शरण लेते हैं, साधु-संन्त के गाँव।

56

पहचानों उनको भी जो भी, बाबा राम समर्थक हैं।
इनके सत्कर्मों को देखो, जो काफी आकर्षक हैं।
रिश्वतखोरी, चोरबाजारी, दुष्कर्मी या हत्यारे-
बाबाजी के सब चेले हैं, यह उनके संरक्षक हैं।

57

नाबालिग ने किया था, अबला से दुष्कर्म।
घायल कर फेंका उसे करके क्रूर कुकर्म।
बालग होने पर उसे नाबालिग का दण्ड–
मृतक निर्भया पूछती यह क्या न्यायिक धर्म।

58

घड़ा पाप का भर गया हुआ उजागर नाम।
गिरफ्तार हो ही गये आखिर झांसाराम।
जाँच करे निष्पक्षता से अपना कानून–
बना रहे विश्वास यह न्यायपालिका धाम।

59

साम्प्रदायिक हो गया दंगा बीच कवाल।
सजा मिले उसको कड़ी, जिसने किया बवाल।
कौन है जिम्मेदार जो, रहा वहाँ विष घोल–
पहल करी जिस शख्स ने उसका पता निकाल।

60

सारी सम्पत्ति फुंकी मरे जहाँ कुछ लोग।
आग लगी किस बात से कैसे फैला रोग।
जिस बस से जाते रहे, बच्चे कल स्कूल–
वही जला दी आपने कैसा किया कुयोग।

61

हिटलरशाही प्रवृत्ति, है अवनति की राह।
क्रूर हृदय भी झेलता, निजकर्मों की दाह।
अहंकार से ग्रस्त जो, नृपति हुए हितेश–
मरे सभी गुमनाम हो, बिसरी उनकी चाह।

62

शिक्षक दिवस नहीं यह केवल, गुरु-शिष्य का दिन है।
कर्जदार अपने शिक्षक का, जीवन का पलछिन है।
बोध कराता यह शिक्षक को, उसके दायित्वों की–
और कराता शिष्यों को, कर्त्तव्य भान प्रतिदिन है।

63

साफ कर दिया न्यायालय ने, सुन भैय्या बैरागी।
सांसद–मंत्री और विधायक, नहीं बनेंगे दागी।
पर अपनी सरकार नहीं है शायद सहमत इससे–
सम्भवतः अपराधी बनते, घोटाला सहभागी।

64

पुनर्नियुक्ति पाप है, समझे यह सरकार।
बेरोजगारों के प्रति है यह अत्याचार।
बन जाएँगे नवयुवक, आतंकी या उग्र–
अगर नौकरी का उन्हें नहीं मिला अधिकार।

65

दंगा कौन करा रहा, कैसे भड़की आग।
पहरेदारों देश के, अब तो जाओ जाग।
पहचानो जो खेलते, साम्प्रदायिक खेल–
अब हो बन्द अलापना, तुष्टिकरण का राग।

66

कैसे कहो रुकेगी अपने भारत की बर्बादी।
भूखे पेट जहाँ सो जाती, है आधी आबादी।
बलात्कार, तेजाब काण्ड, हत्याएँ रोज होती हैं–
घोटालों ने नैतिकता की, धज्जी यहाँ उड़ा दी।

67

सोने की चिड़िया भारत था, दूध दही बहती थी।
हिन्दू-मुस्लिम सारी जनता मिल जुलकर रहती थी।
बलात्कार-तेजाब काण्ड, अपहरण नहीं होते थे–
यहाँ देवता बसते थे, नारी पूजित रहती थी।

68

डूबा भ्रष्टाचार में, गले-गले तक देश।
बुद्धिजीवी दुखी हैं, इससे आज विशेष।
अवसरवादी पा रहे, पुरस्कार -सम्मान–
चाटुकार हैं शीर्ष पर, देखे खड़ा हितेश।

69

एक-एक कर खुल रहे, बापूश्री के राज।
घर का भेदी बन गया, आज कोढ़ में खाज।
सत्तर चूहे खा गयी, ढोंगी बिल्ली राम–
दुष्कर्मों से पर नहीं, अभी आ रही बाज।

70

जागो– और नींद में सोई जनता आज उठाओ।
कैसे भी हो पुनः देश में रामराज्य को लाओ।
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सब भारतवासी हैं–
मिल-जुलकर रहने का सबके मन में भाव जगाओ।

71

रैंगिंग ने फिर मार दी छात्रा एक हितेश।
छत से कूदी रहा है कारण बड़ा विशेष।
जो रैंगिंग में लिप्त, हैं पाये दण्ड कठोर–
तब ही शायद मिट सके रैंगिंग का यह क्लेश।

72

अफवाहें झूठी होती हैं, इन पर बिलकुल ध्यान न दो।
इन्हें उड़ाने वालों को, समझाओ उन पर कान न दो।
अफवाहों से जल जाते हैं, गली–मुहल्ले–देश–नगर–
इनका खण्डन करो हमेशा, इनको कभी उड़ान न दो।

73

साम्प्रदायिक ताकत करा रही है दंगा, वह बोले।
है विपक्ष की साजिश कहकर, जिम्मेदारी से डोले।
तुष्टिकरण तुम्हारा दंगे करा रहा है नेताजी–
अनुभवहीन हाथ में सत्ता होने से भड़के शोले।

74

नेता जी पर फर्क नहीं है, कितने जिन्दा, मरे हैं कितने।
वह केवल गिनने आएँ हैं, कितने वोटर बचे हैं अपने।
राजनीति के यह सौदागर, कितने पत्थरदिल हैं यारों–
लाशों में भी ढूँढ रहे हैं, सत्ता में रहने के सपने।

75

जातिगत संघर्ष जला देंगे, घर–आँगन।
वैमनस्य की आग, फूँक देगी तन–मन–धन।
हिन्दू–मुस्लिम मिलजुल कर यदि रहें देश में–
पृथक्–पृथक् दोनों छू सकते हैं, नीलांगन।

76

अर्जुन शर-संधान करो तुम, भीष्म पितामह को निपटाओ।
यही भाग्य का लेख सिद्ध है, शर-शैय्या पर इन्हें लिटाओ।
कहा कृष्ण ने विजय चाहते हो तुम, यदि इस धर्मयुद्ध में-
भूलो सारे सम्बन्धों को, भावुकता को दूर हटाओ।

77

दंगों में पीड़ित लोगों से, कोई आज दुराव न हो।
सबको यक्साँ मुआवजा हो, किंचित भेद या भाव न हो।
हिन्दू-मुस्लिम कहकर यानी, अब समाज को मत बाँटो-
नफरत की खाई को पाटो, कोई कहीं खिचाव न हो।

78

छेड़छाड़ की इक घटना ने, जला दिए घर कितने।
छोटी-छोटी बात जगा देती है भारी फितने।
रोक नहीं क्यों पाते हैं हम, उच्छृंखल बच्चो को-
बच्चे भी दोषी हैं लेकिन, हम भी तो दोषी हैं उतने।

79

अपने-अपने सम्प्रदाय को, बचा रहे थे नेता।
कोई नहीं था जो तूफानों में नैया को खेता।
झगड़ा केवल राजनीति ने, करवाया है सारा-
आग भड़कने से पहले, लखनऊ क्यों नहीं चेता।

80

रिक्त हुए पद नहीं भरेंगे, बेरोजगारी झेलेंगे।
अरबों हम बर्बाद करेंगे, लेकिन क्रिकेट खेलेंगे।
कोयले में घोटाला करके सोना खूब लुटाएँगे-
अर्थशास्त्र को फेल करेंगे, नेता पापड़ बेलेंगे।

81

लिखी अनेकों पुस्तक प्रभुवर कई सहस्र लिखी कविताऐं।
दोहे गजल लेख चौपदी बही कहानी की सरिताऐं।
लेकिन कोई गुणी मिला ना जो मेरा मुल्यांकन करता-
राजनीति में भी अपना कोई ना जिसको व्यथा सुनाऐं।

82

साथ पढ़े जो साथ रहे जो साथ खड़े सब बिछड़ गये हैं।
छात्रावास और विद्यालय धीरे धीरे उजड़ गये हैं।
पहले छात्र गुरू शिक्षक से डरते आदर करते थे-
अब शिंक्षक डरते छात्रों से समीकरण सब बिगड़ गये हैं।

83

बदल गयी हैं परिभाषाऐं बदल गयी मान्यता पुरानी।
बच्चों को अब याद नहीं इतिहास पुराना कथा कहानी।
अर्थ व्यर्थ हो गये सभी अब सम्बन्धों में नेह नहीं है-
मोबाइल की भेंट चढ़ गयी मिल जुलने की रस्म सुहानी।

84

मित्रों से यदि काम पड़े तो कभी नहीं बतलाना मित्र।
वरना बदल जायेगा उनके भाव प्रवण चेहरे का चित्र।
काम पड़े पर हो जाते हैं कुछ यानी बेवफा हितेश-
यह सच है मैंने भोगा है बात भले यह लगे विचित्र।

85

मर जाने पर कोई नहीं रोता है पतिवृता रोती है।
बच्चों की भाई बहनों की आँख जरा बस नम होती है।
स्वार्थमयि तेरी दुनिया में सब अपने अपने में गुम है-
ईश्वर तेरी माया मेरा कभी कभी धीरज खोती है।

86

जिसने भी आवाज उठाई, उसको मरवा डाला।
बापू के आश्रम में होता था, हर धन्धा काला।
किसी का एक्सीडेन्ट कराया, कहीं करंट लगाया–
किया विरोध जिस किसी ने भी, उसका हुआ उठाला।

87

राजनैतिक दबाव के आगे, पुलिस हुई बेचारी।
इसको छोड़ो, उसको पकड़ो, थी आज्ञा सरकारी।
दंगाइयों ने फूंक दिए घर, की अनगिन हत्याएँ–
नादिरशाही हुक्म के आगे, हुई है घटना सारी।

88

जब तक अन्दर हूँ तब तक, बिलकुल चुपचाप रहूँगा।
मेरे सभी भक्त बोलेंगे, मैं कुछ नहीं कहूँगा।
मुझे पर जो आरोप लगे हैं, झूठे हैं या सच्चे–
जरा मुझे बाहर आने दो, देख सभी को लूँगा।

89

बसपा-सपा-काँग्रेस की, जरा देखिये कारगुजारी।
दंगों की भी डाल रहे हैं, बीजेपी पर जिम्मेदारी।
जनता की दृष्टि में भी गर नेता जिम्मेदार हैं मोदी–
तब चुनाव में उसे सौंप दें, भारत की सब जिम्मेदारी।

90

दागी मंत्री, दागी नेता, सबको वहन करेंगे।
सिर्फ हमारी भाषा बोलेगा जो, सहन करेंगे।
किन्तु भाजपा के संग जाने वाला, वरन न होगा–
मोदी के खिलाफ जो होगा, माथे नयन धरेंगे।

91

जिनको मैंने धन बाँटा है, मेरी बात कहेंगे।
मेरे गुण्डों से डरकर सब मेरे साथ रहेंगे।
भक्त नहीं मेरे गुलाम हैं, कई करोड़ यहाँ पर–
मैं बापू- बाहर आने पर, फिर सब मुझे सहेंगे।

92

तानाशाही से पीछा, छुड़वा सकता है मोदी।
आतंकी हमलों से हमें, बचा सकता है मोदी।
निगल रही है देश समूचा, दलदल घोटालों की–
नाव देश की पार लगा, सकता है केवल मोदी।

93

हिंसक को तो खुली छूट है, पकड़े गये अहिंसक सब।
हर दंगाई मार रहा था, निर्दोषों को बेमतलब।
जिसकी शय पर खूनी होली, खेली गई निहत्थों से–
वह ड्रैकूला जाग उठा है, सावधान हो जाओ सब।

94

हिन्दू-मुस्लिम नहीं चाहते, आपस में झगड़ा इतना।
यह इतिहास बता सकता है, था भाईचारा कितना।
अँग्रेजों ने जो बोई थी, फसल फूट की भारत में–
नेता उसको सींच रहे हैं, नया जगाते हैं फितना।

95

जितना अत्याचार कर सको, कर लो तुम्हें है छूट अभी तो।
किन्तु सुनिश्चित समझो घड़ा पाप भरेगा, मित्र कभी तो।
रावण की भाँति अत्याचारी का, वंश नष्ट होगा जब–
स्थापित होगा भारत में, लोकतंत्र शिव-सत्य तभी तो।

96

झूठ अधिक जब सहन न होगा, धरती थर-थर काँपेगी।
भ्रष्टाचारी–घोटालाबाजों को नियति नाँपेगी।
दुष्कर्मी, बलात्कारियों की अब होगी, खैर नहीं–
आकाशी निर्णय के आगे, सारी दुनिया हाँपेगी।

97

जनता के भी साथ देखिये, नेता खेल रहे हैं चाल।
ईदगाह, मदरसे जाकर, पूछा हर पीड़ित का हाल।
जिन पर हमला हुआ, ट्रैक्टर गंगनहर में गिरा दिये–
मारे गये निहत्थे जो, क्यों उनका आया नहीं ख्याल।

98

झूठ बोल बुरकेबाजी पर, नेताजी हो गये नंगे।
ऐसे नेताओं की जाने, कब होगी हर-हर गंगे।
जाने देश सहेगा कब तक, झूठ, घोटाले, भ्रष्टाचार–
गिर सकते हैं किसी भी हद तक, यह वोटों के भिखमंगे।

99

दागी मंत्री, दागी नेता, अब संसद में आएँगे।
जेलों में जो बंद रहे, उनके चेहरे खिल जाएँगे।
भ्रष्टाचार घोटालों का भी, कार्यक्षेत्र बढ़ जाएँगा–
तभी भाग्य के भारत में, राहु-केतु मुस्काएँगे।

100

मिड डे मील दे रहे हैं हम, इसका खूब प्रचार करो।
बच्चे खाकर मरते कितने, चिन्ता मत ना यार करो।
जहर बना खाना विपक्ष की, साजिश कहकर सो जाओ–
स्वयं करो घोटाला पर, इस-उसको जिम्मेदार करो।

101

बीजेपी हारी तो भीष्म पितामह होंगे जिम्मेदार।
घर का भेदी ही लंका को, ढाता आया अब तक यार।
आप अगर इतिहास उठाकर, देखेंगे तो पता चले–
भारत कभी गुलाम न होता, अगर नहीं होते गद्दार।

102

आग अभी तक बुझी नहीं है, मुजफरनगर, शामली अन्दर।
हर हमलावर समझ रहा है, आज स्वयं को बड़ा सिकन्दर।
किस कारण से अभी प्रशासन, मौन, चेतना शून्य खड़ा है–
छुटपुट घटनाएँ जारी हैं, नाच रही है मौत कलन्दर।

103

अनदेखी सारी लीलाएँ, हुईं उजागर बापूराम की।
आश्रम में ना धर्म–मोक्ष था, लीलाएँ थीं अर्थ–काम की।
खण्डित हुए दुमहले आश्रम, धूल–धूसरित हुई प्रतिष्ठा–
देख समझकर भी कुछ व्यक्ति, माला जपते अभी नाम की।

104

छेड़छाड़ भी नहीं रूकी है, नहीं थमी हैं हत्याएँ।
चारों तरफ सिर्फ क्रन्दन है, सिसक रहीं हैं विधवाएँ।
क्यों हम उच्छृखंल बच्चों को, समझाने में कासिर हैं–
अच्छा है इस मसले को, आपस में मिलकर सुलझाएँ।

105

केवल शायद अल्पसंख्यक, हीं हैं भारत के वाशिन्दे।
इसीलिए तो उनके हक में, बोल रहे हैं मंत्री शिन्दे।
साफ–साफ क्यों नहीं कह रहे, अल्पसंख्यक के हाथ बिके हम–
अल्पसंख्यक हित सत्ता सारी, अल्पसंख्यक से नेता जिन्दे।

106

एक-एक कर दागी नेता, अब जेलों में जाएँगे।
अपराधी जो सिद्ध हो गए, संसद में ना आएँगे।
न्यायालय की और देश की, संसद की गरिमा ग्रसने-
मोस्ट वांटेड अब जेलों से ना चुनाव लड़ पाएँगे।

107

आज उच्चतम न्यायालय से, है प्रार्थना विशेष।
अपराधी नेताओं के, अब वाद रहे ना शेष।
न्यायालय हों गठित, नियुक्ति न्यायाधीशों की हो-
न्यायपालिका मुख को, सारा ताक रहा है देश।

108

जो हैं आशाराम समर्थक, उनकी भी तो नापतोल हो।
महिला हो या पुरुष जाँच में,उनकी कोई नहीं झोल हो।
जो धमकी दे रहे पुलिस,अफसर, पीड़ित व्यक्ति को-
न्याय प्रक्रिया के अन्दर,अब उनकी भी श्रीराम बोल हो।

109

धीरे-धीरे खुल रहे, साफ हो रहा काँच।
बापुराम की पत्नी-बेटी, तक पहुँची है आँच।
अगर सत्य है, पापकर्म में था इनका सहयोग-
तब इन पर कार्यवाही से, उजला होगा साँच।

110

सावधान आतंकी साजिश, सफल न होने देना।
जहाँ दिखे संदिग्ध, पुलिस को तुरत सूचना देना।
आतंकी कोशिश में हैं, घुसपैठ करे भारत में-
असवाधान त्यौहारों पर मत स्वयं को होने देना।

111

आन्ध्र बँटे ना इसको लेकर, वह अनशन पर बैठे हैं।
कुछ विरोध में, और समर्थक भी लेटे-अधलेटे हैं।
सरकारी सम्पदा फूँककर, यह विरोध करने वाले–
अपना ही कुछ फूँक रहे, यह महामूर्ख हैं ढेटे हैं।

112

नमन शहीदों को कर लें, हम दमन करें गद्दारों का।
दागी नेताओं को त्यागे, चयन करें अविकारों का।
निडर सहासी नेताओं के, हाथों देश सौंपना है–
संसद में स्थान नहीं अब, पापी ठेकेदारों का।

113

तेलंगाना राज बना जब, जनता की थी माँग घनी।
अब किसलिए विरोध-समर्थन, में जारी है रार घनी।
व्यर्थ प्रदर्शन-धरना-अनशन-सरकारी सम्पदा फूँकना–
बँटा नहीं घर-द्वार हुई क्यों नेताजी को पीर घनी।

114

वो ही धरती वो ही गगन है, बँटा नहीं घर-द्वार बना।
केवल थोड़े से हिस्से का, बदल गया है नाम इतना।
छोटे-छोटे प्रान्तों का, विकास होता है खूब घना–
हरियाणा, पंजाब उद्धरण, सम्मुख हैं ओ मूर्खमना।

115

हुआ शहीदों का अभिनंदन, उनके परिजन का भी वंदन।
इष्टमित्र को बुला मंच पर, पुष्प कराएँ उनको अर्पन।
किंचित भी जो दीखे अपने, संयोजक ने उन्हें बुलाया–
लेकिन अपने पिता-मित्र को, भूल गए विमला के नंदन।

116

नये-नये सपनों के संग में, मने दशहरा।
आने वाला कल हो सुन्दर, और सुनहरा।
मन का रावण जले, राम की भक्ति जागे-
लगे दुर्व्यसन और वासनाओं पर पहरा।

117

अब न्यायालय ने लिया है देखों संज्ञान।
दंगा जिम्मेदार की, होनी है पहचान।
अगर सिरोही सत्य है, दंगे के सन्दर्भ-
तब हथकड़ी लगाइये, पंडित हो या खान।

118

इक-दुजे को गले लगाकर, हम सारे त्यौहार मनाएँ।
सारी खुशियाँ मिलकर बाँटें, सबको बढ़कर गले लगाएँ।
मन के अन्दर प्रेमभाव हो, द्वेष-भावना कहीं नहीं हो-
अफवाहों पर ध्यान नहीं दें, आपस में विश्वास जगाएँ।

119

पत्नी, पुत्री, पुत्र सभी तो, बापूराम के साथ मिले हैं।
आरोपों की गहन नदी में, सारे डूबे गले-गले हैं।
अगर सभी आरोप सत्य हैं, तो फिर इनको माफी क्यों हों-
आश्रम सभी बन्द हों जिनमें, अब तक पापाचार पलें हैं।

120

पाइलीन का कहर प्रलय की, दस्तक थी धरती के ऊपर।
घोटालों को, दुष्कर्मों को, देख रहा है नभ से ईश्वर।
अगर नहीं सुधरेंगे हम तो, महाप्रलय भी आ सकती है-
कोयला घोटाले का धन भी, रह जाएगा कोयला बनकर।

121

ईद, दशहरा और दीवाली, परिजन-पुरजन सबको शुभ हो।
सब त्यौहार मनाएँ मिलकर, चिन्तन में कुछ नहीं अशुभ हो।
एक देश के वासी हैं हम, बैर भाव क्यों मन में पाले-
चन्द्र-सूर्य, त्यौहार हमारे, कहते तुमको-मुझको शुभ हो।

122

जगह-जगह आतंकवाद है, देश-देश तूफान कहर है।
रात भयानक है भूतल पर, दिवस सशंकित साया भर है।
अमरीका, जापान, चीन, भारत, पाक विश्व में सारे-
सभी जगह पर उथल-पुथल है, नहीं स्थिति स्थावर है।

123

जनता सबकुछ समझ रही है, सच्चा कौन है झूंठा कौन।
राजनीति के इस दंगल में, अब गाढ़ेगा खूंटा कौन।
सम समान आचार संहिता, करेगा पालन निष्ठा से-
तुष्टिकरण का पक्ष न लेगा, होगा वही अनूठा कौन।

124

आटा मिल में पहुँच गया है, सस्ता गेहूँ गरीबों का।
टी.वी. में दिखलाया इसमें, हाथ है कई करीबों का।
सरकारी दावे की धज्जी, मिली भगत से उड़ती है-
किसका हिस्सा कौन खा रहा, देखो खेल नसीबों का।

125

रोक लगी संकल्प सभा पर, जय हो सत्ताधारी की।
करे शराबी पुलिस पर हमला, जय हो सत्ताधारी की।
अल्पसंख्यक को छूट सभी है, बहुसंख्यक प्रतिबन्धित हैं-
जागे नहीं तो फिर झेलेंगे, जय हो सत्ताधारी की।

126

जाने कितने राज खुलेंगे कोयले के घोटाले में।
दूध-दूध पानी का पानी कब होगा घोटाले में।
लेकिन यह गम्भीर बात है, जो बोली आरोपी ने-
मैं दोषी हूँ तो पी.एम. भी, दोषी हैं घोटाले में।

127

पिता, पुत्र, पत्नी, पुत्री भी, कंचन पाकर भटक गये।
जब तक चली पक्ष में वायु, धन व धरती गटक गये।
किन्तु कभी तो घट भरता है, पाप करो या पुण्य करो-
हवा चली विपरीत उसी क्षण, ग्रह सब उलटे लटक गये।

128

बाल श्रमिक से काम कराना, कानूनी अपराध है पर।
बच्चो से पंखा झलवाते, दीखे टीवी पर अफसर।
तुरन्त निलम्बित हो वह, जो मासूमों से पंखा झलवाते-
टीवी ने जो सच उगला है, कार्यवाही हो अब उस पर।

129

नहीं मानता पाक अगर तो, हम भी कुछ दिखलाएँ दम।
जैसे वह करता आया है, वैसा ही दोहराएँ हम।
मैत्री-मैत्री हम रटते हैं, वह शत्रुता निभाता है-
शायद भूल रहा है वह कि हम पर भी हैं राकेट बम।

130

बोले उमर जवाबी हमला, केन्द्र पाक पर करे तूरत।
कब तक बैठे रहेंगे बनकर, तीन बन्दरों की मूरत।
शठे शाठयम् की नीति पर, चलना तब आवश्यक है-
नहीं दिखती हो जब कोई, सुलह सफाई की सूरत।

131

आँख मूँदकर सभी बात का, नहीं समर्थन करेगी जनता।
देख रही है सोच समझ कर ही, अब निर्णय करेगी जनता।
औरों के अवगुण बतलाकर, जन-मन नहीं प्रभावित होंगे–
जो नेतागण बोल रहे, उसका मूल्यांकन करेगी जनता।

132

साफ और सुथरी रिपोर्ट है, नगर मुजफ्फर दंगों की।
बात सियासी है दबाव की, जिम्मेदारी दंगों की।
क्या गौरी का कोई वंशज, यू.पी. की सत्ता में है–
जिसने सभी अफसरों पर, थोपी लाचारी दंगों की।

133

नेताओं के सम्भाषण पर, कसनी जरा लगाम चाहिए।
अपनी ही छवि अपने हाथों, क्यों करनी नीलाम चाहिए।
थके-थके से सारे नेता, बोल रहे हैं उलटा-सीधा–
राहुल को भी इस हालत में, थोड़ा सा विश्राम चाहिए।

134

राहुल गाँधी बोल रहे जो, उसकी जाँच जरूरी है।
नहीं फालतू बोले कोई, यह भी सत्य सबूरी है।
बात नहीं तो बिना बात ही, मोटी-मोटी बातें क्यों?–
मुद्दा नहीं तो भाषण देना, क्या कोई मजबूरी है।

135

सब अपराध कबूल कर लिये, पापी, नीच, नराधम ने।
सत्य छिपा रक्खा था अब तक, अंधी श्रद्धा के तम ने।
कर्म नहीं है यह गृहस्थ का, बसे आश्रम में जाकर–
आँख खुल गई, अब ना दोहराएँ, जो गलती की हमने।

136

नगर मुजफ्फर नहीं थमा है, दंगे का तूफान।
नाम पूछकर अब भी गोली, मार रहे शैतान।
शर्म चाहिए आनी, हिन्दू-मुस्लिम दोनों को ही-
क्रिया-प्रतिक्रिया में सारा जल ना जाए ईमान।

137

क्या जिद है जो एक शब्द को दोहराते हैं बारी-बारी।
अपनी उपलब्धियाँ गिनाओ, दो आश्वासन भारी-भारी।
अब कटाक्ष या व्यंग्य की भाषा त्यागें सारे ही नेतागण-
रामायण भी यह कहती है- कहहिं सत्य प्रिय वचन विचारी।

138

मोदी की रैली के अन्दर, हुआ धमाका पटना में।
कुछ ना कुछ होगा जरूर, यह आशंका थी पटना में।
अन्य कई रैलियाँ हुई पर, ऐसा कुछ भी हुआ नहीं-
जिम्मेदारी है सत्ता की, हुआ धमाका पटना में।

139

शौचालय में हुई गनीमत, मानव बम फट गया अचानक।
हो सकता था वरना उसका, अनचाहा परिणाम भयानक।
धन्य-धन्य जनता बिहार की, किंचित भी जो हुई न विचलित-
सिद्ध कर दिये, सात धमाकों में भी, निज निष्ठा के मानक।

140

व्यक्तिगत आरोपण त्यागो, बात करो उपलब्धि की।
देश की कितनी कर पाओगे, बात करो समृद्धि की।
वाकयुद्ध को बन्द करो अब, मत भरमाओ जनता को-
नीति करो स्पष्ट श्रीमन्, भारत की श्रीवृद्धि की।

141

वाकयुद्ध ना बन्द हुआ तो, रक्त युद्ध हो सकता है।
स्वच्छ सात्विक राजनीति में, सब अशुद्ध हो सकता है।
शर्म करो पागल नेताओ, व्यक्तिगत आक्षेप मत करो–
राजनीति का तब भारत की, रूप शुद्ध हो सकता है।

142

किसने किया धमाका जनता देख रही है।
छेड़छाड़ की किसने, जनता देख रही है।
अब अनदेखा नहीं करेगी उसको, जो है–
आतंकी, दुष्कर्मी जनता देख रही है।

143

बन्द करो रैली सम्भाषण, ओ नेताओ।
शत्रु घात लगाए बैठा है, नेताओ।
अखबारों के माध्यम से केवल प्रचार हो–
रैली, भगदड़, बहुत मरेंगे ओ नेताओ।

144

इस चुनाव में वोट न देना, भेदभाव के हामी को।
संसद में जाने मत देना, नीच, नराधम, कामी को।
उनका भी मुँह काला करना, जो आपस में लड़वाते–
नहीं जीतने देना बिलकुल, दस नंबर ईनामी को।

145

नहीं रूके दुष्कर्म अभी तक, छेड़छाड़ भी जारी है।
शायद कुछ लोगों को इसकी, मनोरोग बीमारी है।
हिन्दू–मुस्लिम दोनों सुन लें, छेड़छाड़ से बाज रहे–
वही मुजफ्फरनगर त्रासदी, हो सकती फिर भारी है।

146

आत्मसुरक्षा के हित अपने संग, लेकर हथियार चलो तुम।
जो हमला करता है उस पर निज रक्षा हित वार करो तुम।
पहल मत करो किन्तु न चूको, आत्मसुरक्षा नैतिक हक है–
सावधान रह कर शत्रु के हमलों का, प्रतिकार करो तुम।

147

भारत हुआ प्रसन्न गया है मंगल ग्रह पर यान हमारा।
लेकिन इस दीवाली पर भी, निर्धन के घर था अँधियारा।
सड़कें टूटी, रेल पुरानी, पुल जर्जर हैं, बेरोजगारी–
अपनी समस्याओं को भूलें, इस पर अरबों का धन वारा।

148

फिर चुनाव में कूद पड़े हैं, सभी पुराने ठेकेदार।
कसमें खा, देते आश्वासन, हम मिटाएँगे भ्रष्टाचार।
परख चुके हैं जिसे, मूर्खता होगी उसे आजमाना–
स्वच्छ छवि वाले व्यक्ति को, अच्छा है सौंपे सरकार।

149

आतंकी हमले, आन्दोलन, नक्सलिया हमलों का डर।
कोई भी तो नहीं सुरक्षित, घर हों चाहें हों बाहर।
सम्प्रदाय से सम्प्रदाय के झगड़े, आगजनी–दुष्कर्म–
अगला बम विस्फोट कहाँ पर होगा, इसकी नहीं खबर।

150

तबादला उद्योग बहुत आवश्यक इस पर रोक लगे।
निश्चित अवधि पूर्व अकारण कार्यवाही पर टोक लगे।
एक साल में छह तबादले, क्या ईनाम है निष्ठा का–
इससे कार्य कुशलता घटती, अफसर रहते ठगे–ठगे।

151

मनमाना आदेश जबानी, कोई अफसर नहीं सुने।
लिखित मिले आदेश तभी, अनुपालन निश्चित करे गुने।
मौखिक आदेशों से अफसर, फँस जाते बचते नेता–
धन्य पालिका न्याय की जिसने नियम सही स्पष्ट चुने।

152

स्वतंत्रता के बाद देश का, उदय कराया जिसने।
भारत में अनगिन राजों का, विलय कराया जिसने।
उस वल्लभभाई पटेल को, श्रद्धा सुमन समर्पित–
विकट हैदराबाद राज को, विजय कराया जिसने।

153

तुम मुझे कमतर समझते हो, चलो समझो।
स्वयं को बेहतर समझते हो, चलो समझो।
किन्तु जनता की क़भी जब राय जानोगे–
भूल होगी ज्ञात तब तुमको, चलो समझो।

154

भ्रष्टाचार मिटे भारत से, या भ्रष्टाचारी मिट जायें।
घोटाला करने वालों के, थोड़े-थोड़े क़द घट जायें।
भ्रष्टाचारी घोटालाबाजों का, मिट अस्तित्व जायेगा–
अगर मंत्रियों नेताओं के, सारे अंगरक्षक हट जायें।

155

प्रतिबन्धित हों पूर्णतः रैली या हड़ताल।
हासिल कुछ होता नहीं, जन-जीवन बेहाल।
इन दोनों से देश का, रूकता सदा विकास–
संविधान में ढूँढिये, इनका हल तत्काल।

156

नगर मुजफ्फर चल रहा, है गोरिल्ला युद्ध।
कत्ल अहिंसा हो रही, हिंसक हाथों शुद्ध।
कातिल को शय दे रहे, सत्ता के श्रीमान–
दंगाई आजाद हैं, सज्जन सभी निरुद्ध।

157

गन्ना सूखे खेत में, है किसान बेहाल।
दुविधा में सत्ता फँसी, हल ना सकी निकाल।
गन्ने को महँगा करें, मिले चलेंगी नाय–
चीनी को महँगा करें, जनता करे बवाल।

158

सिर्फ मोहब्बत बाँटिए, नफरत बाँटें नाहिं।
मंत्री जी फरमा गए, जनता से मुस्काहिं।
ऊलट-पुलट लेकिन हुई, शब्दों की सौगात–
प्यार घटा नफरत बढ़ी, नगर मुजफ्फर माहिं।

159

किसकी पत्नी साथ है किसके राजनीति में पता नहीं।
समझौता करना पड़ता है, इसमें होती खता नहीं।
बरस-बरस तक घर की रोटी, मिले नहीं है खाने को–
घर-बाहर क्या खिचड़ी पकती, इक-दुजे को पता नहीं।

160

कभी सचिन को और, अब मोदी को भगवान।
अरे अभागो बुद्धि सब, चाट गये क्या श्वान।
नश्वर एक मनुष्य को, देकर प्रभु का नाम–
अपने ही तुम ईष्ट का, करते हो अपमान।

161

वोट उसे देना जो हिन्दू-मुस्लिम में ना भेद करे।
उसे सौंपना सत्ता, जो ना देश नाव में छेद करे।
सम्प्रदाय से सम्प्रदाय, लड़वाने वालों से बचना–
भ्रष्टाचारी मत चुनना, जो काला माल सफेद करे।

162

जागो-जागो देशवासियों वरना सब लुट जाएगा।
बाहर का कोई हमलावर, कत्लेआम कराएगा
सम्प्रदाय के सम्प्रदाय से झगड़े भी बढ़ जाएगे–
कोई भी जयचन्द बुलाकर, गौरी को ले आएगा।

163

मिल मालिक आजाद रहे, अपनी मिल स्वयं चलाने को।
हो किसान आजाद स्वयं, गन्ने का दाम भुनाने को।
गन्ना मंत्री, चीनी मंत्री, यह विभाग सब बन्द करो–
हो स्वतंत्र दोनों ही, इक-दुजे की बात निभाने को।

164

सस्ता हस्तक्षेप बन्द हो, तभी मिलें चल सकती हैं।
मिल मालिक किसानों दोनों ही, मिलें तो मिल चल सकती हैं।
माँग और आपूर्ति के सिद्धांतों पर समझौता हो–
दोनों जिद पर अड़े रहे तो, मिलें नहीं चल सकती हैं।

165

मार-पीट-हत्या करी, बलात्कार के साथ।
नाबालिग कह स्वयं को, बचा रहा है माथ।
अपराधी को सजा हो, जुर्म-कर्म अनुकूल–
तभी जुर्म की नाक में, डाल सकेंगे नाथ।

166

है किसान की धौंस, कि गन्ना अपनी कीमत पर बेचूँगा।
मिल मालिक है दुखी, कि कब तक व्यवसायिक हानि झेलूँगा।
जनता त्रस्त आन्दोलन से, जगह-जगह पर लगे जाम से-
फँसा जाम में रोगी रोता, कैसे अस्पताल पहुँचूँगा।

167

दंगा पास विरोधी बिल का मतलब है दंगा करने दो।
अल्पसंख्यक को कभी न पकड़ो, बहुसंख्यक मरता मरने दो।
बहुसंख्यक मत पीड़ित मानो, अल्पसंख्यक मत दोषी जानो-
पक्षपात पर कुर्सी अपनी जब-तक टिकी रहे टिकने दो।

168

मुस्लिम तुष्टिकरण की हामी, काँग्रेस की हार हुई।
भेदभाव की पक्षपात की, नीति बँटाधार हुई।
यू.पी. में भी यही हश्र हो, भेदभाव के हामी का-
हिन्दू-मुस्लिम साथ-साथ हैं, सोच यही साकार हुई।

169

सत्ता सौंपी है तुम्हें, करके कुछ विश्वास।
हो मदान्ध मत तोड़ना, तुम जनता की आस।
घोटालों की पक्षपात की, राजनीति से दूर-
सदा सोचना देश-हित, रहना नहीं उदास।

170

संसद में जितने भी हाथी, गैंडे हैं सब बाहर हों।
अपने सांसद स्वस्थ सबल हों, चीते जैसे नाहर हों।
सत्ता उनके हाथों में हों, जिन्हें देश की हो चिन्ता-
तुष्टिकरण की पक्षपात की, राजनीति की हर-हर हों।

171

समलैंगिक सम्बन्ध हैं, सामाजिक अभिशाप।
न्यायालय सर्वोच्च ने, इसे बताया पाप।
इसके सारे पक्षधर, हैं विकृत मस्तिष्क–
नियम प्राकृतिक के विरुद्ध, जो कर रहे प्रलाप।

172

समलैंगिक के पक्ष में, अगर बना कानून।
काँग्रेस की साख तब, पहुँचेगी रंगून।
धर्म, संस्कृति, सभ्यता पर होगा आघात–
समझो जैसे जख्म पर, डाला जाए नून।

173

हिन्दू-मुस्लिम दोनों ही, अब मोदी को पहचान गए।
किसके हाथों देश सुरक्षित, रहेगा दोनों जान गए।
तुष्टिकरण का कोई प्रलोभन, शायद सफल नहीं होगा–
पूर्ण सुरक्षा मोदी हमको देंगे, दोनों मान गए।

174

राजनीति में कोई शत्रु–मित्र नहीं स्थायी है।
दिल-दिमाग दोनों की दुश्मन, यह तो प्रीत पराई है।
समय पड़े पर राजनीति में, गधा बाप बन जाता है–
सगे बाप का मान घटाना, सिखलाती हरजाई है।

175

ज्यादा मत इतराइये, श्री केजरीवाल।
बातें नहीं बनाइये, श्री केजरीवाल।
जनता ने मतदान से, दिया तुम्हें अधिकार–
अब सरकार बनाइये, श्री केजरीवाल।

176

जनादेश तुमको दिया, जो जनता ने सख्त।
शीघ्र अमल उस पर करो, व्यर्थ करो मत वक्त।
जनता का विश्वास यदि, टूट गया तो मित्र–
तख्ता ही रह जाएगा, छिन जाएगा तख्त।

177

काँग्रेस की हार का, कोई न जिम्मेदार।
तुष्टिकरण की नीति ने, किया है बँटाधार।
उलटी गिनती तभी से, शुरू हुई थी मित्र–
बहुसंख्यक से जब हुआ, सौतेला व्यवहार।

178

जाटों को भी मिल रहा, आरक्षण का लाभ।
शासन में अब पहुँच की, हैं बाधाएँ साफ।
ब्राह्मण बनिये ही बचे, आरक्षण से मित्र–
शेष सभी को मिलेगा, अब पीने को डाभ।

179

आप तुरत सरकार बनाएँ, कहते गाँधी जी के मंकी।
दिल्ली कहती देखो भैया, भर गई इन्तजार की टंकी।
जनता से जो किए हैं वादे, पूर्ण करे वह आम आदमी–
बहुत हो चुका नेताजी अब, बंद करो नाटक नौटंकी।

180

दिन–प्रतिदिन बढ़ रहा है, अब कोहरे का कोप।
निकल आए हैं सभी के, कोट, पैन्ट, कन्टोप।
सड़क मार्ग बाधित हुआ, रेलें हो गईं रद्द–
सूर्य छिपा कुछ इस तरह, धूप हो गई लोप।

181

भेदभाव की नीति रही तो, हर बहुसंख्यक दुखी रहेगा।
तुष्टिकरण की राजनीति में, अल्पसंख्यक ही सुखी रहेगा।
औरंगजेबी शासन होगा, मुगलकाल फिर से लौटेगा–
कुछ भी कहीं विकास न होगा, देशद्रोह चौमुखी रहेगा।

182

सैफई में हो रहा, उत्सव रंगारंग।
नृत्य कर रहे सपाई, बजा ढोल–मृदंग।
वहाँ शिविर में मर गए, ठण्ड से शिशु अनेक–
आपाधापी प्रान्त में, दशा हुई बेढंग।

183

बेरोजगारी देश में, सुरसा–मुख श्रीमान।
हर कार्यालय रिक्त हैं, इतने ही स्थान।
क्या बाधाऐं हो रही, नहीं नियुक्ति मित्र–
घोटाले का नहीं क्या, इसमें प्राविधान।

184

गये वर्ष की रात्रि उत्सव हुए अनेक।
किन्तु कहीं पर ठण्ड से, वृद्ध मर गया एक।
स्वारथ में हो गए हैं, मन संवेदन शून्य–
दूजे के सुख से विमुख, स्वसुख भाये नेक।

185

कई दिनों से दिखा ही नहीं नील आकाश।
कोहरे के कारण हुआ, दिन में लुप्त प्रकाश।
सूरज बन्दी हो गया, धूप हो गई लुप्त–
प्रकृति का भी खो गया, सारा हास–हुलास।

186

चाटुकार अवसरवादी को, पुरस्कार मिलते हैं।
सत्यमेव जयते जो कहता, तिरस्कार मिलते हैं।
जो ईमानदार हैं वो ही, सदा उपेक्षित रहते–
राजनीति में भ्रष्टों को ही, नमस्कार मिलते हैं।

187

नेताजी के पिट्ठू बोले, नहीं ठंड से कोई मरता।
एक ओर नेता बोले थे, नहीं भूख से कोई मरता।
भूखे पेट बिना ए.सी. के साहब सोयँ, शिविर में आकर–
तभी पता यह चल सकता है, ऐसे मरता या ना मरता।

188

आम आदमी की बनी, दिल्ली में सरकार।
कसम खाई रिश्वत नहीं, लेंगे-देंगे यार।
सुविधा क्या रह पाएगी, सुविधा-शुल्क विहीन –
काम सभी रूक जाएँगे, बोला भ्रष्टाचार।

189

शपथ ग्रहण के दिन हुआ, दर्पण का मुख साफ।
आप समर्थक के हुए, सात खून क्या माफ।
बिना टिकट मैट्रो चढ़ी, भीड़ आपके साथ–
भ्रष्टाचार बिहँस उठा, ओढ़े दूर लिहाफ।

190

जनहित और स्वदेश हित, कार्य करे जो मित्र।
भ्रष्टाचारी हो नहीं, स्वार्थरहित सचरित्र।
ऐसे व्यक्ति को चलो, सौंपे देश कमान–
जिससे सारे देश में, चमके भारत चित्र।

191

सिंहासन यदि हो गया, वंशवाद के नाम।
लोकतंत्र हो जाएगा, भारत में बदनाम।
देशभक्त को श्रेष्ठ को, सौंपों देश कमान–
जो घोटाले ना करे, कर्म करे निष्काम।

192

भूषण श्री प्रशांत का, अल्पसंख्यकी प्रेम।
सैन्य हटे काश्मीर से, कहा ना आई शेम।
वांछनीय काश्मीर में, सेना रहे सतर्क–
और विफल करती रहे, आतंकी हर गेम।

193

केवल मुस्लिम पर लगे, हुए जो वापस केस।
बदनामी फिर सपा की, होगी देस-विदेस।
नेता ऐसा चाहिए, जो रक्खे सम-भाव–
किसी एक समुदाय पर, करे ना कृपा विशेस।

194

रैली पर हड़ताल पर, हो प्रतिबंध हितेश।
शक्ति प्रदर्शन ही फकत, होता है उद्देश।
हानि होती राष्ट्र की, जनता भी बेहाल–
हासिल कुछ होता नहीं, इनसे कभी विशेष।

195

रूके नहीं हैं देश में, सामूहिक व्यभिचार।
दुष्कर्मों के सामने, सत्ता क्यों लाचार।
पीड़ित-आत्महत्या विवश, आरोपी आजाद–
कुछै जमानत मिल गई, कुछ हैं अभी फरार।

196

मचा रहा है कोहरा, धरती पर कोहराम।
सुगम गति से चल रहा, लिया है जीवन थाम।
यात्राएँ हैं रद्द सब, जन-जीवन बेहाल-
क्रुद्ध प्रकृति ने किया, हर प्रयास नाकाम।

197

जादू की कोई छड़ी, नहीं 'आप' के पास।
पर परिवर्तन आएगा, ऐसा है विश्वास।
किन्तु एक दिन में नहीं, बनी कुतुबमीनार-
समय सुअवसर चाहिए, करने को कुछ खास।

198

बीजेपी जो कर रही, केजरीवाल पर व्यंग्य।
अपना ही वह कर रही, मित्र काफिया तंग।
'आप' विरोधी बात पर, जनता है नाराज-
मोदी को ना डूबा दे, बीजेपी हुड़दंग।

199

हर्षवर्द्धन जो कर रहे, नित्य 'आप' पर चोट।
भूल गए हैं जानती, जनता सबके खोट।
मोदी जी की राह में, बिछा रहे हैं शूल-
नैतिकता का जो रहे, गला स्वयं ही घोट।

200

बेटी गर स्वच्छन्द न हो, तो बेटे से बेहतर है।
पहने ढंग के वस्त्र अगर तो जरा नहीं कम तर है।
रात बिरात रहे ना बाहर, बॉय फ्रेंड के संग में-
मर्यादा में रहे तो सुखकर, वर्ना तो दुखकर है।

201

कोहरे का कोहराम और, तांडव है सभी दिशा में।
श्वेत जिन्न का कहर, आज बरपा है सभी दिशा में।
सड़क मार्ग या वायुमार्ग या रेलमार्ग बाधित हैं–
रेंग रहा जीवन किंकर्त्तव्यविमूढ़ दिशा में।

202

माया और मुलायम परखे, जयललिता, ममता पहचाना।
काँग्रेस के शासन से भी, भारत रहा नहीं अनजाना।
अब मोदी को सत्ता सौंपे, देखें शायद परिवर्तन हो–
गाँधी का स्वराज शायद हो, गाँधी नगर से आना।

203

देश कोई सम्पदा नहीं है, नहीं किसी की सम्पत्ति है।
लोकतंत्र में हर व्यक्ति की, सत्ता में अधिकृत पत्ती है।
जिन्हें राजसुख प्राप्त हो चुका, घोटाले कर लिए अनेकों–
औरों को भी मिले सुअवसर, इसमें कैसी आपत्ति है।

204

सभी देश की सम्पदा, हुई मुफ्त नीलाम।
कुछ महन्तगण खा गए, कुछ नेता सरनाम।
बाबाओं के आश्रम, हैं धन के भण्डार–
सब कुकर्म होते वहाँ, ले ईश्वर का नाम।

205

हुई बगावत 'आप' में, बढ़ा घोर सन्ताप।
विघटन के पथ पर चली, केजरीवाल की 'आप'।
भारी भरकम हो नहीं, मुखिया अगर 'हितेश'–
उस घर के मानव सभी, करते उलटा जाप।

206

परिवर्तन की लहर है, देश हिताहित आज।
बहुत दिनों से चल रहा, था दुःशासन काज।
जनता का दायित्व है, उसे करें मतदान–
जो स्थापित कर सके, श्रीराम सा राज।

207

मौत सुनन्दा की हुई, अस्वाभाविक जान।
बिना सिद्ध मृत्यु हुए, पहुँचाया श्मशान।
मृत्यु की संदिग्धता, की भी होवे जाँच–
जख्म चोट के देह पर, कैसे पड़े निशान।

208

न्यूजीलैण्ड में गिर पड़े, औंधे मुँह कप्तान।
हार गई दो मैच क्यों, भारत टीम महान।
गीदड़ कैसे बन गए, क्रिकेट के सब शेर–
फिक्सिंग का संदेह भी, हो सकता बलवान।

209

काँग्रेस की 'आप' की, थमी नहीं है जंग।
लोकतंत्र का देश में, चित्र हुआ बदरंग।
प्रारंभिक शुरूआत तो, अच्छी की थी 'आप'–
मंत्री ने कानून के, काम किया बेढंग।

210

आप' अगर सरकार हैं, करें भद्र व्यवहार।
संविधान अनुरूप ही, काम करें सुविचार।
पुलिस नहीं हैं 'आप' जो घुसे घरों में जाए–
छापेमारी का नहीं, तुम्हें स्वयं अधिकार।

211

हर गणतंत्र दिवस पर, जलवा देखा है परिवार तंत्र का।
सपा सुप्रीमो, करुणानिधि का, नेहरू-गाँधी वंश मंत्र का।
जनता हित, जनता के द्वारा, जनता की सरकार खो गई–
वंशवाद बन गया विरासत, अब विकल्प क्या लोकतंत्र का।

212

इस चुनाव के दौर में, ऐसी चली बयार।
दलबदलु नेताओं के, मुख पर दिखी बहार।
रहे जन्म से जहाँ पर, छोड़ा वह दल आज–
'बोले, जो देगा टिकट, वहीं जाऊँगा यार।

213

अध्यापक भी कर रहे, छात्राओं से रेप।
बलात्कारियों की यहाँ, आई कहाँ से खेप।
रोकेंगे दुष्कर्म को, जिनसे थी उम्मीद–
दुष्कर्मी वह बन गए, बदल गई क्यों शेप।

214

दंगों की जो बात कर रहा, हारा हुआ खिलाड़ी है।
राजनीति दंगों की जो, करता है मूर्ख अनाड़ी है।
जनता सबकुछ समझ रही है, राजनीति को दंगों की–
राजनीति में दंगों की, किसकी अटकी गाड़ी है।

215

नक्सलवादी कर रहे, रोज शहीद जवान।
बाल-बाल बच रहे हैं, नित मंत्री श्रीमान।
नक्सलवादी समस्या तब सुलझेगी मित्र–
जब अपहृत हो जाएगी, मंत्री जी की जान।

216

दूध मिलावट पर पड़ी, यू.पी. को फटकार।
रोक न पाई मिलावट– खोरी को सरकार।
जहर बिक रहा दूध के, या मिठाई के नाम–
अनगिन खा-पीकर कर मरे, अनगिन हैं बीमार।

217

गाँधी के आदर्श पर, भाषण हुए अनेक।
बापू जी की मनाई पुण्यतिथि प्रत्येक।
आयोजित हर केन्द्र पर, कार्यक्रमों की धूम–
आयोजनकर्ताओं में कितने थे पर नेक।

218

राज ठाकरे सोचते निज बापू का राज।
भड़काऊ भाषण दिया, हुई कोढ़ में खाज।
मनसे जो चाहे करे, क्यों सत्ता खामोश–
क्या शासन में पहनकर, किन्नर बैठे ताज।

219

दस हजार करोड़ के स्वामी आशाराम।
अनगिनती दुष्कर्म भी, लिखें हैं उनके नाम।
कुछ आश्रम में पल रहे, हैं ऐसे अवधूत–
बौने हुए कुकर्म से, जिनके आशाराम।

220

देख रहे दिल्ली का सपना, सैफई के सरदार श्री।
बोल रहें हैं हल्ला–रैली, सपा के नंबरदार श्री।
यू.पी. के ताँडव को, पूरे भारत में दोहराने को–
मूर्ख बना देंगे जनता को, सोच रहे हुशियार श्री।

221

गैंगरेप, तेजाब कांड, रूक नहीं रहें हैं जारी हैं।
लचर-पचर कानून व्यवस्था, इसकी जिम्मेदारी है।
सख्त बने कानून, मुकदमा तीन माह में निर्णय हो–
मिलें जमानत नहीं दुष्ट को, ऐसी सोच हमारी है।

222

सत्य कहावत हुई जो, गए बुजुर्ग सुनाय।
घास कसाई की कभी, कटरा सके न खाय।
एक कहावत और है, वह भी सुनो हितेश–
जिसकी लाठी भैंस उसी की, चोरी कभी न जाय।

223

इक-दुजे को कह रहे, छलिया– साजिशखोर।
इतने हुए असभ्य क्यों, सत्ता के मनमोर।
कोयले की है कोठरी, राजनीति की राह–
जो भी इसमें घुसा है, बना है काला चोर।

224

गठन तीसरा मोर्चा, अच्छा नहीं हितेश।
थर्ड क्लास हो जाए ना, अपना भारत देश।
कौन-कौन हैं सम्मिलित, उनके खोलो पृष्ठ–
स्वच्छ छवि किरदार हैं, या बनावटी वेश।

225

जातिगत आधार पर, आरक्षण है पाप।
पड़ा हुआ है गले में, मरा हुआ यह साँप।
नेहरू-गाँधी ने किया, था यह आविष्कार–
सत्ता लालच, लोभ में, दिया देश को ताप।

226

ग्यारह एकत्रित हुए, फिर से एक विरुद्ध।
याद आ गया पाँडवों से कौरवों का युद्ध।
अब स्थिति विपरीत है, जागरूक है देश–
अब अभिमन्यु को नहीं, कर यह सकें निरूद्ध।

227

अगर तीसरे फ्रंट की, बनी कहीं सरकार।
फ्रंटों के निर्माण की, चल ना पड़े बयार।
आतंकी, घुसपैठिये, नक्सल, उग्री, चोर–
कर ना लें मिल–बैठकर, नया फ्रंट तैयार।

228

दागी, अत्याचारियों को, मत देना वोट।
चाहें बाँटें रेवड़ी, चाहें बाँटें नोट।
अपराधी घोषित हुए– हैं जेलों में बंद–
इस चुनाव में दो उन्हें, मित्र करारी चोट।

229

दंगों के आयोजक से तुम, बचकर चलना डगर–डगर में।
वरना नगर मुजफ्फर जैसे, दंगे होंगे नगर–नगर में।
सेवा नहीं देश की मेवा, खाने को जो झगड़ रहे हैं–
बचना उनसे घोल रहे जो, जहर हवा में डगर–डगर में।

230

आरक्षण केवल सुविधा है, यह कोई अधिकार नहीं है।
जो समर्थ है धनी बली है, वह इसका हकदार नहीं है।
संविधान में आरक्षण के, प्राविधान को भूल गए हम–
पिछड़ों के हित को निर्मित यह, वोटों का व्यापार नहीं है।

231

सावधान रहकर यह सोचें, कौन ठीक है।
उसका चयन करो तुम, जिसकी नियत नीक है।
भावुकता में बहकर उसको वोट न देना–
अर्मायादित बोल रहा जो, तोड़ लीक है।

232

दंगों की जो बात कर रहा उसको छोड़ो।
भेदभाव करने वाले से, नाता तोड़ों।
जो विकास कर सकता है इस भरत भूमि पर–
यही समय है, आज स्वयं को उससे जोड़ों।

233

नाबालिग अपराध कर रहे महाघिनौना।
समझ रहे कानून सामने, अपने बौना।
जब तक सजा नहीं होगी अपराध मुताबिक–
तब तक नहीं रूकेगा, दुष्कर्मों का होना।

234

रैली या हड़ताल लिख रहे भाग देश का।
सत्ता लोभी आज गा रहे राग देश का।
समझ रहे जागीर बाप की जो भारत को–
उनको नहीं सौंपना मित्र, सुहाग देश का।

235

दूजे को हत्यारा कहने, वाले दर्पन भी देखें।
नगर मुजफ्फर में कटवाई, हैं किसने गर्दन देखें।
जनता का दायित्व आचरण परखे कहने वाले का–
राजनीति में कौन शवों पर, करता है नर्तन देखें।

236

क्रिकेट में फिक्सिंग का होना, तात नहीं है बात नई।
लाभान्वित होते हैं इसमें, अफसर, मंत्री और कई।
इसीलिए तो अब तक इस पर, लगा नहीं प्रतिबन्ध सखे–
अरबपति हो रहे दनादन, सम्बन्धित श्रीमान भई।

237

क्रिकेट है षडयंत्र एक, अँग्रेजों ने थोपा हम पर।
ढाँपी आँख गति–प्रगति की, उढ़ा दिया टोपा हम पर।
खेलों में फिक्सिंग नीलामी, क्रिकेट के जांबाजों की–
लगता भारत पीठ किसी ने, खञ्जर है घोंपा हम पर।

238

कभी हुई हड़ताल बैंक में, कभी पोस्ट आफिस में है।
प्रजातंत्र में प्रजा दुखी है, सच्चाई खालिस में है।
रैली, क्रिकेट हड़तालों से, देश हुआ बर्बाद मियाँ–
कौन कहे हड़ताल कहाँ पर, क्या जाने अब किस में है।

239

तेलगांना बनने से, नुकसान–फायदा क्या होगा।
संसद में अब काम–काज का, कहो कायदा क्या होगा।
संविधान की मर्यादा को, सांसद तोड़ रहे देखो–
जनता से जो कर आए वह, कहो वायदा क्या होगा।

240

छोटे–छोटे प्रांत बनेंगे, तो विकास निश्चित होगा।
आधा नाम बदलने से क्या, हानि–लाभ किंचित होगा।
नहीं जमीन बँटेगी ना ही, बँटेंगे आँगन–घर–द्वारे–
हंगामा करने से कैसे, आंध्र प्रांत का हित होगा।

241

झोंक रहे हैं मिर्च आँख में, देखों सांसद संसद में।
मारपीट, धक्का-मुक्की भी करते सांसद संसद में।
कुर्सी, माइक, मेज सभी कुछ, तोड़-फोड़ भी जारी है–
अमर्यादित दुराचरण अब करते, सांसद संसद में।

242

जनप्रतिनिधि बनकर करी, जनता दुखी हितेश।
जिस थाली में खाया, कीन्हें उसमें छेद विशेष।
अब चुनाव आया तो देखो, कहते घूम रहे हैं–
हमें वोट दो, हम काटेंगे, सभी तुम्हारे क्लेश।

243

वोट उसे जो हिन्दी–हिन्दू–हिन्दुस्तान संजोये।
आरक्षण को, तुष्टिकरण को, जो जड़ से ही खोये।
भ्रष्टाचारी स्वयं नहीं हो, और न करने ही दे–
सम्प्रदाय के दंगे जिसके, युग में कभी ना होये।

244

राजनीति जो जनता के, शव पर करता है यारो।
वोट माँगने आये तो, दरवाजे पर दुतकारो।
मंत्री अगर बना तो फिर, दंगे भड़का सकता है–
उसे न अवसर दो ऐसा, उसके मंसूबे मारो।

245

तेलगांना समर्थक और विरोधी वीर।
संसद में ही भिड़ गए, खोकर मन का धीर।
घर-आँगन तो ना बँटे, बँटी न पानी, धूप–
केवल बदला नाम है, बात नहीं गम्भीर।

246

अफजल को फाँसी हुई, उचित किया सरकार।
हत्यारे का सही है, प्राणदण्ड उपचार।
फाँसी का जो कर रहे, हैं विरोध श्रीमान–
शायद हत्या का उन्हें मिला नहीं उपहार।

247

नाक कटाई देश की, किरकिट के कप्तान।
न्यूजीलैण्ड में मैच सब, हारे क्यों श्रीमान।
जनता के इस प्रश्न का, उत्तर देगा कौन–
कारण फिक्सिंग रहा या, हावी हुई थकान।

248

लोकसभा में और था, राजसभा में और।
नेता जी के कीजिए, इस चरित्र पर गौर।
गिरगिट भी शरमा गया, बदले इतने रंग–
अन्दर से चितचोर हैं, बाहर से मन-मोर।

249

गाँधी श्री राजीव के, हत्यारे कर माफ।
जयललिता जाहिर करी अपनी नीयत साफ।
फाँसी के स्थान पर, दुष्ट दिए सब छोड़–
यह कैसा कानून है, यह कैसा इंसाफ।

250

वन जब से कट गए, तभी से, शेर नगर में आएँ हैं।
मिली ना आदमखोर शिकारी, खोज-खोज चकराएँ हैं।
हथिनी भी दो ढूँढ न पायीं, हैलीकॉप्टर फेल हुआ–
शेर ने चालाकी से अपनी, शूटर सब भरमाएँ हैं।

251

कुर्सी के पीछे मत दौड़ो, ठेकेदारों सत्ता के।
जरा देशहित की भी सोचो, ठेकेदारों सत्ता के।
जो तुमसे हो नहीं सका वह, अब औरों को करने दो–
जनता तुमको परख चुकी है, ठेकेदारों सत्ता के।

252

काँटे की टक्कर होनी है, इस चुनाव के दंगल में।
कौन बचेगा कौन फँसेगा, इस चुनाव की दलदल में।
सभी दे रहे हैं आश्वासन, भ्रष्टाचार मिटाने के–
सत्य परखना भ्रमित न होना, इस चुनाव के छलबल में।

253

एक दूसरे को खूनी, हत्यारा बोल रहे हैं।
नये पुराने-झूठे-सच्चे, किस्से खोल रहे हैं।
अपनी करनी नहीं देखते हैं, सारे नेतागण–
हर दल में, दागी, अपराधी खुलकर डोल रहे हैं।

254

जंगल काट दिए जब तुमने, जीव जंगली कहाँ रहे।
नदियाँ सूख रही हैं तो फिर, मगरमच्छ अब कहाँ बहे।
राशन-पानी नहीं मिल रहा, अब जंगल में खाने को–
इसीलिए वन जीव शहर में, आकर भोजन ढूँढ रहे।

255

थर्ड फ्रंट जो बना रहे हैं, क्षेत्रीय सारे दल हैं।
कोई नहीं राष्ट्र स्तर का, जो भी हैं सब लोकल हैं।
देश सौंपना इन लोगों को, सोचो क्या हितकर होगा–
यह सब सत्ता के भूखे हैं, जोड़-तोड़ में अव्वल हैं।

256

गाली प्रतियोगिता चली है, इस चुनाव के दंगल में।
व्यंग्य बाण के अपशब्दों के, तीर चलें है दंगल में।
जीत-हार शायद वोटों के बदले, गाली से होगी-
नहीं सुनी थी कल तक जो,वह सुनी है गाली दंगल में।

257

राहुल, मोदी और मुलायम, चला रहे अपनी नैय्या।
चुप बैठीं हैं, ममता, माया, सुश्री जयललिता मैय्या।
भला नहीं कुछ कर पाएँगे, जो भी क्षेत्रीय दल हैं-
केवल राष्ट्र स्तरी दल पर, मोहर लगे अपनी भैय्या।

258

राहुल को किस किया था, जिसने जला दिया उस पत्नी को।
आत्मग्लानि से जला स्वयं भी, पूर्व जलाया पत्नी को।
अच्छा था यदि त्याज्य समझकर अलग स्वयं से कर देता-
स्वयं न जलता, मगर त्यागता, नित जलने हित पत्नी को।

259

हम ही सच्चे देशभक्त हैं, शोर मचाओ इस चुनाव में।
साम, दाम या दण्ड भेद से हमें बचाओ इस चुनाव में।
कुर्सी सत्ता के आदि हम, उसके बिना ना जी पाएँगे-
नोट बिखेरो- वोट बटोरो-हमें जिताओ इस चुनाव में।

260

पुत्र समर्पण को मिला, पितु का स्नेह अपार।
बदला रोहित के प्रति, एन. डी. का व्यवहार।
श्री नारायण दत्त ने, निर्णय लिया सटीक-
उज्ज्वल को भी कर लिया, आदर से स्वीकार।

261

व्यंग्यबाण अपशब्द को, बन्द करे श्रीमान।
अप्रिय घटना हो नहीं, होली के दौरान।
हार-जीत की भावना, करे ना रंग बदरंग-
बदल न जाए शत्रुता, में चुनाव अभियान।

262

होली में चुनाव का रंग हो, पर कुछ भी बदरंग नहीं हो।
धर्मयुद्ध हो, कर्मयुद्ध हो, वैमनस्य के संग नहीं हो।
जीते को स्वीकार करें हम, हारे का सत्कार करें हम-
व्यक्तिगत शत्रुता नहीं हो, बात कहीं बेढंग नहीं हो।

263

जो हैं ठेकेदार पुराने, जनता उन्हें नहीं स्वीकारे।
केवल स्वच्छ छवि नेता के, लिए खोल दें मन के द्वारे।
संसद है मंदिर भारत का, देशभक्त ही अंदर जाएँ-
दागी, अपराधी नेताओं, को अंतर्मन से दुत्कारे।

264

बेटी को भी टिकट दिया है, पत्नी को भी टिकट दिया है।
अपने सभी वफादारों को, आज नजर-अंदाज किया है।
राजनीति के जोकर श्री की, लीलाएँ सब जान गए हैं-
इस चुनाव में सबक सिखाना, जनता ने भी ठान लिया है।

265

होली पर शुभकामना, देता तुम्हें हितेश।
सतरंगी सपने सँजे, खुशियाँ मिलें विशेष।
परिजन-पुरजन सभी को, शुभ हो यह त्यौहार-
जीवन भर हमको मिले, सुख-समृद्धि अपार।

266

अब भी यदि चेते नहीं, जागा नहीं सुभाव।
काश्मीर के प्रति यदि, अब भी रहा झुकाव।
तो समझो हम नित्य ही, पिला रहे हैं दूध–
पाल रहे हैं साँप को, नहीं देखते घाव।

267

देखो कितना साफ है, मुस्लिम चित्र समाज।
उन जैसी ही एकता, वांछनीय है आज।
अब भी यदि चेते नहीं, बँटे रहे हम लोग–
तो भारत भारतीयता, खा जाएँगे बाज।

268

ज़िसने दंगा कराया, नगर मुजफ्फर बीच।
सम्प्रदाय से सम्प्रदाय–को जो लड़वाता नीच।
इस चुनाव में उसे भी, सबक सिखा दो मित्र–
लुभा न पाए स्वर्ण मृग, बनकर वह मारीच।

269

नगर मुजफ्फर में जिसने दी दंगों की सौगात।
आँख खोल पहचान लो, अब तो उसकी जात।
रहना है यदि शाँति से, मिल–जुलकर तो मित्र–
लोकसभा चुनाव में, अब उसको दो मात।

270

आतंकी ला रही थी, समझौते की रेल।
होना था शायद कहीं, हथियारों का खेल।
होली और चुनाव में, सावधान हो देश–
हो ना जाए व्यवस्था, कहीं जरा भी फेल।

271

इस चुनाव में दलबदलु हैं, और कई कर्त्तव्यनिष्ठ भी।
कुछ ऐसे हैं भीतरघात से, जो कर सकते हैं अनिष्ट भी।
वोट देशभक्त को देना, गद्दारों का नाम न लेना–
चयन उसी का हो जो मन से, लौहपुरुष हो सत्यनिष्ठ भी।

272

सबकी अपनी-अपनी ढपली, सबका अपना-अपना राग।
खेल रहे पैंसठ वर्षों से, झूठा आजादी का फाग।
दिग्गज ठेकेदारों– गद्दारों के, कब्जे में है देश–
जब जी चाहे हिन्दू-मुस्लिम की सुलगा देते हैं आग।

273

जो दल घिसे-पिटे बुड्ढों को निज प्रत्याशी बना रहे हैं।
भारत में वह लोकतंत्र की, मिलकर धज्जी उड़ा रहे हैं।
चार बार जो रहा है सांसद, उसको अब जनता ठुकराए–
उनकी नहीं बपौती संसद, जो अपना हक जता रहे हैं।

274

बाहर से फिर थोप दिया है, लाकर हम पर प्रत्याशी।
हम अपने ही निजी क्षेत्र के, सांसद के हैं अभिलाषी।
बाहर वाला कब-क्यों आकर, अश्रु हमारे पूँछेगा–
कौन सुनेगा व्यथा हमारी, रहेगा जो काबा-काशी।

275

देशद्रोह है राष्ट्रीय– सम्पत्ति की हानि करना।
घोर अराजकता, नियमों का, उल्लंघन यानि करना।
जो यह दल सबकुछ करता है, देशभक्त वह जरा नहीं–
राष्ट्रधर्म की तुम उसको मत देकर, मत ग्लानि करना।

276

दागी मंत्री, दागी नेता, भ्रष्टाचारी सारे।
देशप्रेम का ढोंग कर रहे, बाहुबली हत्यारे।
अगर नहीं जनता जागी तो, फिर कब्जा कर लेंगे–
संसद पर घोटाला करने वाले सब बटमारे।

277

नक्सलवादी हमले में जो भी शहीद होते हैं।
सत्ता पर कुछ असर न होता, परिजन ही रोते हैं।
नक्सलिया जिस जंगल में छुपते हैं, उस जंगल में–
क्यों नहीं आग लगा देते हम, बोलों क्यों सोते हैं।

278

लगता है शायद मोदी ही, हमें बचा सकता है।
विष जो व्याप्त हुआ संसद में, उसे पचा सकता है।
सबको अवसर दिया, आज मोदी को देकर देखो–
भ्रष्टाचारों के विरुद्ध वह, रास रचा सकता है।

279

यह दायित्व हमारा भी है, सत्यनिष्ठ को आज चुनें।
कर्मनिष्ठ को गले लगाएँ, अपराधी का शीश धुनें।
सही–गलत का अंतर समझे, निजी स्वार्थ से दूर रहें–
तभी सत्य होंगे वह सपने, जो गाँधी ने कभी बुनें।

280

जिसका कोई धर्म नहीं है, उसे अधर्मी बोलो।
स्वयं को जो सेक्युलर कहते हैं, उनके पत्ते खोलो।
जिसे आजमा लिया, उसे अब पुनः आजमाना क्यों–
इस चुनाव में हर नेता के कथन–वजन को तोलो।

281

दागी अपराधी व्यक्ति को, जिसने बाँटे टिकट अनेक।
आज खींच लो उसके नीचे से, तुम भी सत्ता की टेक।
दर्पण उसे दिखाओ, जिसने घोटाले भरपूर किए–
है दायित्व तुम्हारा संसद में अब भेजो व्यक्ति नेक।

282

कोई दुष्ट जीत ना पाए, इसका तुमको ध्यान रहे।
वोटों का हकदार तुम्हारे, अब ना बेईमान रहे।
सत्यनिष्ठ जीते चुनाव में, कर्मनिष्ठ को सत्ता दो–
निजी स्वार्थ को त्याग, देश के भक्तों की पहचान रहे।

283

विदा हो गए जगत से, पत्रकार खुशवंत।
सीट न मनचाही मिली, दुखी श्री जसवंत।
अपराधी, दागी सभी टिकट पा गए मित्र–
चाटुकार जीते सभी, हार गए गुणवंत।

284

घमासान हो रहा है, ठेकेदारों बीच।
सब मनचाही सीट पर, मचा रहे हैं खींच।
समझ रहे हैं देश को, सब अपनी जागीर–
बने स्वर्ण मृग घूमते, जनता में मारीच।

285

स्याही मिटाकर पुनः वोट दो, बोले श्री पवार।
क्यों चुनाव आयोग हुआ, इनके आगे लाचार।
जो जी चाहें बोल दें, इन्हें न कोई रोक–
ऐसे व्यक्ति को चुनाव में, दे जनता फटकार।

286

जनता उन्हें नकारे, अब तक चूस चुके जो खून।
जीवन भर सांसद रहने का, मिटे सभी मजमून।
उसे मिले ना टिकट, रहा जो चार बार संसद में–
जनता इस बारे में अपना, रचे स्वयं कानून।

287

सत्ता भूल भले ही जाए, भगतसिंह की कुर्बानी को।
लेकिन याद रहेगा हरदम, वह सच्चे हिन्दुस्तानी को।
चाहें पाक नहीं सन्माने– या इंसाफ न दें सरकारें–
श्रद्धासुमन करेंगे अर्पित, हम ऐसे हर बलिदानी को।

288

मादक मौसम हो गया, हुआ शीत का अंत।
देख कनखियों से रही, सुमुखी अपना कंत।
महकी रानी रात की, दिन में खिला गुलाब–
व्यापा अंग–अनंग तो, आयौ लगा बसंत।

289

जनता परखे, परख कर, मित्र करे मतदान।
उसे वोट दें कर सके, जो समाज कल्यान।
खरा न उतरा जो कभी, उसे न देना चांस–
करना होगा अब हमें, निजी स्वार्थ बलिदान।

290

जगह–जगह पकड़े गए, हैं आतंकी सात।
लक्ष्य एक था सभी का, हो मोदी पर घात।
विश्वनाथ की शरण में, पहुँच गया जो किन्तु–
उसका जीवन शत्रु भी, लेना ना सके हठात।

291

सारा देश सतर्क है, आतंकवाद विरुद्ध।
कुछ के मन में क्षोभ है, कुछ अंतर्मन क्रुद्ध।
समझ नहीं क्यों पाए हम, काश्मीर की नीति–
आतंकी हमले नहीं, हो ना सके निरुद्ध।

292

नंगा हुआ कराया था, कल जिसने दंगा।
बोले अगर भाजपा आई, होगा दंगा।
जो दंगे भड़काते हैं, रहकर सत्ता में–
वही भाजपा को कहते, भड़काती दंगा।

293

मोदी को जिसने कहा, पागल मेरे मित्र।
उसका भी अखबार में, छपा है देखो चित्र।
व्यक्तिगत आक्षेप जो, करें चुनावों बीच–
जनता उसका भी जरा, परखे आज चरित्र।

294

टिकट नहीं पाया तो लौट रहे, दल–बदलु नेता।
उस दल में क्यों रहे, हमें जो टिकट नहीं है देता।
पहले भी तो लिए टिकट के, हमने दल बदला था–
देश नहीं, दल नहीं, टिकट ही है अपनी प्रथमेता।

295

बूढ़े सब प्रत्याशी खाकर, च्वयनप्राश आए हैं।
ऐसे भी हैं पाँव कब्र में, जिसने लटकाएँ हैं।
हमें जिताओ, अब हम झगड़े, कभी ना होने देंगे–
अरे हमी ने तो कल तक, सब दंगे करवाएँ हैं।

296

मूर्ख नदी धारा में बहता, दाँव जुए में नाव लगा दे।
धन सम्पत्ति हार जाए तो, राज लगा दे, गाँव लगा दे।
भाई न हो युधिष्ठिर जैसा, जो जुए में सबकुछ खोकर–
भाई दाँव लगाकर हारे, फिर पत्नी को दाँव लगा दे।

297

घोटाले खुल जाएँगे, अगर गए हम हार।
घोटाले रुक जाएँगे, गर न बने सरकार।
इसी प्रश्न से दुखी हैं, घोटाला सिरमौर–
अपराधी, दागी, दुखी, होगा क्या इस बार।

298

हर–हर मोदी, घर–घर मोदी, से मच रहा बवाल।
डाल रहे हैं दल सभी, इन शब्दों पर जाल।
भूख–प्यास मिट गई है, नींद गई है भाग–
देकर गाली कर रहे, मन का शांत उबाल।

299

युद्ध महाभारत हुआ, अपराधी थे भीष्म।
कन्याओं के अपहरण, के दोषी थे भीष्म।
हर युग में होते रहे, हैं ऐसे कुछ लोग–
रहे विरोधी धर्म के, निजी स्वार्थ जो भीष्म।

300

जिसने अरबों खींच लिए हैं, उसको वोट न देना भैय्या।
भूखी मर जाएगी गैय्या, सूख जाएगी गंगा मैय्या।
एक नहीं, दो नहीं, प्रतिशत चालीस संसद में ऐसे हैं–
जिनके कारण सदा भँवर में, फँसी रही भारत की नैय्या।

301

इस चुनाव में किस-किस को, शुभ होगा यह नवसम्वत।
किसको विजय मिलेगी, किसकी होगी जब्त जमानत।
जनता जागे, फँसे नहीं, पैसे, शराब धोखे में-
सत्यनिष्ठ को सौंपें, अपनी संसद, देश अमानत।

302

देश नहीं होगा तबाह पर, भ्रष्टों की माँ मर जाएगी।
घोटाला करने वालों को, नानी की याद आ जाएगी।
माया मुक्त चाहिए संसद, लोभी, लम्पट, कुटिल नहीं हों-
सत्यनिष्ठ पी.एम. होगा तो, देश अस्मिता बच जाएगी।

303

अपराधी, दागी जितने भी, प्रत्याशी हैं सब नकार दो।
शत-प्रतिशत मतदान करें हम, जागो उठकर यह पुकार दो।
बँटो नहीं जाति धर्मों में, हिन्दू-मुस्लिम भेद मिटाओ-
वल्लभभाई जैसे नेता चुनकर संसद को सँवार दो।

304

चोर-चोर मौसेरे भाई, कौन-कौन हैं पहचानो।
जयचन्द और विभीषण इनमें, कौन-कौन हैं पहचानो।
आँख मूँदकर वोट न देना, कभी किसी प्रत्याशी को-
दागी-अपराधी कितने हैं, कौन-कौन हैं पहचानो।

305

लुट जाएगा देश अगर, मतदान तुम्हारा गलत हुआ।
झगड़े-दंगे होंगे गर, मतदान तुम्हारा गलत हुआ।
विकट समस्या काश्मीर की, कभी न हल हो पाएगी-
आजादी खो देंगे, गर मतदान तुम्हारा गलत हुआ।

306

टिकट नहीं पाया तो नेताजी ने बदल लिया पाला।
कल जिसको जीजा कहते थे, आज बताते हैं साला।
इन दलबदलु नेताओं का, धर्म नहीं, ईमान नहीं–
अच्छा होगा अब जनता ही, गले नहीं डाले माला।

307

इस कलयुग में मर्यादा, पुरुषोत्तम राम कहाँ से लाएँ।
द्रुपद सुता की लाज बचाने को, घनश्याम कहाँ से लाएँ।
अब तो जो भी, जैसे भी हैं, उनसे काम चलाना होगा–
जो पटेल जैसा लगता हो, सब मिलकर अब उसे जिताएँ।

308

ईवीएम में कैद हो गए, सत्ता पाने के प्रत्याशी।
बहुत सुनाई और सुनी भी, अपशब्दों की भाषा-भाषी।
किसे बँधेगा जीत का सेहरा, गले में किसके हार पड़ेगी–
कौन बनेगा पी.एम. निश्चित, करेगी विश्वनाथ की काशी।

309

धर्म यार निरपेक्ष सभी हैं, बीजेपी सम्प्रदायवादी।
सबका केवल एक कथन है, केवल वही विकासवादी।
कल जिसने दंगे करवाए, औरों को कातिल कहता है–
मजा देखिए उत्पादी ही, कहते बीजेपी उत्पादी।

310

बलात्कार पर नेताजी ने, बात कही क्या खूब।
घर की महिलाएँ अचरज से, चबा रही हैं दूब।
फाँसी नहीं बलात्कारियों का, कुछ कम हो दण्ड–
सुनकर कई समर्थक उनके, गए नदी में डूब।

311

इस चुनाव में जिस-जिस ने भी गाली-गुफ्तारी की है।
अपशब्दों की व्यंग्यबाण की, जिसने बमबारी की है।
आजीवन चुनाव लड़ने पर, अब उनके प्रतिबन्ध लगे-
अमर्यादित दिए हैं भाषण, अपमानित नारी की है।

312

राम-लखन-शत्रुघ्न-भरत सम हो पुत्र सुजान।
तब जानो उस व्यक्ति के, होंगे पुण्य महान।
वरना तो कलिकाल में, पिता-पुत्र सम्बन्ध-
ऐसे हैं जैसे कहीं, दो मानुष अनजान।

313

पति परायण पत्नी हो, मन-भावन अनुकूल।
उस व्यक्ति के पाँव में, कभी चुभे ना शूल।
सागर को संसार के, करे तैर कर पार-
तूफानों को चीरकर, सदा पकड़ता कूल।

314

बन्धुआ हो मजदूर जहाँ पर,और कृषक रहता हो भूखा।
वहाँ कहीं बाढ़ आती है, और कहीं पड़ता है सूखा।
गंगा, गौ या गायत्री की, पूजा जहाँ नहीं होती है-
नारी अपमानित होने पर, हर मौसम होता है रूखा।

315

अब तक जो भी नहीं कर सके, आगे क्या कर लोगे।
झूठे आश्वासन वादों से, क्या हरदम जीतोगे।
आत्मसमर्पण कर दो अब तो तुम जनता के आगे-
माफी मिल सकती है वर्ना, कारागृह झेलोगे।

316

मुस्लिम भी अब समझ गए हैं,भले-बुरे का सारा अंतर।
लोकतंत्र को खा जाएगा, वंशवाद का राज निरंतर।
समय यही है उचित करो अब, अपना मत परिवर्तन–
भूल जाओ अब गाँधी जी के, अँधे, बहरे, गूँगे बंदर।

317

मुगले आजम बोल रहे हैं, मुस्लिमों ने कारगिल जीता।
हिन्दू सैनिक वहाँ नहीं थे, जब कारगिल में लगा पलीता।
कोरा झूठ बोलने वाले, पर चुनाव आयोग सख्त हो–
जिससे झूठ बोलने वाला, बने न कल को इब्नेबतूता।

318

देखो नेता घूम रहे हैं, हर दरवाजे वोट माँगते।
लोक लुभावन बाते करते, वोटर का मंतव्य आँकते।
मूर्ख समझते हैं जनता को, लेकिन अब वह बात नहीं है–
सत्यनिष्ठ को विजय मिलेगी, रह जाएँगे धूर्त-ताकते।

319

ईश करे! जगदीश करे! अब इतनी कृपा विशेष।
मोदी पी.एम. बने, मिटेगा तभी देश का क्लेश।
अस्सी लाख करोड़ घोटालों में, जो हड़प गये हैं-
उन्हें उगलना होगा वह, सारा धन स्वयं हितेश।

320

कब तक देश चलायेगा, परदे पीछे से इटली।
हम झेलेगें बोलो कब तक, कोई पी.एम. नकली।
अन्धे गूँगे बहरे नेता, अब स्वीकार नहीं हैं-
अबकी बार हमारी संसद, में होंगे सब असली।

321

कई हमारे नेताओं को, हिन्दी नहीं बोलनी आती।
भारतमाता के मंदिर में, कैसे होगी दीपक-बाती।
यह कैसा दुर्भाग्य हमारा, संसद में अधिकांश सांसद–
भारत माँ के लाल ना असली, नकली अँग्रेजों के नाती।

322

हैं अधिकांश पुराने चेहरे, सत्ता ठेकेदार स्याने।
दागी-अपराधी नेता भी, क्यों प्रत्याशी पड़े बनाने।
लाल बहादुर शास्त्री जैसे, नेता क्यों हो रहे उपेक्षित–
क्या घोटाला करने वाले, हमें पड़ेंगे पुनः निभाने।

323

कौन देश को बना रहा है उल्लू इसका भी निर्णय हो।
ऐसा नेता मिले हमें जो, लाल बहादुर सा निर्भय हो।
बदलेगा तब भाग्य देश का, जब ईमानदार जीतेंगा–
देशभक्ति के प्रति जरा भी, जिसके मन में ना संशय हो।

324

वोटर भी बदलाव चाहता है, चुनाव में सिद्ध हो गया।
उसे नहीं चाहता जो, घोटालाबाज प्रसिद्ध हो गया।
जागरूक है अब मतदाता उसका बहिष्कार करने को–
जिसका चलन-आचरण, देशद्रोहियों सा संदिग्ध हो गया।

325

अभी जाग्रत नहीं हुआ है, मतदाता सोया है।
जिसने वोट न डाला उसने, राजधर्म खोया है।
शत-प्रतिशत मतदान हमारा, यह निश्चित करता है–
आने वाले पाँच वर्ष को, क्या हमने बोया है।

326

अजब परिस्थिति है चुनाव में, व्यक्तिगत हमला जारी है।
बात नहीं कोई विकास की, सीधी-सीधी बमबारी है।
दंगो के संदर्भ उठ रहे, घोटालों की बात हो रही-
कौन विकास करेगा सच्चा, जनता को मतिभ्रम भारी है।

327

बेटा दिया अमेठी को, माता जी ने फरमाया।
पर जनता का दिल, सम्भाषण जरा समझ न पाया।
बेटा अगर अमेठी का है, तो क्यों दिल्ली रहता-
क्यों चुनाव के समय अमेठी, याद हमेशा आया।

328

मैं चुनाव लड़ने को तत्पर, पीछे नहीं हटूँगा।
जो भी मुझे टिकट देगा, उसकी ही जय बोलूँगा।
दलबदलु कह लो या कुछ भी, फर्क नहीं पड़ता है-
टिकट नहीं पाया दल का तो, फिर निर्दली लड़ूँगा।

329

जनता को बदलाव चाहिए, इसमें कुछ संदेह नहीं।
घोटालों से ऊब चुके हम, इसमें कुछ संदेह नहीं।
सबका का शासन देख चुकी है, जनता अपनी आँखों से-
अब चुपचाप नहीं बैठेगी, इसमें कुछ संदेह नहीं।

330

सबने अपने पेट भर लिए, जनता के धन को लूटा।
उलटे-सीधे बोल सुने तो, जनता का गुस्सा फूटा।
बहुत हो चुका, बहुत हो चुका और नहीं, अब और नहीं-
जनता अब उखाड़ फेंकेगी, भ्रष्टाचारों का खूँटा।

331

गाँधी जी के बने हुए थे नेता गूंगे, बहरे, बंदर।
एकतंत्र का हुक्म चल रहा था, संसद के बाहर अंदर।
लिप्त अधिक थे घोटालों में, काफी थे नंगे हमाम में–
छिपा रहे थे एक-दूसरे की कमजोरी मस्त कलंदर।

332

आरक्षण देंगे सवर्ण को मायाजी ने फरमाया है।
अब तक नहीं दिया क्यों इस पर खामोशी को अपनाया है।
पाँच साल तक याद न आई, क्या सवर्ण की, क्या गरीब की–
अब चुनाव आए तो नारा, वही पुराना दोहराया है।

333

आने वाला कल भी क्या, बीते कल सा बीतेगा।
घोटालाबाजों के हाथों, राजकोष रीतेगा।
संसद में दागी अपराधी, नेता काबिज होंगे–
या इस बार सभी हारेंगे, मतदाता जीतेगा।

334

जो चुनाव में हवा चली है, इससे बहुत दुखी हैं सब।
मतदाता भी जागरूक है, देख रहा सबके करतब।
सोच रहा है, अपना मत मैं किसको ना दूँ, किसको दूँ–
अपनी-अपनी बोल रहे हैं, सारे नेता बेमतलब।

335

पूछ रहा हूँ खुलेआम मैं क्या युग परिवर्तित होगा।
इस चुनाव में घोटाला-बाजों का सपना चित होगा।
अपराधी दागी नेताओं से क्या होंगे मुक्त कहो–
मतदाता की जीत का सपना क्या इस बार सिद्ध होगा।

336

झूठे झूठ बोलकर सबको बता रहे हैं झूठा।
समझ रहे सत्ता में उनके, गढ़ा बाप का खूँटा।
वंशवाद घोटाला करने वाले, दागी हारें–
हार विजय का उसे मिले, जो सच्चा और अनूठा।

337

पद्मश्री वह पा गये बने वही श्रीमान।
जिन-जिन से भी खुश रही सत्ता हाईकमान।।
चाटुकारिता के लिए लिखते झूठी बात।
सच लिखते हो इसलिए मिला नहीं सम्मान

338

पद्मश्री ना मिलने के भी कारण भैय्या कई विशेष।
राजनीति में अब तक कोई बाप बनाया नहीं हितेश।
फिक्सिंग में माहिर होता तो मिलता हर सम्मान मुझे।
चाटुकारिता बिना योग्यता भी पाती है सदा कलेश।

339

चाहे कुछ भी कहे कोई हम, इस चुनाव में ना चूकेंगे।
जिसे समर्थन देना है हम, उसका नाम नहीं भूलेंगे।
हमें देखकर गहरा सागर, भी नतमस्तक हो जाता है।
हम प्रहलाद है तुम्हें डूबो देंगे, पर खुद ना डूबेंगे।

340

जब से कब्जा हुआ देश पर, एक तंत्र परिवार का।
तब से स्तर रोज गिरा है, भारत की सरकार का।
केवल विकसित हुई है क्रिकेट, और कहीं कुछ हुआ नहीं–
कार्य क्षेत्र भी बहुत बढ़ गया, घोटाला व्यापार का।

341

उगल रहे हैं आग, हमारे सब नेतागण।
व्यक्तिगत शत्रुता हो गया है, चुनाव रण।
एक-दूसरे पर अपशब्दों की बौछारें-
जाने कहाँ खो गया, भारत का जन-मन-गण।

342

ममता, माया, ललित, सोनिया हुई एकता इनमें नेक।
आपस का वैमनस्य त्याग कर,सबका लक्ष्य हो गया एक।
सब इक स्वर से बोल रहे हैं, क्रिमिनल और कसाई खूनी-
मोदी के विरोध में, मर्यादा को लांघ रहा प्रत्येक।

343

यह चुनाव हो गया घिनौना, युद्ध व्यक्तिगत।
ध्रुवीकरण हो गए समीकरण, सब जातिगत।
मर्यादा- आचार संहिता का उल्लंघन-
खुलेआम है बात नहीं कोई नीतिगत।

344

घोटालों का राज रहा, अब तक दिल्ली में।
भ्रष्यचारी मस्त रहे, कल तक दिल्ली में।
बलात्कार, आतंकवाद जो रोक न पाई-
क्या वो ही सरकार चाहिए, फिर दिल्ली में।

345

सबकी जिह्वा फिसल रही है, बोल रहे हैं उट-पटांग।
संस्कृति और सभ्यता त्यागी, दी सबने मर्यादा लांघ।
व्यक्तिगत वैमनस्य बढ़ा है इस चुनाव के महायुद्ध में-
क्रिमिनल, खूनी और कसाई, कहकर खींच रहे हैं टांग।

346

हुए धमाके ट्रेन में, खिला मौत का खेल।
होनहार की मौत का, कारण बन गई रेल।
नेताजी अब बस करो, तुष्टिकरण दो त्याग–
अब आतंकी, नक्सली, उग्री डले नकेल।

347

चकमा देखो दे गया, फिर सबको गुलदार।
राजनीति के खेल में, माहिर लगता यार।
जैसे बाद चुनाव के, नेता होते लोप–
यूँ ही एक छलांग में, लोप हुआ पगचार।

348

भूख, गरीबी और अशिक्षा, बढ़ी हुई महँगाई।
इस चुनाव में इन मुद्दों पर, ध्यान नहीं है भाई।
इक–दुजे पर दोषारोपण, व्यंग्य बाण हैं मुद्दे–
जनहित की बात किसी ने, अब तक नहीं उठाई।

349

वह कहते हैं मोदी का मन, माँग रहा है कुर्सी।
उनसे पूछो क्या उनका मन, त्याग रहा है कुर्सी।
लोकतंत्र में सत्ता की, कुर्सी पर सबका हक है–
उचित नहीं है वंशवाद की, करे गुलामी कुर्सी।

350

जो घोटाला और अपहरण करते और कराते हैं।
जनता से झूठे वादे, करते पर नहीं निभाते हैं।
इस चुनाव में जनता उनसे, चुकता करे हिसाब–
जो हर बार चुनाव के अवसर, वोट माँगने आते हैं।

351

सड़कें टूटी पानी दुर्लभ, पुलिया और अधूरे पुल हैं।
भूख, गरीबी और अशिक्षा, बिजली जैसी सुविधा गुल हैं।
जिनका राज रहा है अब तक, उनको अब तक ध्यान न आया–
मूलभूत समस्याओं पर, रही नीतियाँ क्यों ढुल–मुल हैं।

352

सोते मोदी, जागे मोदी, खाते मोदी, पीते मोदी।
रा.काँ.पा., तृणमूल, वामदल सबका लक्ष्य न जीते मोदी।
जन–जनार्दन लेकिन जिसके, साथ खड़े हों धर्मयुद्ध में–
ऐसा कैसे हो सकता है, पी.एम. पद से रीते मोदी।

353

पछताएँगे अगर पुनः दोहराएँगे पिछली सरकार।
जिसने अब तक किया न कुछ भी, उससे कैसी आशा यार।
लोकतंत्र में नहीं विरासत, और रियासत को स्थान–
क्यों भारत पर करे हुकूमत, सालो–साल एक परिवार।

354

ओछी हरकत राजनीति में, कौन कर रहा यह भी देख।
नीचे स्तर की जो भाषा, बोल रहा है यह भी देख।
जिसको गलत सिद्ध करने को, सबने लांघी है मर्यादा–
कुछ तो उसमें भी विशेष है, लेकिन क्या है यह भी देख।

355

अस्पताल में गया एक दिन, दुखी कर दिया जब खाँसी ने।
आँख दिखानी भी चाही पर, आँख दिखायी चपरासी ने।
डाक्टर जी का कार्ड दिया फिर, घर का मुझको पता बताया–
यहाँ नहीं घर पर देखेंगे, तुम्हें– कहा मैट्रन मासी ने।

356

सीढ़ी बैठे हुए तीसरी, नेता जी यह सोच रहे हैं।
इस चुनाव में क्या कारण है, हम क्यों इतने पोच रहे हैं।
थर्ड फ्रंट अब बनेगा कैसे, दिल्ली अपनी कैसे होगी–
जब अपने सारे सहयोगी, बाल सरों के नौंच रहे हैं।

357

नीच, कमीना और कसाई कहते हैं कहने दो।
नीच कौन है इसका निर्णय, जनता पर रहने दो।
जल्दी ही तय हो जाएगा, सही गलत का झगड़ा–
अभी सबै अपने ही, दुर्वचनों के संग दहने दो।

358

कल चुनाव की लहर सुनामी, उठती देखी काशी में।
विश्वनाथ की कृपा करेगी, घोषित पी.एम. काशी में।
पता नहीं भारत भविष्य में, है हितेश क्या लिखा मगर–
वर्तमान स्पष्ट हो गया है, कल कुछ-कुछ काशी में।

359

नेताजी यह सोच रहे हैं, सत्यनिष्ठ यदि जीत गया तो।
सब घोटाले खुल जाएँगे, बन पी.एम. जन-मीत गया तो।
भ्रष्टाचार करेंगे कैसे, वंशवाद खतरे में होगा–
क्या होगा छापा लगने पर, कालाधन यदि रीत गया तो।

360

उसे भगाओ जिसने अब तक, घोटाले भरपूर किए हैं।
जीत न पाए जिसने भारत माँ के सपने चूर किए हैं।
हिन्दू-मुस्लिम को लड़वाने वाला सांसद न बन जाए–
मुँह काला हो उसका जिसने, हिन्दू-मुस्लिम दूर किए हैं।

361

सोनिया-राहुल नहीं हैं हार के जिम्मेदार।
यही कह रहे एक स्वर, से सब चाटूकार।
अनुशासन काँग्रेस का, और एकता धन्य–
अपने सर पर ले रहे सभी हार का भार।

362

नारद जी को नमन है, बारम्बार प्रणाम।
पत्रकारिता क्षेत्र में, जिनका पहला नाम।
मृत्युलोक– पाताल से, स्वर्गलोक तक नित्य–
पहुँचाते जो सूचना, रहे सदा निष्काम।

363

आँधी पानी का हुआ, फिर मौसम पर वार।
हो ना जाए आम की फसल कहीं बेकार।
यूँ तो गर्मी से मिली, राहत हमें हितेश–
रास न आई कृषक को, लेकिन यह बौछार।

364

बीजेपी बहुमत में आई, तो बढ़नी कुछ की धक–धक है।
किसको लें मंत्रीमंडल में, केवल नमो–नमो का हक है।
नमो–नमो को जीत मिली है, अन्य किसी को श्रेय नहीं है–
जो रूठा है उसे मनाने की कोशिश करना नाहक है।

365

कौरव सेना पर विजय, जैसी पाई पार्थ।
ऐसे ही सब दलों पर, मोदी विजय यथार्थ।
मोदी अर्जुन रूप हैं, राजनाथ हैं कृष्ण–
कैसे रूकता विजय रथ नाथ बने जब सार्थ।

366

नमो-नमो की जीत हुई है, वंशवाद हारा है।
लोकतंत्र ने एकतंत्र का दानव संहारा है।
बड़े-बड़े ठेकेदारों के घुटने टिका दिए हैं-
दस वर्षीय कुशासन से, अब होना छुटकारा है।

367

किसने कहा 'कसाई', 'फेकू', 'कातिल' या 'हत्यारा'।
एक विकास पुरूष को जिसने कहकर नीच पुकारा।
उन सबको दर्पण दिखलाया, भारत की जनता ने-
चोर-लुटेरों, घोटाला-बाजों का हुआ किनारा।

368

मोदी जी की जीत ने किया सबै हैरान।
जो नफरत करते रहे, उनका डूबा यान।
माँ का अशीर्वाद तो लेने गए नरेन्द्र-
मिले जसोदाबेन के तप को भी सम्मान।

369

माया, ममता, मुलायम, ललिता करें विचार।
यश-अपयश विधि हाथ है, सत्य करें स्वीकार।
व्यंग्यबाण अपशब्द का, खुलकर किया प्रयोग-
अब चुनाव में खा गए, जनता की दुत्कार।

370

समझ गए हैं दलित, दिया है किसने हमको धोखा।
आप महल कब्जाया हमको दिया न अब तक खोखा।
इसीलिए अब समझ बूझकर खींची सबकी कुर्सी-
नेता को भी दर्पण दिखलाएंगे, पाकर मौका।

371

इस चुनाव में जनता ने, ऐसा विस्फोट किया है।
लोकतंत्र या एकतंत्र का अंतर नोट किया है।
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई एक मंच पर आए–
धर्म और जाति से ऊपर, उठकर वोट किया है।

372

काँग्रेस की लुटिया डूबी, इसका कारण चाटुकार हैं।
चार सौ चौदह रहे चवालीस, इसका कारण चाटुकार हैं।
काँग्रेस फिर हो सकती है, पुनर्स्थापित यह सच मानो–
गाँधी जी के बंदर जागे, माइनस होने चाटुकार हैं।

373

चाटुकार काँग्रेस खा गए, अहंकार खा गया सपा को।
और दलित पहचान गया है, अपनी सुप्रीमो बसपा को।
ममता, ललिता, लालू जैसे सबके चेहरे साफ हो गए–
आने वाले बीस वर्ष अब, मिले भाजपा की सत्ता को।

374

बिगुल बज गया ढोल बज गया।
नमो–नमो का शोर मच गया।
मोदी के पी.एम. बनने से–
भारत का भूगोल बच गया।

375

धीरे–धीरे छोड़ रहे हैं, संगी–साथी सारे।
गलत नीतियों के कारण ही, हारे हैं बेचारे।
जनता ने भी दिया आपसे मोहभंग का झटका–
दिल्ली गई हाथ से, संसद का चुनाव भी हारे।

376

अति उत्साह में जो भी करोगे, कष्ट ही होगा।
न सोचोगे न समझोगे, करोगे कष्ट ही होगा।
उचित है कृष्ण सा कोई रहे, इक सारथी रथ पर–
स्वयं हाँकोगे रथ, हो युद्धरत, तो कष्ट ही होगा।

377

वही वादा हो जनता से, उचित जो और सम्भव हो।
करें क्यों बात ऐसी, जोकि अनुचित हो असंभव हो।
बड़े संयम से लेना काम, रखना धैर्य को आगे–
चुनौती जो भी शत्रु दे, सदा उसका पराभव हो।

378

न समझोगे, न बूझोगे करोगे नित्य मनमानी।
तो ले डूबेगी तुमको, किसी भी दिन कोई नादानी।
करो चाणक्य सा शामिल, सलाहकारों में मोदी जी–
उसी का मशवरा तुमको, बना सकता है लासानी।

379

अब ना आत्महत्या करे, भूखा और गरीब।
नमो साथ मजदूर का, भी खुल जाए नसीब।
भेदभाव का रोग भी, जड़ से मिटे हितेश–
दीन–दुखी निर्बल सभी, बन कर रहे हबीब।

380

पीछे करना पड़े जिसे, तुम ऐसा कदम उठाना मत।
चाटुकार अवसरवादी के, बहकावे में आना मत।
जिसका जो वांछित है, उसको मिले ध्यान इतना रखना–
विद्वानों की सम्मति को भी, मोदी जी ठुकराना मत।

381

सत्ता के मद में आकर तुम, होना मत मदहोश मियाँ।
धीरे चले मिलेगी मंजिल, होना मत खरगोश मियाँ।
सभी समस्याएँ सुलझेंगी, बिजली,पानी,भूख गरीबी–
बहुत ऊँचाई तक पहुँचोगे, रहना बस बाहोश मियाँ।

382

कोई खतरा नहीं किसी को, मोदी के इस रामराज में।
हिन्दू-मुस्लिम रहेंगे मिलकर, मोदी के इस रामराज में।
दंगा मत करना-करवाना, वरना रही सही खो दोगे–
भेदभाव की बात न होगी, मोदी के इस रामराज में।

383

कृषि प्रधान है देश पर, भूखा मरा किसान।
बिजली बिना सिंचाई का, बंद पड़ा अभियान।
जो बोया था काटकर, दिया शुगर मिल डाल–
काम ठप्प है हुआ ना, गन्ने का भुगतान।

384

जो उगाय सबके लिए, गन्ना-गेहूँ-धान।
उसके सूखे पड़े हैं, खेत और खलिहान।
बिजली बिना सिंचाई को, चले नहीं नलकूप–
मिल मालिक ने किया ना, गन्ने का भुगतान।

385

पाँच सितारा बन गए, विद्या के आगार।
शिक्षा जैसे बन गई, भारत में व्यापार।
बच्चे बस्ता बोझ से, दबे-दबे कुम्हलाय–
और फीस के बोझ से, दबा सकल परिवार।

386

शिक्षा के हर क्षेत्र में, है पैसे का खेल।
खुलेआम चल रही है, डोनेशन की रेल।
इंजीनियर या डाक्टर बन सकता है पुत्र–
आवश्यक उसके लिए, खर्च करोड़ों झेल।

387

शीघ्र सुलभ सस्ता मिले, था न्यायिक सिद्धान्त।
न्याय प्रक्रिया का मगर, उलट गया वेदान्त।
हुआ विलम्बित न्याय भी, फिर खर्चा बेतोल–
निर्णय से पहले हुआ, द्विपक्षी प्राणान्त।

388

कभी अदालत ना मिली, कभी हुई हड़ताल।
कभी सामने आ गया, सुविधा शुल्क सवाल।
न्याय समय पर ना मिला, खर्चे हुए अनेक–
वादी –प्रतिवादी हुए, दोनों ही कंगाल।

389

सबका केवल एक लक्ष्य है, जनता से जनता लड़वाओ।
जनता की भावना कुरेदो, फिर झगड़े–दंगे करवाओ।
बीजेपी की सभी नीतियाँ, सफल न होने पाएँ–
गैंगरेप, हत्या, बिजली में, जनता को उलझाओ।

390

गैंगरेप भी रूक जाएंगे, हत्या भी रूक जाए।
आरोपी ना छूटे जमानत, पर आयु चुक जाए।
सत्यनिष्ठ हो अगर अदालत, और वकालत दोनों–
परिजन भी ऐसे दोषी को, पास नहीं बिठलाए।

391

नेताजी ने इस चुनाव में, छक्का खूब लगाया।
केवल परिजन जीते, दल का कोई जीत न पाया।
वंशवाद हो गया इस तरह, संसद में स्थापित–
पर पी.एम. बनने का, नेताजी सपना बिखराया।

392

गैंगरेप के आरोपी कुछ तो फरार हैं।
पा जाएंगे बेल, हुए जो गिरफ्तार हैं।
दुष्कर्मों में पुलिस प्रक्रिया, क्यों ढीली है–
और हमारे न्यायालय भी क्यों उदार हैं।

393

रोज हो रही हैं हत्याएँ महिलाओं की।
शासन करे सुनिश्चित रक्षा अबलाओं की।
गैंगरेप, दुष्कर्म कहीं कारण दहेज है–
जाने कब किस्मत बदलेगी ललनाओं की।

394

यू.पी. का शासन कैसा नाकाम हो गया।
केवल अफसर के तबादले काम हो गया।
समय यही है अब यू.पी. का बँटवारा हो–
गैंगरेप, हत्या, घोटाला आम हो गया।

395

अभी बहुत से बाकी हैं, षडयंत्र घिनौने।
भरे पड़े हैं देशद्रोहियों से सब कोने।
कौन रहा है भड़का, इन सब एन.जी.ओ. को–
जो विकास की राह चले हैं, काँटे बोने।

396

अभी कई चुनौतियाँ, आएँगी प्रत्यक्ष।
किन्तु हमें झुकना नहीं, है अवरोध समक्ष।
मिले सुशासन देश को, सुख-सुविधा सम्पन्न-
दाँतों तले दबाएगा, उँगली तभी विपक्ष।

397

रेल किराया बढ़े या हो हिन्दी की बात।
उचित-अनुचित बात पर, है विपक्ष की घात।
किन्तु देशहित कार्य सब, मोदी करें तुरन्त-
जिसकी नीयत साफ है, उसे ना होगी मात।

398

हिन्दी का उपयोग हो, उन्हें ना आया रास।
जो स्वराष्ट्र भाषा नहीं, अँग्रेजी के दास।
मानस पुत्रों ने किया, मैकाले का 'रोध'-
हिन्दी हित में हो रहे, हिन्दू स्वयं उदास।

399

देशभक्त वह नहीं जो, हिन्दी करे विरोध।
वह लज्जा के पात्र हैं, क्यों करना है क्रोध।
अस्सी प्रतिशत देश के, वासी हिन्दी भक्त-
मिलकर तोड़े राह के, सारे ही अवरोध।

400

साँईं-शंकराचार्य का है, यह व्यर्थ विवाद।
श्रद्धा पर या भक्ति पर, क्यों करना संवाद।
अपना मन है किसी को, पूजें कह भगवान-
अपनी-अपनी आस्था, अपने हैं अपवाद।

401

साँईं-शंकराचार्य पर, संयम राखें भक्त।
धर्म गुरु के कथन पर, हम क्यों होएँ विभक्त।
पुतला फूँकें या भिड़े, क्यों आपस में तात–
प्रभु कण-कण में बसें हैं, पूजे हों आसक्त।

402

महँगाई कुछ बढ़ गई, एक माह में मित्र।
आने वाले समय में, क्या बदलेगा चित्र।
शायद रखना पड़ेगा, अभी धैर्य कुछ और–
तभी साफ हो पाएगा, सत्तासीन चरित्र।

403

सड़े-गले थे, स्लीपर, जर्जर टूटी रेल।
इसीलिए तो हो गई, एक्सप्रेस ट्रेन डिरेल।
अभी जाँच है जरूरी, दुर्घटना की मित्र–
था यह केवल हादसा, या साजिश का खेल।

404

यौन प्रशिक्षण बंद अब, तुरत करे सरकार।
इसके कारण बढ रहे, बलात्कार व्यभिचार।
अपनी भारत संस्कृति, पुनः प्रभावी होय–
वासना-भूखे भेड़ियों, से क्या डरना यार।

405

नक्सलियों से अब नहीं, हो कोई भी बात।
उनकी हर एक घात पर, अब कीजे प्रतिघात।
वह सब जंगल फूँक दो, जहाँ छिपे यह दुष्ट–
कहो फौज से हर तरह, हो इन पर आघात।

406

हर सांसद लगवाए यदि, इक नलकूप तुरंत।
वर्षा हो ना हो मगर, हो सूखे का अंत।
सांसद निधि का इस तरह, करें उचित उपयोग–
ताल–बाबली बनाएँ, पाएँ पुण्य अनंत।

407

शक्तिमान भारत बने, कीजै ऐसा यत्न।
शत्रु हमले का कभी, कर ना सके प्रयत्न।
सुपर–डुपर पावर बने, अपना भारत देश–
कोहिनूर है जिस तरह, सब रत्नों में रत्न।

408

मिले सहोदर भरत सा, मैं बन जाऊँ राम।
ईश्वर मुझको दीजिए, ऐसा वर निष्काम।
मैं कोई छल ना करूँ, भाई न कपटी होय–
हावी हम पर हो नहीं, लोभ, मोह या काम।

409

महँगाई भी घटेगी, रखिये दृढ़ विश्वास।
एक दिवस होंगे सफल, मोदी सुखद प्रयास।
परिवर्तन में समय की, होती है दरकार–
जादू की कोई छड़ी, नहीं किसी के पास।

410

नरसें लौटीं सकुशल, मोदी सफल प्रयास।
शेष अपहृत आएँगे, ऐसा है विश्वास।
मोदी जी की यह हुई, पहली-पहली जीत–
हल होंगी सब समस्या, मन में रखिये आस।

411

रेल बजट पर हुआ है, फिर हंगामा तात।
संसद में फिर से चले, मुक्के-थप्पड़-लात।
जैसे नोचें बिल्लियाँ, खम्भे को खिसियाय-
ऐसे ही बन गए हैं, संसद में हालात।

412

बजट आ गया पर नहीं, सूखे का उपचार।
कुएँ खुदे तालाब पर, किया नहीं सुविचार।
बन्द पड़े उद्योग हित, किया ना प्राविधान-
अगर चलें तो मिल सके, लाखों को रूजगार।

413

सीधा-सीधा बजट है, ना शह, ना कुछ मात।
राहत की भी घोषणा, की है इसमें तात।
रूचिकर यह उनको नहीं, जिसका नाम विपक्ष-
आदत के अनुरूप ही, करता उलटी बात।

414

हिन्दू-मुस्लिम द्वेष का, फिर जागा है नाग।
उड़े मुरादाबाद में, फिर मृत्यु के काग।
ढूँढो किसकी वजह से, भड़क उठी यह आग-
किसकी शह पर पुलिस भी, खेल रही है फाग।

415

अहंकार भी नहीं रहेगा, अधिक समय तक।
नहीं उपेक्षा कोई सहेगा, अधिक समय तक।
जनता की तुमने यदि, अनदेखी कर दी तो-
यह सिंहासन नहीं रहेगा, अधिक समय तक।

416

अगर हमला कभी हो तो, करो प्रतिकार भी उसका।
लगे यदि आग सावन में, करो उपचार भी उसका।
अब अत्याचार सहने की, सदा को त्याग दो आदत–
बदल जाएगा खुद–द–खुद कुटिल व्यवहार भी उसका।

417

भाजपा भी चल पड़ी है, काँग्रेस की चाल।
सांसद जो ना बन सके, बने राज्यश्रीपाल।
सत्ता को दिखती नहीं, जनता में प्रतिभाएँ–
हारे–थके रखेंगे क्या, पद का मान मराल।

418

पाँच बरस के सांसद, बरस विधायक तीन।
राजभवन में बजेगी, श्रीनाईक की बीन।
प्रजातंत्र क्या है यही, मोदी जरा बताएँ–
मरते दम तक क्यों रहे, कोई सत्तासीन।

419

अल्पसंख्यक को मिल रही, सुविधाएँ भरपूर।
बहुसंख्यक इस देश में, सुविधाओं से दूर।
जड़ है सभी फसाद की, भेदभाव की नीति–
यह दीवारें काँच की, कैसे होंगी चूर।

420

पाक और चीन दोनों से, हम मैत्री का दान न माँगे।
निर्बल बता स्वयं को अपने, भारत का सम्मान न माँगे।
सामरिक शक्ति श्रेष्ठ बनाए, इतने श्रेष्ठ बने हम भू पर–
शत्रु स्वयं झुकाकर सर को, मैत्री करने आएँ आगे।

421

सबल और निर्बल दोनों में, मैत्री अब तक हुई नहीं है।
दोनों पक्ष सबल हों तब ही मित्र मैत्री सफल हुई है।
सदा मित्रता, रिश्तेदारी बराबरी में दृढ़ होती है–
वरना निर्बल और सबल में, कहाँ मैत्री सबल हुई है।

422

मलेशियायी विमान को मारा किसने तीर।
मारे लगभग तीन सौ कौन रहा बेपीर।
निर्दोषों का कौन था, भू पर शत्रु हितेश–
बिना शत्रुता रख दिया, जिसने जीवन चीर।

423

फेंका सीमा पार से, फिर उसने बारूद।
लड़ने को उकसा रहा, हमें पाक मरदूद।
जाने क्यों उसको नहीं, सुख-शांति स्वीकार–
हारा है हर युद्ध पर, पहले करता कूद।

424

सामरिक शक्ति अगर बढ़ जाए, शत्रु करने लगेगा भक्ति।
आतंकी हमले घुसपैठों से, तब होगी उसे विरक्ति।
शत्रु जब तक समझ रहा है, भारत को कमजोर स्वयं से–
तब तक सीमा उल्लंघन पर, नित्य दिखाता है आसक्ति।

425

बहु बनी तो खो गई बेटी की पहचान।
सानिया मिर्जा क्यों बने, एम्बेसेडर श्रीमान।
ब्रांड एम्बेसेडर गर बनी, पाकिस्तानी बहू–
होगा भारत मात का, बहुत बड़ा अपमान।

426

देश धर्म की रही है, पति से ही पहचान।
पति से होता है सदा, पत्नी का सम्मान।
विवाह बाद पुत्री नहीं, रखती है अधिकार–
हिन्दुस्तानी ना रही, सानिया अब श्रीमान।

427

यूपी नहीं बँटा तो सारा जल जाएगा।
आज नहीं जो हुआ, वही हो कल जाएगा।
मोदी जी यू.पी. बँटवारा करो सुनिश्चित–
वरना पाया जनादेश, निष्फल जाएगा।

428

अँग्रेजी को हटाकर, हो हिन्दी अनिवार्य।
प्रशासनिक सेवाओं में, हो हिन्दी में कार्य।
अँग्रेजी की पैरवी, देशद्रोह की बात–
देशभक्त को नहीं हो, अँग्रेजी स्वीकार्य।

429

जिसने प्रजातंत्र को लूटा, उसको आज प्रजा ने लूटा।
चली हवाएँ तुन्द, कि उखड़ा स,ब,का, गहरा खूँटा।
अधिक समय तक मुश्किल है,जनता को मूर्ख बनाना–
जनता ही पकड़ा देती है, कर में दर्पण टूटा।

430

न्यायाधीशों पर लगा, शोषण का आरोप।
जाँच जरूरी सत्य है, दिया या झूठा थोप।
अगर सही है तो मिले, श्री को दण्ड कठोर–
चाहें वह बन्दूक हो, या हो न्यायिक तोप।

431

मोदी ने नेपाल में, किया रूद्र अभिषेक।
था प्रसन्न इस शुभ घड़ी, नेपाली प्रत्येक।
दृढ़ होंगे सम्बन्ध अब, दोनों देशों बीच–
चीनी हस्तक्षेप की, नहीं चलेगी छेक।

432

तुष्टिकरण के झण्डे, जिस दिन झुक जाएँगे।
हिन्दु-मुस्लिम झगड़े-दंगे रूक जाएँगे।
एक बार तो करना होगा कड़ा हृदय को–
व्यभिचारी, गुण्डे, दंगाई लुक जाएँगे।

433

बहुत हौंसले बढ़ गए, गुण्डों के श्रीमान।
इसका कारण आप हैं, और न कोई जान।
तुम्हें मारते रहेंगे, दंगाई हर रोज–
जब तक तुम ना सामना, करोगे सीना तान।

434

दोष नहीं है रेखा का जो, कभी नहीं संसद में आई।
दोषी सचिन नहीं संसद में, कभी नहीं जो पड़े दिखाई।
दोषी है वह जिसने दोनों, राज्य सभा सदस्य बनाए–
आवश्यक है इन दोनों की, सदस्यता अब जाए मिटाई।

435

ठीक किया अमेरिका ने जो, बगदादी पर की बमबारी।
उसे मारना ही जायज है, जो कोई हो अत्याचारी।
आतंकी जो भी व्यक्ति हो, उससे हो हमदर्दी कैसी–
नष्ट करें आतंकवाद को, हम सबकी है जिम्मेदारी।

436

जब आजादी मिली थी, तब था सपना नेक।
जनता की सरकार में साझी है प्रत्येक।
किन्तु उपेक्षित आज तक, रहा प्रबुद्ध समाज–
दस–दस बार के सांसद, रहे रोटियाँ सेक।

437

अरबपति थे सचिन तो, पाया भारत रत्न।
विश्व विजेता ध्यानचन्द के, रहे उपेक्षित यत्न।
अब मोदी के राज में, शायद हो इंसाफ–
व्यर्थ नहीं जाएँ, कचित बुद्धिमान प्रयत्न।

438

कल बिहार में गठबन्धन का, राजकीय जो खेल हुआ।
सब कहते हैं, मेल हुआ तो है लेकिन बेमेल हुआ।
जाने कब लड़ भिड़ कर दोनों हो जाएँगे अलग–अलग–
संशय में है जनता, शायद देगी इनको नहीं दुआ।

439

प्रथम बार पन्द्रह अगस्त को, कोई शेर दहाड़ा है।
जनता से मन की बातें कीं, पढ़ा न लिखा पहाड़ा है।
बुलेटप्रूफ के बिना नमो ने, लाल किले की बुर्जी से–
आतंकी हमले के डर को, सीना तान पछाड़ा है।

440

सभी सांसदों को पी.एम. ने, प्रथम बार निर्देश दिए।
भारत का उत्थान किस तरह होगा, यह उपदेश दिए।
कोरे आश्वासन के बदले, ठोस गिनाए कार्य सभी–
पन्द्रह अगस्त को लाल किले से, नमो ने शुभ सन्देश दिए।

441

साठ बरस के बाद देश अब, सही हाथ में आया।
राष्ट्रभक्त ने भगवा पगड़ी, में झण्डा फहराया।
मनमोहन सिंह की पगड़ी पर, लालू कभी ना बोले–
मोदी की भगवा पगड़ी पर, नया तराना गाया।

442

छेड़छाड़ करने वालो से, हो बर्ताव वही।
श्रीकृष्ण ने शठे शाठयम् की जो बात कही।
गुण्डों के डर से यदि बैठे तो मारे जाओगे–
अब वो ही करना होगा जो, बोले वक्त सही।

443

छेड़छाड़-झगड़े-दंगे पर, बने सख्त कानून।
उसकी चर्बी छँटे, घूमते जो बन अफलातून।
हिन्दू हो, मुस्लिम हो या हो कोई भी समुदाय–
जो भी हरकत करे, उतारा उसका जाय जनून।

444

झगड़े-दंगे-छेड़छाड़ का है निश्चित समुदाय।
इनका कोई सम्प्रदाय या, धर्म या मजहब नाय।
तुष्टिकरण नहीं छोड़ा तो, यह भी नहीं रूकेंगे–
करो चीन की तरह नष्ट, विद्रोही सफल उपाय।

445

कैसे रोकोगे संसद में, दागी की एन्ट्री को।
जबकि इसकी आदत सी पड़ गई मित्र कन्ट्री को।
अब तक तो यह रहा है, जब तक किया नहीं घोटाला–
नींद नहीं आती थी, सांसद हों, चाहें मंत्री को।

446

बीजेपी में भी हावी है, सोच पुरानी अब तक।
जनता को सत्ता में भागीदारी, मिली न अब तक।
बना दिए हैं राज्यपाल, जो दागी थे या बागी–
देशभक्त को नहीं मिली, पहचान जरा भी अब तक।

447

कल तक हमको जला रहा था,आज जल रहा पाकिस्तान।
यही रहे हालात अगर तो, शीघ्र बनेगा कब्रिस्तान।
जो जैसा बोएगा वैसा, काटेगा यह सिद्ध हुआ–
पर हमको सचेत रहना है, दोस्त नहीं अपना इमरान।

448

देश बढ़ेगा कल बुलेट रफ्तारी से विश्वास करो।
सब आश्वासन पूरे होंगे, धीरज धर कर आस करो।
घोटाले अब कभी न होंगे, महँगाई भी कम होगी–
प्रसव समय से होता है, नर हो मत हृदय निरास करो।

449

स्वर्ग उनको मिलेगा जो नेक हैं।
भलाई में जो लगे प्रत्येक हैं।
उन्हें दोजख ही मिलेगी दोस्तो–
दुष्ट हत्यारे हैं या दिलफेंक हैं।

450

पत्थर अब अलगावादियों, पर जन्नत के बीच उठे।
हाथ सभी यासीन मलिक को, देने को बद्दुआ उठे।
अपनी सेना ने जन्नत में, देवदूत का कार्य किया–
इन्सानियत के नाते उसको, देने को अब दुआ उठे।

451

काश्मीर जब डूब रहा था, कहाँ छुप गए दोमुँहे।
जो मोदी को बुरा बतातीं, थी वह कहाँ गई रूहें।
जब पानी जन्नत में आया, सभी दोजखी भाग गए–
जैसे जब जहाज डूबे तो, प्रथम भागते हैं चूहे।

452

लगे हुए हैं आतंकी, तैयारी में विस्फोटों की।
लूट-पाट में भी शामिल हैं, कमी नहीं है नोटों की।
नाम बदल कर बाँध कलावा, हिन्दू बनकर घूम रहे–
सावधान यदि नहीं रहे हम, मौत मिलेगी चोटों की।

453

राजपूत सेना लड़ती थी, जय होती थी अकबर की।
हिन्दू से हिन्दू लड़वाया, नीति यही थी डायर की।
आपस की हम फूट के कारण, बरसों रहे गुलाम हितेश–
अब तो चेतो तुम्हें कसम है, राम–कृष्ण की हलधर की।

454

जनता को यदि भूलोगे तो, जनता तुम्हें भुला देगी।
अहंकार यदि किया अर्श पर, तुम्हें फर्श पर ला देगी।
बुलेट ट्रेन– अंतरिक्ष यान, महँगाई के पर्याय नहीं–
वादे बर्फ बने तो, भूखी जनता उन्हें गला देगी।

455

सच्चा मुसलमान कभी भी, नहीं सोचता देशद्रोह की।
जो अब्दुल हमीद होता है, रक्षा करता मातृभूम की।
मोदी की बातों पर 'सबका', कुटिल टिप्पणी करती ही है–
किन्तु इससे नहीं बदलती, विश्वासी भावना हृदय की।

456

आतंकी को बचा रहे जो, उन्हें नहीं अपना माने।
जो उनको पनाह देते हैं, उनके चेहरे पहचाने।
मेरे दोस्त मुसलमाँ सच्चे, कहा खो गए हैं सारे–
जो नफरत से नहीं, प्यार से रहे निभाते यारानें।

457

यह सच है हर एक मुसलमाँ, आतंकी के साथ नहीं।
सच्चे देशभक्त के आतंकी से, मिलते हाथ नहीं।
लेकिन उन्हें शरण देता है, जो कोई तो ऐसा है–
ऐसे व्यक्ति को दण्डित करना, कोई अपराध नहीं।

458

देश बढ़ रहा है विकास की, देखो सीढ़ी-दर-सीढ़ी।
अच्छे दिन आ रहे देश में, मित्रों सीढ़ी-दर-सीढ़ी।
महँगाई भी कम होगी, फिर होंगे अच्छे काम कई–
मूर्ख चाहते हैं जादू हो, ना हो सीढ़ी-दर-सीढ़ी।

459

मोदी की अमरीका यात्रा, सफल और शुभ होगी सच है।
जन-विकास की सभी योजना, सफल और शुभ होंगी सच है।
कोई कुछ भी कहे—या करे, व्यर्थ टिप्पणी श्री मोदी पर–
पर मोदी की सभी कल्पना, सफल और शुभ होगी सच है।

460

बदला है नेतृत्व देश का, बदल जाएगा भाग्य देश का।
बदलेगा संगीत देश का, बदल जाएगा राग देश का।
मोदी अमरीका यात्रा से नए कीर्तिमान बनेंगे–
पुनः विश्व में फिर बिखरेगा, चंदन युक्त पराग देश का।

461

महाराष्ट्र में टूट गए हैं, सारे के सारे गठबन्धन।
देखो अब माथे पर किसके, लगता है सत्ता का चन्दन।
असमंजस में महाराष्ट्र है, जीत न जाएँ दागी–बागी–
जो ऊपर से तो उजले हैं, काले पर जिनके अंतर्मन।

462

भारतीयता जाग्रत की, मोदी ने भारत के अन्दर।
डर बैठाया भारत के हर शत्रु के मन के अन्दर।
ड्रैगन हो या पाक देश हो, दस–दस बारी सोचेगा–
अतिक्रमण करने से पहले, भारत सीमा के अन्दर।

463

अपराधी पर कार्यवाही, करना कोई अपराध नहीं।
जेल जाएँ दागी नेतागण, कोई और उपाय नहीं।
किया करोड़ों का घोटाला, ऐसे पूर्व मुख्यमंत्री पर–
पच्चीस लाख हुआ जुर्माना, यह तो कोई न्याय नहीं।

464

आतंकी के मददगार के, खड़े समर्थन में जितने हैं।
उनको भी कम नहीं समझना,यह भी गद्दारी फितने हैं।
सावधान भी रहना होगा, उन पर नजरें रखनी होंगी–
आतंकी को प्रश्रय देने वाले, पकड़ जाएँ कितने हैं।

465

बस चुनाव में खोलते नेता आँख व कान,
मतदाता को इस समय देते है पहचान।
जब तक मत मिलता नहीं करते है सत्कार–
मत लेने के बाद में बन जाते अंजान।

466

सीमाओं पर पाकिस्तानी, गोलाबारी जारी है।
और देश के अन्दर भी, दंगों की मारा-मारी है।
घर के अन्दर जनता को भी, सावधान रहना होगा-
सीमा पर अपनी सेनाओं की, पूरी तैयारी है।

467

सीमाओं पर पाकिस्तानी, कुत्ते भौंक रहे हैं।
मूर्ख स्वयं को मृत्यु की, भट्टी में झोंक रहे हैं।
कुत्तों की आदत है, भौंक-भौंक कर सिर्फ डराना-
जब तक सोया सिंह, तभी तक तालें ठोक रहे हैं।

468

केवल अपनी लापरवाही, से ही बहुसंख्यक मरता है।
अल्पसंख्यक अपने ही घर से, पूर्ण सुरक्षित चलता है।
एक अहिंसा का पूजक है, एक हलाल प्रशिक्षित है-
शक्ति संतुलन ना होने से, दंगा भड़का करता है।

469

सीमा पर सेना का साहस, वन्दनीय है, अभिनन्दन है।
शत्रु का मुँह तोड़ रहे जो, वीर जवानों का वन्दन है।
डटे हुए हैं सीमाओं पर, जान हथेली पर लेकर जो-
विजयश्री का उनके माथे, पर अर्पित रोली चन्दन है।

470

स्मृति चौधरी चरण सिंह का, भवन बने, भई खूब बने।
ऊँचे गुम्बद और मीनारों वाला, यह मन्सूब बने।
दिल्ली में स्मृति भवन को, लेकर क्यों आन्दोलन हो-
या तो भवन बने यू.पी. में, या फिर जन्म स्थान बने।

471

मोदी की फिर जीत हुई है, बन्द हुई गोलीबारी।
कड़ा जवाब दिया सेना ने, शांत हुआ अत्याचारी।
अब दुस्साहस नहीं करेगा, समझ गया है पाक मियाँ–
अगर दोबारा छेड़ेगा तो, उसकी होगी बिस्मारी।

472

हर मोर्चे पर जीत रहा है, नमो–नमो की जय भैया।
पूर्ण विश्व में गूँज रही है, नमो–नमो की जय भैया।
लेकिन फिर भी कुछ नेतागण, अमर्यादित बोल रहे–
जनता लेकिन समझ गई है, नमो–नमो की जय भैया।

473

हरियाणा में महाराष्ट्र में, जीत कमल की ही होगी।
नहीं चलेगा कोई सिक्का, जीत कमल की ही होगी।
जनता ने पहचान लिए हैं, घोटाला करने वाले–
अब दबंग भी सभी समझ लें, जीत कमल की ही होगी।

474

सीमाओं पर शत्रु हो या, घर में हो गद्दार कहीं।
आतंकी, नक्सली, उग्रवादी, बच सकते आज नहीं।
भारत में रहना है तो, बन देशभक्त रहना होगा–
देशद्रोह करने वालो को, दण्ड मिलेगा तुरत यहीं।

475

नहीं है हर मुस्लिम आतंकी, यह सच है विश्वास कीजिए।
लेकिन जो भी आतंकी है, उसका पूर्ण विनाश कीजिए।
त्वरित न्याय हो, दोष सिद्ध हो, फाँसी का हो दण्ड सुनिश्चित–
तुष्टिकरण की बात नहीं हो, प्राविधान यह खास कीजिए।

476

मंगलग्रह पर पहुँच गया है, अपना मंगलयान।
भारत को फिर मिली विश्व में, एक नई पहचान।
आज सुशासन नाप रहा है, गगन और भूलोक–
इतने बढ़े हौंसले अपने, छोटी पड़ी उड़ान।

477

आतंकी को जो पनाह देते हैं, उनको पकड़ो।
जो मेहमाननवाजी करते, उनकी, उनको रगड़ो।
शीघ्र मुकदमा निस्तारित हो, न्याय अधूरा ना हो–
लेकिन सजा सिर्फ फाँसी हो, जेलों में क्यों जकड़ो।

478

पुनः मिलेगा पूर्ण बहुमत, जन-जन की आशा है।
जीत सत्य की होगी, अंतर्मन की अभिलाषा है।
बीजेपी सरकार बनेगी, महाराष्ट्र हरियाणा में–
हिन्दू-मुस्लिम, सिख-ईसाई, सबको प्रत्याशा है।

479

सत्यमेव जयते की जय हो, अब श्रमेव जयते की जय हो।
नमो-नमो का उच्चारण हो, नवभारत का अभ्युदय हो।
जो जितना श्रम करे अधिक, वह उतना ही अब हो लाभान्वित–
भूखा कोई श्रमिक न सोए, श्रमजीवी का भाग्य उदय हो।

480

आज चतुर्दिक कमल खिला है, कामयाब है नमो-नमो।
महाराष्ट्र में, हरियाणा में, कामयाब है नमो-नमो।
महँगाई गिर रही निरन्तर, पस्त हुआ है शत्रु भी–
आतंकी भी मिट जाएँगे, कामयाब है नमो-नमो।

481

सावधान इस दीवाली पर, घोर मिलावट का है रेला।
मावा नकली, घी भी नकली, नकली दूध-दही भी पेला।
बहुत जाँचना और परखना, दुकानदार को मीठाई को-
ऐसा ना हो हर्षोत्सव में, कलुषित हो दीवाली मेला।

482

राज ठाकरे सत्य जान लें, धौंस धड़प्पा नहीं चलेगा।
अमन-चैन को खोने वाला, धूम-धड़क्का नहीं चलेगा।
राजनीति में आना है तो, पूर्ण नम्रता वांछनीय है-
अहंकार जनता के आगे, अकड़ अड़प्पा नहीं चलेगा।

483

संविधान में संशोधन हो, वंशवाद पर रोक लगे।
राजनीति परिवारिक ना हो, इस पर पूरी टोक लगे।
समझ रहे हैं जो संसद को, एक विरासत और रियासत-
अब उनके भी नाम के आगे, कलम काट की नोक लगे।

484

जेल में बन्दी आतंकी के, शीघ्र मुकदमे हों निस्तारित।
न्याय मिले निष्पक्ष सभी को, दण्डादेश उचित हो पारित।
जिन पर हो आरोप सिद्ध-ना, उनको रिहा किया जाए-
और सिद्ध आरोप जहाँ हो, प्राणदण्ड हो निष्पादित।

485

कल को इतिहास जब, खुद को दोहराएगा।
सीमा पर सुरक्षा बल, दिए जगमगाएगा।
पहली बार सियाचिन, गया है कोई पी.एम.-
क्या भविष्य भी सैनिक, हौंसले बढ़ाएगा।

486

कालेधन पर क्या हुआ, खुली पिटारी नाय।
सभी विपक्षी दल रहे, इस पर शोर मचाय।
किस कारण खामोश है, मित्र नमो सरकार–
नाम खुलासा क्यों नहीं, करते मोदी भाय।

487

कालेधन पर हो रही, है जनता उद्विग्न।
नाम खुलासे में पड़ा, किस कारण है विघ्न।
कालिख पड़ेगी झेलनी, कालेधन पर मित्र–
यदि बाहर निकला नहीं, कालेधन का जिन्न।

488

पहले हुदहुद ने किया, काफी बहुत विनाश।
अब नीलोफर करेगा, सुख-शांति का नाश।
काश्मीर में जल-प्रलय, सागर में तूफान–
प्रकृति इतनी क्रुद्ध क्यों, है यह करो तलाश।

489

राजसभा सदस्य या महामहिम श्रीमान।
मनमर्जी से कर लिए, भरती सब सुल्तान।
सत्ता में शामिल करो, भाग्यवान कुछ लोग–
तब ही होगा देश का, थोड़ा कुछ कल्यान।

490

महामहिम नाईक बने, राज्यपाल सुखधाम।
समझ लिया फिर स्वयं को दशरथ नन्दन राम।
चाटुकारिता श्रेष्ठ है, भूले ना यह मन्त्र–
सपा के मुखिया को दिया, हनुमान का नाम।

491

अन्तरिक्ष में जीत गए हम, पर धरती पर हार गए।
भूख, अशिक्षा और चिकित्सा, बन सारे व्यापार गए।
आतंकी नक्सलिया हमले, लव जेहादी, लव तेजाबी–
लूट-खसोट और घोटाले, बन जीवन आधार गए।

492

कालेधन की लिस्ट आ गई, कालाधन भी आएगा।
बहुत समय से लटका मसला, और लटक ना पाएगा।
सत्ता का मुख उजला होगा, कुछ चेहरे काले होंगे–
अपने भारत का भविष्य भी, अब उज्जवल हो जाएगा।

493

तथाकथित शाही इमाम ने, क्यों शरीफ को न्यौता जानो।
अहंकार में मर्यादा को, भूल गया मानो ना मानो।
चिन्तन नहीं कार्यवाही हो, देशद्रोह का चले मुकदमा–
बेगानों को बुला रहा जो, वह अपना कब है पहचानो।

494

श्री पन्थेर बच गए कैसे, कोली को ही फाँसी क्यों।
पुनः गहन गम्भीर जाँच हो, अब ना इसमें हाँसी हो।
कोली श्री पन्थेर साथ, रहते थे जुर्म हुए कैसे–
दूध का दूध, पानी का पानी, में हो चूक जरा भी क्यों।

495

कैसे मिली जमानत उसको, कैसे भाग गया एण्डरसन।
जिसके कारण गैस त्रासदी में, मिट गए सहस्रों जीवन।
जाँच जरूरी है इस सबकी, दोषी कैसे मुक्त हो गया–
कैसे विफल हुईं सरकारें, कर न सकी उसका प्रत्यर्पण।

496

पुण्यतिथि लौह महिला की, साथ जयन्ती भी पटेल की।
मोदी जी ने शुरू करी है बात एकता और मेल की।
पर अपने कुछ नेताओं को, दौड़ एकता बुरी लगी है–
जिनको रास न आई एकता, उन्हें जरूरत है नकेल की।

497

प्रधानमंत्री को देश में दंगाई बतलाय।
खुला खरा अपमान है, यह भारत का भाय।
राज्यपाल को चाहिए, करे तुरत बर्खास्त–
ऐसा व्यक्ति प्रान्त में, मंत्री लायक नाय।

498

चोर-चोर मौसेरे भाई, सिद्ध हुआ किरदारों में।
मोदी का विरोध करना है, कसम उठी है यारों में।
काम भले ही अच्छा हो पर, बोलेंगे विपरीत सदा–
जनता जान रही है छलिया, छुपे हुए हैं प्यारों में।

499

अब झाँसे में नहीं आएगी, भारत की जनता प्यारे।
महा-महा मोर्चा बना लें, चाहें कितने भी सारे।
इन सबका चरित्र जग-जाहिर, है कुछ भी तो छिपा नहीं–
कहाँ छिपा पाएँगे अपने, घोटालों को बेचारे।

500

महा मोर्चा बना रहे हैं, सारे नेता बौराए।
मोदी की जनहित शैली से सारे मन में घबराए।
नहीं देश की इनको चिन्ता, जनता की परवाह नहीं–
सत्ता निकल रही हाथों से, इसीलिए हैं खिसियाए।

501

बन बैठें है नमो विरोधी, हारे हुए सिपाही सारे।
मिलकर बैठे सोच रहे हैं, वह क्यों जीते हम क्यों हारे।
नहीं देश की इनको चिन्ता, जनता के हमदर्द नहीं हैं–
मोदी का घिराव कैसे हो, सोच रहे यह बेचारे।

502

मोदी के अच्छे कामों को, पचा नहीं पाए नेताजी।
इसीलिए तो महामोर्चा, गठन में ले आए नेताजी।
घोटालों में फँसे हुए कुछ,जाँच से बचना चाह रहे कुछ–
ईमानदार मोदी शासन से, क्या बच पाएँगे नेताजी।

503

धीरे-धीरे महँगाई भी नीचे आती दीख रही।
जनता भी अब देश, हिताहित की बातों को सीख रही।
जाग रहा है देश, सभी को देगा अब मुँह तोड़ जवाब–
दब जाएगी स्वतः उठी जो, महँगाई की चीख रही।

504

समझ स्वयं को रहे शिवाजी, शिव सेना के सभी विधायक।
जनादेश भी नहीं मिला पर, कहते हमें बना दो नायक।
महाराष्ट्र हित नहीं सोचते, केवल कुर्सी इन्हें चाहिए-
सत्ता के भूखे हैं सारे, भले न हों सत्ता के लायक।

505

मोदी है चाणक्य देश का, विदुर देश का, कृष्ण देश का।
मोदी की ही अगुवाई में, सुलझेगा हर प्रश्न देश का।
विश्व विजेता बनेगा भारत, मोदी श्री विश्व के नेता–
सच्ची आजादी का अपनी, तभी मनेगा जश्न देश का।

506

मोदी को जो गलत बताते हैं, वो ही कितने सच्चे हैं।
जनता जान चुकी है झूठे, कौन और कौन सच्चे हैं।
मियाँ मिट्ठू बन रहे स्वयं ही, अपने मुँह से बन्दर तीन–
खिसियाये हैं जो जनता को, देते आए गच्चे हैं।

507

देश नहीं विदेशों में भी, मोदी जी की जय सुनकर।
बुरा हाल है सबका के, कुछ नेताओं का रो-रोकर।
बार-बार गुजरात के दंगों, का ही रोना रोते हैं–
भूल गए सिक्खों का कत्ले-आम हुआ जो सड़कों पर।

508

काँग्रेस ने किया है पी.एम. का अपमान।
समझ रही है कर दिया, कोई कार्य महान।
जनता की पर आँख में, कर ली छवि खराब–
अपने हाथों कर रही, है अपना नुकसान।

509

आई थी जब जलप्रलय, किसने किया बचाव।
मित्र वही कर सकेगा, सारे दूर अभाव।
सोए थे जब श्री उमर, पीडीपी के लोग–
सेना भेजी साथ में, उसने भेजी नाव।

510

जारी है बंगाल में, बंगलादेशी पैठ।
ममता सबकुछ जानकर, गई हैं क्यों चुप बैठ।
अबकी बार चुनाव में, खिले कमल का फूल–
असम और बंगाल में, तभी रूके घुसपैठ।

511

कुछ आश्रम में पल रहे, हैं अनगिनती नाग।
कहीं-कहीं दुष्कृत्य के, भी खिलते हैं फाग।
रामपाल की तरह हो, हर आश्रम की जाँच–
लग सकती है अन्यथा, फिर वैसी ही आग।

512

यादव सिंह पकड़ा गया, और कई हैं शेष।
लूट रहे जो देश को, धर साधु का वेश।
संरक्षण में रहा है, जिनके अब तक सिंह–
नाप-तौल उन सभी की, कहता करो हितेश।

513

हम सब वंशज राम के, कहने पर संग्राम।
शायद रहा विपक्ष को, और नहीं कुछ काम।
राम कृपा से देश में, खिला कमल का फूल–
पर कुछ राम विरोध कर, हुए आज गुमनाम।

514

राजनीति में छिपे हैं, कई क्रूर गद्दार।
नक्सल हमले में तभी, हार रही सरकार।
उस दिन ही मिट जाएगा, देश से नक्सलवाद–
जिस दिन पकड़े जाएँगे, नक्सल पैरोकार।

515

रामनाम पर हुआ है, संसद में संग्राम।
क्या घोषित अपराध है, अगर कहें श्रीराम।
हम हैं वंशज राम के, इसमें क्या है झूंठ–
केवल मात्र विरोध ही, है विपक्ष का काम।

516

बलात्कार क्यों बढ़ रहे, इस पर करो विचार।
न्याय प्रक्रिया माँगती, इसमें तुरत सुधार।
तीन माह में फैसला, बलात्कार का होय-
प्रथम जमानत ना मिले, रहे न दण्ड उधार।

517

लड़की सुधरें स्वयं भी, शाम ढले घर आयँ।
आधी-आधी रात को, डिनर न खाने जायँ।
कामान्धों की बात क्या, ऋषि-मुनि हुए अनेक-
देख अकेली कामिनी, मित्र सम्हल न पायँ।

518

लोकतंत्र घायल हुआ टिकट बिक रहे मित्र
राजनीति का हो गया है वीभत्स चरित्र
लगती सुनकर अटपटी, यह सब बात [illegible]—
राज्यसभा सदस्यता, मूल्य करोड़ों मित्र

519

धर्मांतरण पर हो गया, फिर विपक्ष [illegible]
मुद्दा एक मिला उन्हें, हुई क्रोध में [illegible]
इस मसले पर केन्द्र को, रहे किसलिए कोस-
उत्तर ऐसे प्रश्न का, देगा सकल [illegible]

520

बार-बार हत्यारा कहना, पी.एम. को है [illegible]
कहने वाले के दिमाग की, जाँच जरूरी है [illegible]
या तो पागलखाने भेजो, या फिर भेजो जेल [illegible]
देशद्रोह का चले मुकदमा, ले संज्ञान तुरत [illegible]

521

राज्यपाल या निर्वाचन, आयोग बताए चुप क्यों है।
पी.एम. को हत्यारा कहने, वाला कुर्सी पर क्यों है।
हर गाली का दे जवाब जो, न्याय प्रक्रिया से पूरी–
भारत माँ ऐसे सपूत को, जन्म नहीं देती क्यों है।

522

मानवता का शत्रु है, तालीबान हैवान।
निर्दोषों को मारकर, हँसता है शैतान।
मासूमों के खून से, रंगे हैं जिसने हाथ–
करना होगा नष्ट अब, उसका नाम निशान।

523

राज बाप का समझ कर, भारत में कुछ लोग।
त्याग, तपस्या बिन रहे, थे सत्ता सुख भोग।
जनता जागी देर से, पर पहचानी ठीक–
अब इनको देगी नहीं, सत्ता का संयोग।

524

जबरन धर्मान्तरण नहीं हो, इसे प्रान्त सरकारें देखें।
ऐसा प्रश्न नहीं यह जिस पर, हम आकर संसद में चीखें।
संसद में गतिरोध, धर्म परिवर्तन पर दुर्भाग्यपूर्ण है–
आदि काल से यह जारी है, पढ़े ऐतिहासिक अभिलेखें।

525

संसद में गतिरोध किया है, पी.एम. का वक्तव्य चाहिए।
जितने भी कर्त्तव्य भ्रष्ट हैं, उन सबको कर्त्तव्य चाहिए।
राजनीति से परे, धर्म-परिवर्तन मुद्दा, सामाजिक है–
इस बिन्दु पर अब विपक्ष को, जिद क्यों है मन्तव्य चाहिए।

526

हमने कुछ भी नहीं किया है, और तुम्हें ना करने देंगे।
घोटाला करने ना दोगे, हम किस तरह जिएँगे।
कोई भी हो किसी भी दल का, नेता इनका एक लक्ष्य है–
यह जब तक हैं राजनीति में, जी भर जनता को लूटेंगे।

527

जनता से ठुकराए नेता, देखो बना रहे गठबन्धन।
खिसियाए से नोच रहे हैं, खम्भा मचा रहे हैं क्रन्दन।
जनता इनके साथ नहीं है, यह जनता के कभी नहीं थे–
लगा रहे हैं आपस में ही, एक–दूजे के माथे चन्दन।

528

संसद में गतिरोध हुआ क्यों, और हुआ है किसके कारण।
नहीं देशहित मन विपक्ष के, केवल झाड़ रहे हैं भाषण।
जनता करे घिराव सभी का, नजरबन्द कर दे घर अन्दर–
जिससे जनहित कार्य कर सके, मोदी की सत्ता का शासन।

529

तोगड़िया, अशोक सिंघल या श्री भागवत मोहन।
योगी, साध्वी और साक्षी खुद पर करे नियंत्रण।
भड़काऊ भाषण से मुस्लिम, काश्मीर में फिसले–
इन मुद्दों पर बढ़ सकती है, दिल्ली में भी उलझन।

530

बेगाना तो रोक नहीं सकता, मोदी के रथ को।
अपने ही शूलों से कहीं, न भर दें उसके पथ को।
भड़काऊ भाषण देने से, बचें सांसद-मंत्री–
पूरी करने दें पी.एम. को, देश विकास शपथ को।

531

संसद में गतिरोध रहा है, भड़काऊ मुद्दों पर।
काश्मीर में हारे कारण, भड़काऊ मुद्दों पर।
भड़काऊ मुद्दों पर अगर नियंत्रण नहीं हुआ तो–
दिल्ली भी ना खो दें हम, इन भड़काऊ मुद्दों पर।

532

साफ हो गया उज्ज्वल चेहरा, यू.पी. सत्ता जिन्दाबाद।
पुनः नया पत्ता खेला है, यू.पी. सत्ता जिन्दाबाद।
पी.के. टैक्स फ्री करने में, तुष्टिकरण किया भारी–
जन-भावना कुचलने वाली, यू.पी. सत्ता जिन्दाबाद।

533

नया वर्ष आरम्भ हो गया, उसकी शुभकामना विशेष।
सपनों की ऊँची उड़ान में, बाधा आए न कोई लेश।
शांति व्याप्त हो महाद्वीप में, गद्दारों से मुक्ति मिले–
सुख-सम्पदा मिले जन-जन को, देता शुभकामना हितेश।

534

जागरूक रहना ही होगा, वर्ना नापाकी नापाक।
कर सकते हैं कभी किसी भी, क्षण हम पर हमला बेबाक।
शत्रु तो केवल शत्रु है, उससे बातचीत कैसी–
बहरहाल हर सूरत उसके, मन्सूबे करने हैं खाक।

535

जहाँ योजनाएँ बनती थी, किन्तु नहीं थी कोई नीति।
और योजनाओं की भी, परिलक्षित थी नहीं सुनीति।
वह योजना आयोग आज से, नीति आयोग बनाया जिसने–
उस मोदी के चमत्कार से, योजनाओं में आई सुनीति।

536

भड़काऊ भाषण देने, पर भी कानून बनाओ।
जो मर्यादा लांघे उसको, तुरत जेल दिखलाओ।
सैंतालीस में काँग्रेस ने, पाकिस्तान बनाया–
आओ अब मिलकर भारत को, हिन्दू राष्ट्र बनाओ।

537

टिकट बेचने वाले नेताओं को, जनता जाने।
झूठमूठ के दलित, मसीहाओं को अब पहचाने।
भूखा दलित झोंपड़ी में रहकर रोता रहता है–
पेट भरे महलों में रहकर, यह रहते अनजाने।

538

गठबन्धन जो बना रहे थे, उनमें अब मतभेद हो गए।
विलय हो रहा था जिन दो का, उनमें केवल खेद हो गए।
जो जनता के भले नहीं हैं, स्वच्छ, साफ इतिहास नहीं है–
उन सबकी चुनाव से पहले ही, नौका में छेद हो गए।

539

आशाराम, नारायण सांईं आरोपों का सच हारे हैं।
एक-एक कर उनके सारे, ही गवाह गए मारे हैं।
ढीली-ढाली कार्यवाही से, सारे दोषी बच जाएँगे–
फिर से आश्रम जाग उठेंगे, उन सबके जो हत्यारे हैं।

540

बने विवेकानन्द नवयुवक, लौहपुरुष या हों पटेल से।
स्वार्थरहित और देश हिताहित, मुक्त गृहस्थी की नकेल से।
जो जाग्रत समाज को कर दें, जिनके मन में देशभक्ति हो–
रुचि हितेश नहीं हो जिनको, सत्ता के राजनीति खेल से।

541

तथाकथित हिन्दुत्व का, मुद्दा है बकवास।
रोकेगा यह देश का, बढ़ता हुआ विकास।
भड़काऊ जो दे रहे, भाषण आज हितेश–
जनता उनके प्रति है, पूरी तरह उदास।

542

गंगाजी में आ गई, कैसे लाश अनेक।
पूछ रहा सरकार से, प्रश्न यही प्रत्येक।
साजिश है या कहीं पर, हुआ है नर-संहार–
युद्ध गति से जाँच हो, हर बिन्दु पर नेक।

543

कमल खिले अब दिल्ली, यू.पी. में, बिहार में।
तभी आएगी देश दशा, जनहित सुधार में।
देशद्रोहियों का मुँह काला कर दे जनता–
शर्तों पर समझौता न हो तवी-धार में।

544

समझौते की रेल और बस तुरत रोक दो।
आतंकी जब मिले जहाँ भी वहीं ठोक दो।
सीमा पर घुसपैठ न करने पाए कोई–
गद्दारों के सीने में संगीन भोंक दो।

545

हो जाएँ अब सभी एक भारत के वासी।
आपस की यह फूट, खत्म हो सत्यानाशी।
इसके कारण वर्ष रहे परतन्त्र आठ सौ–
नव चेतना जगाओ, भूलो बातें बासी।

546

दिल्ली में दिखी किरण, अँधियारे के बीच।
लेकिन उसकी रहे हैं, टाँग विरोधी खींच।
फूट पड़े ना कमल की, पंखड़ियों में मित्र–
रामराज्य ना पलट दे, फिर कोई मारीच।

547

गैंगरेप पर क्यों नहीं, सरकारें गम्भीर।
तार–तार कर रहे हैं, कई दु:शासन चीर।
जब तक इस अपराध में, मिले ना मृत्युदण्ड–
तब तक कम होगी नहीं, गैंगरेप की पीर।

548

अतिथि जो भी आ रहे, उनका हो सत्कार।
बुद्धिमान सौंपे नहीं, अतिथि को घर–बार।
अनदेखे यदि कर दिए, अपने सभी बुजुर्ग–
तो ऐसा निर्णय कभी, होगा ना स्वीकार।

549

आतंकी घुस आए हैं, कुछ भी नहीं विचित्र।
अनगिनती गद्दार हैं, अपने घर में मित्र।
अब कसाब की तरह से, करे ना ड्रामा देश–
पकड़ो मत आतंकिया, मिटा दो जीवन चित्र।

550

बदलो अपनी नीतियाँ, हुई अभी ना अबेर।
आतंकी जब–जब मिलें, करों वहीं पर ढेर।
शत्रु को क्यों जेल में, रख कर हो सत्कार–
चटपट काम तमाम हो, लगे ना इसमें देर।

551

पृथ्वीराज की भूल को, दोहराओ मत आज।
क्षमा कर दिया शत्रु को, खोया तख्तोताज।
गौरी के ही अंश हैं, आतंकिया हितेश–
इनके जीवन दान से, होय कोढ़ में खाज।

552

अतिथि की हो सुरक्षा, सभी तरह से पूर्ण।
इसका जो सोचे अहित, उसे बना दो चूर्ण।
शत्रु से आदर्श का, करो नहीं व्यवहार–
शठे शाठयम् नीति का, पालन हो सम्पूर्ण।

553

क्यों चुनाव की भांति चुनाव नहीं होते हैं।
किस कारण हम धैर्य सदा अपना खोते हैं।
मैत्रीपूर्ण व्यवहार नहीं करते आपस में–
क्यों चुनाव में बीज शत्रुता के बोते हैं।

554

लोकतन्त्र है कहाँ देश में सैंतालीस से ढूँढ रहा हूँ।
काँग्रेस से, बीएसपी से, जनता दल से पूछ रहा हूँ।
सपा सहित जितने भी दल हैं, राष्ट्राध्यक्ष एक है अब तक–
वंशवाद है, व्यक्तिवाद है और नहीं कुछ देख रहा हूँ।

555

जनता पुनः एक अबला सी खड़ी हुई है आज सभा में।
निष्ठा ढूँढ रही जन-जन में, जो मिलती भी नहीं दवा में।
सबके कोरे आश्वासन हैं, वादे और प्रलोभन भी हैं–
जनता सोचे सच होंगे या उड़ जाएँगे सभी हवा में।

556

हार एक अवसर देती है, मन्थन और मनन करने का।
नया हौंसला मिल जाता है, जीवन में आगे बढ़ने का।
अच्छी बात दूसरो की भी, जो सुनते हैं सफल वही हैं–
सबसे ज्यादा चतुर समझना, खुद को कारण है गिरने का।

557

अहंकारियों का कभी, शिवजी देय न साथ।
ईश्वर उसके साथ जो, निर्बल को दे हाथ।
सोच–विचार–विनम्रता से जो करता काज–
उसको पार उतारते, सदा प्रभु श्रीनाथ।

558

सिद्ध हो गया आम आदमी, फतह हिमालय कर सकता है।
हाथी, घोड़े और शेर को, वही पालतू कर सकता है।
अगर ठान ले मन में अपने, और हौंसला बना रहे तो–
गहरे से गहरा सागर भी, पार तैरकर कर सकता है।

559

भारत–पाकी सम्बन्धों को, क्रिकेट जोड़ नहीं पाएगा।
काश्मीर पर जमी बर्फ को, ऐसे तोड़ा नहीं जाएगा।
जब तक आतंकी हमलों का, जारी है सिलसिला घिनौना–
तब तक कटुतर सम्बन्धों में, कोई मोड़ नहीं आएगा।

560

जनहित का जिनको नहीं, रहा जरा भी ध्यान।
जनता का निजकर्म से, किया नहीं कल्याण।
ऐसे सब नेताओं की, चिन्ता है बस एक–
मोदी से कैसे छिने, सत्ता तीर–कमान।

561

मोदी जी को क्या मिला, सूट एक सौगात।
सभी विपक्षी दलों का, चैन उड़ा दिन-रात।
अब नीलामी सूट की, से भी उनको कष्ट-
जो नित नए उछालते, हैं मुद्दे बिन बात।

562

हाईकमान आदेश दिया है, जो मोदी बोले वह सुन लो।
भले देशहित की बातें हो, इनसे भी कुछ मुद्दे चुन लो।
अच्छी हो या बुरी बात हो, सबका तुम्हें काट करना है-
सीधे को भी उलटा कहना, होगा तुमको इतना गुन लो।

563

सूट मिला उपहार में, था विपक्ष सब रुष्ट।
अब नीलामी हो रही, तब भी सबको कष्ट।
मुद्दे व्यर्थ उठा रहे, बोलें कड़वे बोल-
अपनी ऊर्जा कर रहे, स्वयं अकारण नष्ट।

564

भू-अधिग्रहण पर हुआ, है विपक्ष सब एक।
सिद्ध करे अब भाजपा, अधिग्रहण है नेक।
जनता से भी राय का, लेना उचित विचार-
साथ अगर है देश तो, क्या विपक्ष की टेक।

565

आन्दोलन फिर हो गया, अन्ना का आरंभ।
केजरीवाल भी साथ में, गाढ़ रहे हैं खम्भ।
बात सही है या गलत, निर्णय होय तुरन्त-
सत्ता औ' विपक्ष में, करें ना कोई दम्भ।

566

जनहित में यदि नहीं है, भू-अधिग्रहण बिल।
तो वापस ले लो इसे, काहे की किल-किल।
दुखी हुई जनता अगर, होगा बड़ा बवाल–
हो जाएगा भस्म सब, आहो में तिल-तिल।

567

रेल बजट भी आ गया, नया दिखा कुछ नाय।
कुछ को यह अच्छा लगा, कुछ दीखे असहाय।
वही पुरानी पटरियाँ, वही पुरानी रेल–
राम भरोसे चल रहा, देश हमारा भाय।

568

काश्मीर में बन गई, समझौता सरकार।
गलत हुआ या सही अब, इस पर व्यर्थ विचार।
घात करे ना वह अगर, जिस पर है विश्वास–
तब ही होगा देश को, समझौता स्वीकार।

569

पहले दिन आया बजट, अगले दिन बरसा गगन।
दोनों से कुछ दुखी हैं, और हुए हैं कुछ मगन।
देश धरा हित के लिए, आवश्यक है दोऊ–
किसी एक ही बात से, सुखी ना होयँ सबन।

570

कुछ महँगा सस्ता हुआ, बना बजट अनमोल।
ढूँढ रहे हैं विपक्षी, इसमें हो कुछ पोल।
कराधान है वांछित होगा तभी विकास–
नहीं समझते तथ्य जो, वही बजाते ढोल।

571

प्राविधान है बजट में, रहे सुरक्षित देश।
विकसित अपना देश हो, रक्खा ध्यान विशेष।
सबको ही सुख दे सके, कोई एक विधान–
ऐसा सम्भव ही नहीं, कहता मित्र हितेश।

572

इधर उधर की बात कर रहे हैं विपक्ष के सारे।
बोल रहे हैं भूमि अधिग्रहण बिल पर बिना विचारे।
कोई सुझाव और संशोधन इनके पास नहीं है–
केवल शोर मचा जनता को, भ्रमित कर रहे प्यारे।

573

काश्मीर से हट गई, अगर हमारी फौज।
घुस आएंगे पाक से, आतंकी शहरोज।
पी.डी.पी. के सामने, झुके नहीं सरकार–
झेले शीश उठाय के, समझौते का बोझ।

574

गलत हुआ या सही यह, सोचो नहीं हितेश।
नये-नये उद्योग का कीजै श्रीगणेश।
कम कीमत पर बांटिए वहां वस्तुएं नाय–
बेरूजगारी रहे ना काश्मीर में शेष।

575

गोली थानेदार की, मारा गया वकील।
बात-बात में हो गया, झगड़ा बहुत तवील।
सी.बी.आई. जाँच हो, तब होगा यह साफ–
शान्ति व्यवस्था में वहाँ, ठोकी किसने कील।

576

जंगल में ऐसी बिछी, राजनीति की चाल।
साफ बच गई लोमड़ी, सिंह फँस गया जाल।
जाने अब क्या करेगा, बहेलिया कानून–
कामयाब हो जाएगी, क्या सियार की चाल।

577

जिसने चाबी भरी थी, साफ बच गया दुष्ट।
उलटे-पुलटे काम से, जनता सारी रुष्ट।
जिसमें चाबी भरी थी, उसका क्या है दोष–
उसने वही किया रहे, जिससे स्वामी तुष्ट।

578

किस प्रकरण में साँवली कहकर दिया बयान।
महिलाओं को कर दिया, आहत क्यों श्रीमान।
बने रहे सुर्खियों में, शायद है उद्देश्य–
ऐसे व्यर्थ प्रलाप से, बनी रहे पहचान।

579

न्यायालय ने रद्द किया है, जाटों का आरक्षण।
मोदी को क्यों दोष दे रहे हैं इसके नेतागण।
बुरा सोचने वाले सुन लें, सभी सत्य कहता हूँ–
काँटें बोओगे तो दण्डित करेंगे श्री नारायण।

580

मोदी ने किसान वृद्धावस्था पेंशन घोषित की है।
राहत देगी हर गरीब को, उचित योजना पोषित की है।
अगर सत्यनिष्ठा से वितरण, हुआ पेंशन का हितेश तब–
आत्मघात न कृषक करेंगे, ऐसी नीति सुनिश्चित की है।

581

कोयल के अण्डों को जैसे, काला कव्वा खा जाता है।
क्रूर सर्प जैसे चूहे को, पूंछ समेत निगल जाता है।
ऐसे ही गरीब को मिलने वाली, राजकीय सहायता–
रिश्वतखोर बिचौला व्यक्ति, नब्बे प्रतिशत खा जाता है।

582

प्रकृति हुई किसान से, मित्र किसलिए क्रुद्ध।
अनचाही बरसात से, सांस हुई अवरुद्ध।
आलू, गन्ना, गेहूँ की, फसलों पर आघात–
ऐसा कभी हुआ नहीं, सोचें सभी प्रबुद्ध।

583

बना एक रन लौटे श्री विराट अनुष्का जीत गई।
ध्यान बैट से, क्रीज बॉल से, हटा अनुष्का जीत गई।
क्रिकेट में तो हार-जीत व्यवसाय बन गई है लेकिन–
हारा हिन्दुस्तान खेल में, मित्र अनुष्का जीत गई।

584

मांग बैंच हाईकोर्ट की, लगा न कुछ भी हाथ।
अधिवक्ता हड़ताल पर, वादी पीटें माथ।
अगर विभाजन मांगते, यू.पी. का श्रीमान–
तब मंजिल आसान थी, जनता देती साथ।

585

अखबारों को देखिए, गायब है साहित्य।
लेकिन क्रिकेट की खबर, छपती इसमें नित्य।
सीख रहे हैं युवाजन, फिक्सिंग का हर दाँव–
डूब रहा है बुद्धि का, भारत में आदित्य।

586

भागे थे बिजनौर नगर से, बचकर जो आतंकी।
बंगलौर में फूट गई, उनके जीवन की टंकी।
हर डकैत, आतंकी उग्री, ऐसे ही मरता है–
इक दिन मौत लगा ही देती है दुष्टों की फंकी।

587

कश्मीरी पंडित घर लौटें, ऐसा कुछ उन्वान बनें।
उनकी पूर्ण सुरक्षा का भी, वातावरण समान बनें।
व्यक्तिगत सम्पदा नहीं है, काश्मीर कुछ लोगों की–
हर भारतवासी का इस पर, हक है यही विधान बनें।

588

सम्प्रदायवादी कहलाओगे यदि मुँह खोलोगे।
गठबन्धन का कैसे बोलो अवगुण्ठन खोलोगे।
जो विकास कार्यों में केवल रोड़ा अटकाते हैं–
लोकतंत्र में कैसे उनके कर्मों को तोलोगे।

589

यूरोप यात्रा में मोदी की, निकले कई निदान।
कई भ्रांतियाँ आपसी दूर हुई श्रीमान।
घनी मित्रता देखकर, फ्रांस देश के साथ–
श्री नवाज शरीफ के, सूख रहे हैं प्रान।

590

पुनर्वास कश्मीरी पंडित, का होना आवश्यक है।
पर अलगाववादियों की जिद, उसमें लगती बाधक है।
मुफ्ती जी अलगाववादियों, के आगे नतमस्तक हैं–
बीजेपी के लिए प्रश्न यह, अति विशेष निर्णायक है।

591

गन्ने का भुगतान मिला ना, आलू, गेहूँ नष्ट हुआ।
जीते जी मर गए कृषक वह जिनको यह सब कष्ट हुआ।
केवल राहत के आश्वासन, और चैक बस दो सौ के–
शासन की संवेदनशीलता, का चेहरा स्पष्ट हुआ।

592

केवल क्रिकेट या तबादले, दुष्कर्मों के समाचार हैं।
बची-कुची जो जगह बची, उसमें विज्ञापन ढेर सार हैं।
बड़े-बड़े अखबारों में, साहित्यिक चर्चा शून्य मात्र है–
इसीलिए तो आज युवाओं के, मन में आए विकार हैं।

593

सावधान भारत का शत्रु, लखवी फिर आजाद हुआ।
शान्ति वार्ता समझौते का, मार्ग पुनः नाबाद हुआ।
लेट-लतीफी, ढुल-मुल नीति, का भारत पर दोष लगा–
जिसके कारण सभी क्षेत्र में, देश एक अपवाद हुआ।

594

लो गठबन्धन पूर्ण हो गया, विलय हुए दल में दल-दल।
सुखी हुए होंगे वह सब जो, रहे भाजपा से बेकल।
नहीं कृषक का ध्यान किसी को, सब सत्ता के भूखे हैं–
नया नाम देने से इनकी, क्या जाएगी सोच बदल।

595

काँग्रेस तो जागी-जागी, हर विरोध को भुना रही।
और भाजपा सोई-सोई, जश्न जीत का मना रही।
बना स्वयंभू राजनीति में, नहीं किसी की जो सुनता–
उसका ग्राफ तुरत गिरता है, ऐतिहासिक वंचना रही।

596

अच्छे दिन पर पड़ा प्राकृतिक कोप भयानक साया।
आसमान से बरसी भू पर, क्यों मृत्यु की छाया।
विवश आत्महत्या को कृषक, हुआ स्वराज में अपने–
शासन कोरे आश्वासन से, दुर्दिन टाल न पाया।

597

उट्ठा था तूफान जहाँ पर, दलदल में–दल हुए विलय।
उस बिहार में अब आई है, प्रकृति की तूफान प्रलय।
पन्द्रह मिनट चली तूफानी, हवा हो गया सबकुछ नष्ट–
बड़े-बड़े दिग्गज नेतागण, कहाँ छिपे हैं इस कुसमय।

598

हिन्दू छवि बनाने के हित, राहुल गए श्री केदार।
याद आएँ हैं अब हिन्दू जब, फिसल गई दिल्ली सरकार।
कल के हिन्दू विरोधियों का, मन बदला है किस कारण–
ईश्वर से क्या छिपा सकेंगे, अपने मन में छुपे विचार।

599

भू काँपी, ढह गई इमारत, धरती फटी, दीवारें टूटीं।
खिड़की-दरवाजे लहराएँ, अनगिन तन से साँसें छूटीं।
कुछ सहस्र हो गए हताहत, ऐसा था भूकम्प भयानक–
भारत से नेपाल देश तक, मन्दिर की मीनारें टूटीं।

600

प्रकृति रूष्ट हुई जनजीवन, काँच सरीखा नष्ट हो गया।
क्षण भर में ही दृश्य प्रलय का, नयनों में स्पष्ट हो गया।
था भूकम्प भयानक इतना, ऊँचे-ऊँचे भवन ढह गए–
जो जीवित बच गए उन्हें भी, असहनीय सा कष्ट हो गया।

601

जीवात्मा की हम सहायता, करने से बचते हैं।
मृतक आत्मा की शान्ति को, रोज यज्ञ करते हैं।
यह दोगला चरित्र हमारा, क्षम्य नहीं है फिर भी–
एक नया आडम्बर अपने, चहुँओर रचते हैं।

602

तुम भूकम्प त्रासदी से, पीड़ित की पीड़ा बाँटो।
तन-मन-धन से कर सहायता, निज कर्त्तव्य निभा दो।
ईश्वर कष्ट तुम्हारे हर लेगा, तुम आगे आकर–
भूकम्पित मुरझाए जीवन में, मुस्काने ला दो।

603

आत्महत्या करने वाला, कायर नहीं तो फिर क्या है।
दायित्वों से भाग रहा जो, कायर नहीं तो फिर क्या है।
पत्नी-बच्चे भूखे-प्यासे, रोते और बिलखते छोड़–
सबसे जो मुँह मोड़ रहा है, कायर नहीं तो फिर क्या है।

604

भूकम्प पीड़ितों के लिए करो हृदय से दान।
मानवता के प्रति यह, होगा कार्य महान।
लो अनाथ शिशु गोद में, घायल का उपचार–
सच्ची पूजा है यही, कहते श्री भगवान।

605

किए जुर्म जो उस मुकाबले, सजा मिली जो काफी कम है।
लगता अपनी न्याय प्रक्रिया, श्रीदबंग पर हुई नरम है।
अन्धाधुन्ध पी कार चलाई, कुचले कई लोग फुटपाथी–
कुछ विकलांग हुए, कुछ घायल, जिनमें एक हुआ बेदम है।

606

नक्सलवाद समस्या कम है,पर सामाजिक रोग बहुत है।
मुफ्त की मदिरा, तानाशाही, अय्याशी का भोग बहुत है।
सही समय है, नक्सलवादी, मिलें मुख्यधारा में आकर–
वरना खालिस्तानी जैसा, मिटने का संयोग बहुत है।

607

बोल अमेठी आर्डिनेंस फैक्ट्री में, कितना काम हुआ।
दो सौ अट्ठारह करोड़ का धन, किस मद्दे खर्च हुआ।
लगता है अब तक तो कुछ भी, वहाँ प्रगति का नाम नहीं–
शायद यह सारा धन केवल, घोटालों के नाम हुआ।

608

तेरह वर्ष मुकदमा चलकर, आखिर हुई खान को जेल।
न्याय प्रक्रिया धन्य, मात्र दो घण्टे में ही दे दी बेल।
क्या भारत का न्याय दबंगों से, भयभीत हुआ या फिर–
आरोपी में और न्याय में, नूरा-कुश्ती का है खेल।

609

न्यायालय ने श्री खान का, शायद रखा ध्यान विशेष।
मृतक और विकलांग किसी को नहीं मुआवजा मिला हितेश।
पी शराब, की रैश ड्राइविंग, बोले भी, बुलवाए झूठ–
भाग गए घटनास्थल से, चाहा साक्ष्य रहे ना शेष।

610

मोदी जी यह सोच रहे हैं, भारत का उन्नत हो भाल।
इसीलिए वह बना रहे हैं, कई योजना बड़ी विशाल।
भूमि अधिग्रहण बिल से भी, लाभान्वित होंगे किसान पर–
समय लगेगा धीरे-धीरे जनता भी होगी खुशहाल।

611

पुनः गोधरा कांड देश में, दोहराया जा सकता था।
हिन्दू-मुस्लिम दंगा फिर से, भड़काया जा सकता था।
समझदार कुछ लोगों ने पर, टाल दिया दुर्घटना को–
मार-काट हो सकती थी, भारत दहलाया जा सकता था।

612

जाट आरक्षण मांग रहे हैं, अपने संविधान की जय हो।
पहले से आरक्षित कहते, अपने संविधान की जय हो।
अनुसूचित–पिछड़ी जाति या दलित, कहो पर दो आरक्षण–
आरक्षण व तुष्टिकरण के, अपने संविधान की जय हो।

613

फिर काँपा नेपाल, थरथराई फिर धरती।
आठ बार भूकम्प, लगी हैं साँसें थमती।
फिर घायल हो गए सहस्रों मरे अनेको–
कब तक झेलेगा नेपाल, जिन्दगी मरती।

614

आरक्षण से पदोन्नति को, अनुचित माना।
पदोन्नति ज्येष्ठता क्रम में हो सन्माना।
न्यायपालिका का यह निर्णय बहुत उचित है–
था अन्याय वरिष्ठता के ऊपर, कनिष्ठ बैठाना।

615

गुर्जर भी अब मांग रहे हैं, आरक्षण हमको भी दो।
और जाट भी आरक्षण को, हाथ कर रहे हैं दो-दो।
मेरा मत है आरक्षण का प्राविधन अब खत्म करो–
या फिर ब्राह्मण, बनिया, गुर्जर, जाट सबै आरक्षण दो।

616

झूठ बोलकर भ्रमित कर रहे,जनता को 'सबका' के नेता।
घोटाले में डूबे– बनते– देशभक्त 'सबका' के नेता।
माँग रहे हैं बीजेपी से, एक साल का वह हिसाब–पर –
अपने शासन में कुछ भी क्यों, कर न सके 'सबका' के नेता।

617

काँग्रेस में सोनिया गाँधी, तमिलनाडु में जयललिता।
यू.पी. में माया बहना जी, हैं बंगाल जमी ममता।
अपने ब्रह्मचारी पी.एम. से, खफा-खफा लगती सारी–
जाने क्यों बीजेपी शासन, उनको जरा नहीं जमता।

618

बीज बो दिए हैं विकास के, समय लगेगा फलने में।
प्रगति को भी गति मिलेगी, बुलेट रेल के चलने में।
अर्द्धशतक तक घोटाले ही, जिनकी रही प्राथमिकता–
नित्य नए अवरोध उठाते, हैं संसद के चलने में।

619

देश भाड़ में जाए भले ही, हमें सिर्फ आरक्षण दो।
जनता मरे-जिए हमको क्या, हमको तो आरक्षण दो।
आग लगेगी–रेल रूकेगी–तोड़-फोड़ खुलकर होगी–
इनसे देश बचाना है तो, हमें तुरत आरक्षण दो।

620

कैप्टन कालिया को शत्रु ने, अति क्रूर यातना दई।
आँख निकाली– पर्दे फाड़े– टुकड़े तन के किए कई।
उसके साथ मैत्री वार्ताओं का, करना बन्द करो–
और खेलना उसके संग में, क्रिकेट है नीचता भई।

621

मैगी खाते नहीं स्वयं पर, उसका विज्ञापन करते।
कुछ करोड़ के लिए देश की, जनता से वह छल करते।
सावधान! जिस वस्तु के भी, विज्ञापन में हों अभिनेता–
सत्य मानना उसका वह, स्वयं प्रयोग नहीं करते।

622

हम शत्रु के साथ खेलते हैं, क्रिकेट कितना विचित्र है।
हम कितने महान हैं, आतंकी को भी कह रहे मित्र हैं।
अँग्रेजों की मुगल काल की, घोर गुलामी सहते–सहते–
बदल गया शायद भारत के, पौरुष का अविजित चित्र है।

623

गिलानी जो बोल रहा है, नेहरू जी की गलती है।
नफरत – तो अलगावादियों के हर दिल में बसती है।
काश्मीर में बढ़ती फौजों को गर रोका ना होता–
तो आतंकी आग न होती, जिसमें जन्नत जलती है।

624

मुगल काल से होते आए हैं, भारत पर अत्याचार।
कैप्टन कालिया के शरीर पर, थे अनगिन घावों के वार।
अमानवीय यातनाएं देकर, मारे थे जांबाज कई–
जाने कब अपनी सेनाएं, लेंगी जुल्मों का प्रतिकार।

625

खट्टा मारा गया मगर, खट्टे–मीठे भी अभी कई हैं।
राजनीति के इस जंगल में, चोर लुटेरे अभी कई हैं।
नक्सल– उग्री– माओवादी, जिनसे संरक्षण पाते हैं–
खादी के कुर्ते में लिपटे, भारत में गद्दार कई हैं।

626

गंगा स्वच्छ अभियान, हमारे नेता कैसे सोच रहे हैं।
जड़ पर कोई प्रहार नहीं है, केवल पत्ते नोंच रहे हैं।
गन्दे नाले और गन्दगी, गंगा में जो नित गिरती है–
इसको रोक नहीं पाए हैं, घाट, पैड़ियाँ पोंछ रहे हैं।

627

कब तक उग्रवाद के हाथों–मारे जाएँगी सेनाएँ।
कब तक अपनी राजनीति को, रोएँगी शहीद विधवाएँ।
जिन नेताओं के साए में, पनप रहे उग्री आतंकी–
उनके हाथों लोकतंत्र की, कब तक झेलेंगे हत्याएँ।

628

गंगा में जहाज तैरेंगे, सपना तो सटीक है लेकिन।
गंगा स्वच्छ अभियान चलेगा, यह भी बहुत नीक है लेकिन।
गंगा गहरी नहीं हुई गर, रूके न गिरते गन्दे नाले–
तब कैसे जलयान चलेंगे, चिन्ता होनी ठीक है लेकिन।

629

नक्सलवादी पनप रहे हैं, नेताओं की मिली शरण से।
उग्रवाद का जन्म हुआ है, तुष्टिकरण से, आरक्षण से।
भारत पर दबंग हावी हैं, अल्पसंख्यक हैं खास यहाँ पर–
राजनीति व्यवसाय बन गई, नैतिकता के हुए क्षरण से।

630

आरक्षण पर हिंसा भड़की, लो निषाद भी खड़े हो गए।
वाहन फूँक रहे सरकारी, रेल ट्रैक कबजड़े हो गए।
अरबों की सम्पत्ति आग–लगाकर यह भी सिद्ध करेंगे–
शासन बौना हुआ और हम, सत्ता से भी बड़े हो गए।

631

लो सत्ता की हार हो गई, तुष्टिकरण हो गया हावी।
अल्पसंख्यक की जिद के आगे, योग गुरु ने आँख झुका दी।
बहुसंख्यक अब कान दबाकर, शीश झुकाकर चले सड़क पर–
जो हम देख रहे उससे भी, काली हो सकती है भावी।

632

सूर्य नमस्कार रोका है, कल मन्दिर जाना रोकेंगे।
रामलला मंदिर की सोचोगे, तो सरे राह ठोकेंगे।
यह सरकार हमारे दम से, और हमारी मर्जी पर है–
तुष्टिकरण नहीं होगा तो, देश आग में हम झोकेंगे।

633

यदि तुमने भी पढ़ाए होते, श्रीमान मुखिया के पुत्र।
तो तुमको भी क़वि–शिरोमणि, पुरस्कार मिल जाता मित्र।
व्यक्तिगत सम्बन्धों पर ही, आधारित हैं सब सम्मान–
प्रतिभा सूखी खड़ी धूप में, कलयुग का है खेल विचित्र।

634

सौ–पचास कविताएं लिखकर वह बन गये श्रीधर शिरोमणि।
अर्द्धशतक से अधिक पुस्तकें लिखने वाला रहा टिन मिणि।
सर्वनाश होगा उन सबका, जो साहित्यिक बेईमान हैं–
अधिक समय तक नहीं रहेगी, सत्ता ईश्वरीय अनमनी।

635

जैसे म्यांमार में घुसकर, उग्रवादियों को ललकारा।
सैनिक किए शहीद जिन्होंने, उनको उनके घर में मारा।
शाबासी उन वीर सैनिकों को, जिन ने अपने शत्रु से –
बदला लेकर अपने सर से, मातृभूमि का कर्ज उतारा।

636

भगवा का जो भी विरोध करते हैं, वह सब भारत छोड़ें।
या तो जाकर रहे पाक में, या फिर उससे नाता तोड़ें।
भारत में रहकर गाते हैं, जो अलगाववाद का गाना–
या तो सुधर जाए वह वर्ना, खाएँगे कानूनी कोड़े।

637

फर्जी डिग्री पर कैसे, सरकार चलेगी आप बताएँ।
केवल धरना आन्दोलन से, क्या विकास होगा बतलाएँ।
तानाशाही अगर करोगे, तो यह सम्भव हो सकता है–
सत्ता सौंपी तुम्हें जिन्होंने, वो ही सड़क तुम्हें दिखलाएँ।

638

जनता को निश्चित करना है, कौन लुटेरा कौन है रक्षक।
होनी है पहचान जरूरी, कौन परीक्षित, कौन है तक्षक।
यू.पी. में, बिहार में होने वाले, कल चुनाव में जनता–
अगर नहीं जागी तो, दोनों प्रान्त लूट खाएँगे भक्षक।

639

म्याँमार आपरेशन भैय्या, जय हो हिन्दुस्तान की।
अब जल्दी ही नाप-तौल, करनी है पाकिस्तान की।
सहन अब नहीं होंगे, आतंकी हमले कश्मीर में–
अब स्वदेश आश्वस्त हो गया, जय नेतृत्व महान की।

640

भारत में भी डोल रहे हैं, पाकिस्तान समर्थक नेता।
जो सत्ता पर नित्य लगाते हैं आरोप, निरर्थक नेता।
कार्यप्रणाली से मोदी की, जिनकी नींद हुई है गायब–
नाप-तौल कर दो उनकी जो, बोले बोल अनर्थक नेता।

641

'हमने नहीं चूड़ियाँ पहनी' हारा हुआ मुशर्रफ बोला।
अनगिन बार पिटा है फिर भी, देखो गीदड़ ने मुँह खोला।
म्याँमार के आपरेशन से, बौखलाई नापाकी सेना–
इत–उत डोल रही कहती, हम पर भी है बम का गोला।

642

जो भी अपने काश्मीर में, नापाकी झंडे लहराए।
सेना ऐसे देशद्रोहियों को, गोली से मार गिराए।
म्याँमार जैसा आपरेशन, पीओके में आवश्यक है–
एक–एक करके आतंकी, सारे अड्डे जाएँ मिटाए।

643

पैसे के बल भीड़ जुटाई, गद्‌गद् हुए सभी नेता।
जनपद का आवाम देखने, पहुँचा बड़बोला नेता।
बादशाह की कमी गिनाई, अपनी खूबी एक नहीं–
मूर्ख समझते हैं जनता को, 'सबका के सारे नेता।

644

एक बार हो जाए तमन्ना, पूरी पाकिस्तान की।
भारत को वापस मिल जाए, धरती हिन्दुस्तान की।
नेहरू–गाँधी–जिन्ना की गलती को मिलकर माफ करें–
बंटवारे की छाती पर फिर, जीत लिखे इंसान की।

645

काँग्रेस को मिल गया, मुद्‌दा फिर श्रीमान।
संसद के इस सत्र में, डालेंगे व्यवधान।
गति विकास की देश में, करते बाधित नित्य–
देश हिताहित का नहीं, इन्हें जरा भी ध्यान।

646

हारे बंगला देश में, कारण ढूँढों मित्र।
या तो फिक्सिंग हुआ या फिसला कहीं चरित्र।
आउट यानी हो गए, रन पर एक विराट–
फ़ेल सभी कैसे हुए, लगता बड़ा विचित्र।

647

गंगा साफ करेंगे पहले, मोदी हमको माफ करें।
भाजपा की आन्तरिक विषमताओं, को पहले साफ करें।
नक्सल, आतंकी से ज्यादा, हैं गद्दार विषैले घर के–
आस्तीन के साँपों का सर काटें, कद को हाफ करें।

648

फिर विपक्ष को, हंगामा करने की छूट मिलेगी।
काम नहीं होगा संसद में ऐसी लूट फलेगी।
आपस की यह फूट, भाजपा को शायद ले डूबे–
देश पिछड़ जाएगा, अवनति अट्टाटूट चलेगी।

649

दोस्ती दरकिनार करता है।
पीठ पर चीन वार करता है।
हमसे ज्यादा करीब है नापाक–
सिद्ध वह बार-बार करता है।

650

जो संसद बाधित करते हैं, देशद्रोह में उनको नापो।
गद्दारों की मंशा क्या है, उसको परखो उसको मापो।
तुम भारत विकास के हित में, अपना हर कर्त्तव्य निभाओ–
शठे-शाठयम् समाचरेत ही उचित मंत्र है इसको जापो।

651

उचित किया है तुमने निर्णय, फड़नवीस अब झुकना मत।
अगर मदरसे सिर्फ मजहबी होय, मान्यता देना मत।
अब तक जिन्हें चढ़ाया सर पर, उल्टा-सीधा बोलेंगे-
सत्य राह पर चलते रहना, मित्र कभी भी रूकना मत।

652

मोदी जिनको लुभा रहे हैं, उनका भी इतिहास गुनें।
समय अगर हो तो राणा की और शिवा की कथा सुनें।
आवश्यक है गद्दारों से सावधान हम रहे हितेश-
देशभक्त अश्फाकुउल्ला याकि हमीद जांबाज चुनें।

653

व्यापम घोटाले में व्यापक, हत्याओं की लगी झड़ी।
एक न दो पूरे पैंतालीस, लोगों की है बलि चढ़ी।
लोग मर रहे हैं ग्लानि से, या फिर कोई हत्यारा-
गवाह मार कर, साक्ष्य मिटाकर, लगा जांच में रहा तड़ी।

654

सीबीआई जाँच करेगी, व्यापम के घोटाले की।
खैर नहीं होगी अब, कालाधंधा करने वाले की।
अगर सत्यता से यह जाँच हुई तो तो सच मानो हितेश जी-
मिल जायेगी चाबी यकदम, हत्याओं के ताले की।

655

दसवीं फेल बने है मंत्री, जय हो हिन्दुस्तान की।
व्यापम जैसे घोटाले हैं, जय हो हिन्दुस्तान की।
राज्यपाल भी नहीं है बाहर, संदेहों के घेरे से-
दागी न्यायपालिका भी है, जय हो हिन्दुस्तान की।

656

मोदी से नवाज का मिलना, बात है क्या कहने की।
कैसे हो शरीफ से आशाएँ, शरीफ रहने की।
जिसने धोखा दिया हमेशा, सीज फायर को तोड़ा–
क्या फिर से सीमा तय होगी, वादों के सहने की।

657

हम कितने ईमानदार हैं, देखो अखबारों में।
गैंगरेप, तेजाब कांड, रिश्वत है अखबारों में।
एक अकेला मोदी, किस-किस को हितेश बदलेगा–
रोज-रोज है नये घोटाले, खुलते अखबारों में।

658

आशा बैठा जेल में, ढोंगी जपता मंत्र।
मारे जाएँ गवाह सब, रचना है षडयंत्र।
लम्बित है क्यों मुकदमा, क्यों निर्णय में देर–
सजा दुष्ट को शीघ्र ही, दे दे न्यायिक तंत्र।

659

देशद्रोह है जो करे, संसद में व्यवधान।
होता इससे देश के जन-धन का नुकसान।
जनता जाग्रत हो करे, उनका घोर विरोध–
जो शत्रु हैं देश की, प्रगति के श्रीमान।

660

पुत्र था रामेश्वरम् का, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम।
सबको ही उपलब्ध था, खास हो याकि आम।
आज मिसाइल बन गया, स्वयं मिसाइलमैन–
राजनीति– विज्ञान में, अमर रहेगा नाम।

661

क्षण भर में ही हो गया विदा, भारत माँ का सच्चा सपूत।
वह योगी था, वैज्ञानिक था, था राजनीति में भी अभूत।
विज्ञान क्षेत्र में भारत को, पहुँचाया जिसने शिखर तलक–
वह ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, थी देशभक्ति उसमें अकूत।

662

जनता उनको पहचाने जो, संसद में व्यवधान डालते।
अपनी-अपनी आस्तीन में, देश विरोधी साँप पालते।
जो विपक्ष में बैठे उनसे– आगे यह कुर्सी भी छीनो–
न्यायालय के निर्णय पर भी, जो विरोध के स्वर उछालते।

663

आतंकी याकूब चढ़ाया, फाँसी पर यह उचित हुआ।
जो विरोध में बोले उनसे, न्यायायिक अपराध हुआ।
जिनका कोई नहीं मरा था, फाँसी पर विरोध करते हैं–
याकूबी हमले में इनका– मरता– कहते सही हुआ।

664

आतंकी पकड़ा गया, चाल हुई नाकाम।
जीजा-साले ने किया, है यह अद्‌भुत काम।
आतंकी को शीघ्र ही, फाँसी दे सरकार–
विक्रम और राकेश को, करता देश सलाम।

665

संसद में व्यवधान, डालने वालों को मत माफ करो।
आने वाले हर चुनाव में, उसको बिलकुल साफ करो।
देश विकास विरोधी व्यक्ति, राजनीति में जो भी हो–
भले बुरे की अब मत सोचो, उसके कद को हाफ करो।

666

बिगुल बज गया है बिहार में, लिखी जाएगी नवरामायण।
नेताओं के दुष्कृत्यों का शीघ्र वहाँ होगा पारायण।
अब विकास की गति पकड़ेगा, जे.पी. का बिहार भारत में–
राहु–केतु से मुक्ति मिलेगी, सूरज का होगा उग्राह्यण।

667

जनता जाग्रत होकर देखे, समझे भी और पहचाने।
जो व्यवधान डालते संसद में, उन पर भी भृकुटि ताने।
जनता से विश्वासघात है, जन–धन की है बर्बादी–
ऐसे लोगों का घिराव कर, संसद में ना दे जाने।

668

आतंकी हमसे हारे हैं नापाकी भी हारा है।
हमने आतंकी को उसके घर में जाकर मारा है।
धर्म युद्ध के कुरूक्षेत्र में सदा हमारी जीत हुई–
पाँच पाण्डवों ने कौरव के शतदल को संहारा है।

669

विगत सत्र में हंगामे की, भेंट चढ़ गई संसद भैय्या।
अबकी सत्र शुरू हो तो, यह याद रहे मैं लेऊँ बलैइया।
संसद बाधित करने वाले, नेता संसद तक ना पहुँचे–
जो अपमानित सदन कर रहे, उनकी कहीं डूबा दो नैय्या।

670

जागो और जागकर घोटाला करने वालों को पकड़ो।
जो भी देशद्रोह करता है, उसको जंजीरों में जकड़ो।
जो भी हैं गद्दार देश के, उनसे मत मित्रता निभाओ–
नहीं देशहित सोच रहे जो, चौराहे पर उनको रगड़ो।

671

राखी का त्यौहार देश में, अनुपम और सलोना।
ज्ञान और शक्ति का होता, इसमें मिलन अलोना।
भाई मेरा जिए सुरक्षित, बहन कामना करती–
और बहन की रक्षा का व्रत, भाई मन में होना।

672

आरक्षण या तो समाप्त हो, या फिर मिले सभी को।
आग लग रही है समाज में, मिलता किसी किसी को।
एकसूत्र में अगर देश को, देश बाँधना चाहे–
सभी एक हो जाएँ, देश में इसके उन्मूलन को।

673

यह जो भी अलगाववाद है, केवल साँपों की जमात है।
इनमें जो कोई शामिल है, वह गद्दारों की बरात है।
यही समय है इनके फन को, हमें कुचलना ही अब होगा–
सर काटो हर उस व्यक्ति का, जो भी करता देश घात है।

674

व्यक्तिगत आक्षेप मत करो, रहो जरा शालीन मियाँ।
पीकर दूध भैंस का, मोटी–अक्ल, गई क्या चीन मियाँ।
जिस दिन सहन व्यंग्य न होंगे, और बोल हम अगर पड़े–
खीर–शीरनी सभी तुम्हारी, कर देंगे नमकीन मियाँ।

675

आतंकी पकड़ा गया, खुली पाक की पोल।
झूठे उसके हो गए, मैत्रीभाव के बोल।
शांतिवार्ता भी विफल, उसने करी हितेश–
अब क्रिकेट का भी बजे, साथ ना उसके ढोल।

676

रक्षा का दो बहन को, राशि का उपहार।
पुत्री से भी पुत्र सम, करो मित्र व्यवहार।
कसम खाए अब भ्रूण की, हत्या होगी नाय–
अब बेटी के जन्म पर, दुखी न हो परिवार।

677

पाकिस्तानी धौंस का वजन परखना होगा।
एटम बम तैयार हमें करके भी रखना होगा।
इस नापाक पड़ोसी ने जो, जख्म दिए हैं–
अब भविष्य में, हमको उनसे बचना होगा।

678

मन्दिर स्वर्ण देखने पहुँचा, मैं अमृतसर।
बड़े-बड़े थे वहाँ लगे, साहिब– गुरु चाकर।
श्रद्धा उनकी देख, झुका श्रद्धा से माथा–
धन्य-धन्य सरदार– सिक्ख, समुदाय पागधर।

679

कर्ण और अर्जुन की भाँति, दोनों इक-दुजे के दुश्मन।
पाक द्वेष रखता भारत से, जैसे पांडव से दुर्योधन।
लगता है इस बार पुनः अब, युद्ध महाभारत का होगा–
वोही जीतेगा जिसके संग, खड़े रहेंगे यशुमतिनन्दन।

680

रिश्वतखोरी, चोरबाजारी और मिलावट भैय्या।
इनके कारण आज देश की, डूब रही है नैय्या।
सामाजिक अपराध घिनौने– इन पर भी फाँसी हो–
तब ही यह सारे अपराधी, हाय करेंगे दैय्या।

681
गठबन्धन में कौन-कौन है, उनको पहचानो श्रीमान।
चारा घोटाला आरोपी, बातें करते बड़ी महान।
बचकर रहना चक्रव्यूह से, वर्ना फिर फँस जाओगे-
छोटे-बड़े सभी शामिल हैं, घोटालों के हाईकमान।

682
प्रतिभाशाली व्यक्ति ही अब, राजनीति में आएँ।
भ्रष्टाचारी व्यक्ति संसद में आने ना पाएँ।
कहना बहुत सरल है लेकिन कहा निभाना दुष्कर-
राज्यसभा में प्रतिभाएँ, श्रीमन लाकर दिखलाएँ।

683
प्रतिभाओं को तो अनदेखा कर देते हैं श्रीमन्।
मिलने का भी समय नहीं, देता उनको सिंहासन।
प्रतिभाओं की कदर वहाँ पर, बोलो कैसे होगी-
हावी जहाँ वोट बैंक है, तुष्टिकरण-आरक्षण।

684
जनता की सरकार कहाँ है, जनता चुनती इसे जरूर।
सत्ता पाकर जनप्रतिनिधि को, हो जाता है बड़ा गरूर।
रेवड़ि बाँटते हैं अपनों को, अन्धे सब सत्ताधारी-
कोई भी सत्ता हो जनता, रहती बड़ी दुखी मजबूर।

685
केवल हंगामा आन्दोलन, देश के हित की बात नहीं।
धूल चटाई है जनता ने, फिर भी छोड़ी घात नहीं।
घोटालो का, देशद्रोह का, प्रतिफल भोग रही है जो-
उसके जीवन में आएगी, कभी सुनहरी प्रातः नहीं।

686

शिक्षा में कोई सुधार भी अब तक हुआ नहीं है।
कहीं अगर विद्यालय है तो, शिक्षक वहाँ नहीं है।
शिक्षामित्रों का आन्दोलन, बंटाधार करेगा–
कहीं–कहीं विद्यालय का भी, ताला खुला नहीं है।

687

डेंगू के कारण दिल्ली में, रोज मौत होती है।
और 'आप' सरकार वहाँ पर, आँख मूँद सोती है।
सारी जिम्मेदारी केन्द्र और मोदी की कहकर–
निष्क्रिय वहाँ राज्य की सत्ता, निज दामन धोती है।

688

गठबन्धन कोई भी हो, उसमें होती हैं गाँठे।
सफल तभी हो सकता है, जब चलें न उसमें लाँठे।
सर्वसहमति से निर्णय हो, निजी स्वार्थ की बात नहीं हो–
सोचे हित समाज के, व्यक्तिगत ना भरें गुलाँठे।

689

आयरलैण्ड में भी मोदी के, नमो–नमो ही गूँज रही।
स्वागत गान हुआ संस्कृत में, यह भी अच्छी सूझ रही।
विश्व ख्याति के शिखर चढ़ रहा, अपने भारत का पी.एम.–
किन्तु विपक्षी सोच इसी पर, व्यंग्य बाण है भूँज रही।

690

हमने गाँधी को सहेजा, और गाँधी ने हमें।
देखिए आजाद भारत, दिया गाँधी ने हमें।
चलो गाँधी जयन्ती पर, यह शपथ लें हम सभी–
करें सच का आचरण, जो कहा गाँधी ने हमें।

691

सिर्फ जबानी जमा खर्च से, गंगा स्वच्छ नहीं होने की।
नेताजी के घर में आकर, उनके पाँव नहीं धोने की।
जब तक कोई भागीरथ जैसा, व्यक्ति इससे नहीं जुड़ेगा–
तब तक यह अभियान रहेगा, बात फक्त रोने–धोने की।

692

महँगाई की किसी तरह भी, रोकथाम हो मोदी जी।
अब किसान की समस्याओं पर भी, विराम हो मोदी जी।
सौर ऊर्जा युद्ध गति से, विकसित हों उपलब्ध बनें–
तभी अराजकता स्वदेश की, भी तमाम हो मोदी जी।

693

महँगाई भी और बढ़ी है, बिजली भी भरपूर नहीं।
गन्ने की भुगतान समस्या, हुई कृषक की दूर नहीं।
दैनिक आवश्यक वस्तु की, कीमत सीमा लांघ गई–
भ्रष्टाचार और रिश्वत भी, हुए अभी काफूर नहीं।

694

मर कर जिन्दा कर गया, घर–भर को अखलाक।
नौकरी तीन सदस्यों को, घर में छप्पन लाख।
कुदरत की मर्जी बिना, होता कुछ भी नाय–
राजनीति अब मत करो, इस पर डालो खाक।

695

गौहत्या पर हो रही, राजनीति घनघोर।
अपनी–अपनी रोटियाँ सेक रहे चितचोर।
पूरे भारतवर्ष में इस पर हो प्रतिबन्ध–
आजम खां के कथन का, हो स्वागत पुरजोर।

696

राक्षस खाते आए हैं, गौ का मांस हितेश।
जन में हैं कुछ राक्षस, बनकर मनुज विशेष।
बेटी, रोटी का करो, मत उनसे व्यवहार–
कुत्ता विष्ठा खाए तो, इसमें कैसा क्लेश।

697

राजनीति में हो रहा, है खुलकर व्यभिचार।
जिसके जी में जो रहा, बोल रहा दे धार।
खुलकर अपराधीकरण, इसमें हुआ हितेश–
इस चुनाव में दुर्जनों, की देखी भरमार।

698

कुछ मूरख हैं और हठी हैं, सारे मिलकर चिल्लाते हैं।
सपने में मोदी दिख जाए, सोते-सोते डर जाते हैं।
कोई मुद्दा नहीं, सोच भी नहीं, देशहित या जनहित में–
मोदी जी के खाने और पहनने पर रोते-गाते हैं।

699

कुचल साम्प्रदायिकता देंगे, नेताजी बोले श्रीमान।
क्योंकि उनकी बुलडोजर से, बहुत पुरानी है पहचान।
लव जिहाद पर, बलात्कार पर, गाय मांस पर नेताओं के–
ऐसे ही आते रहते हैं, अहंकार से पूर्ण बयान।

700

गठबन्धन का मुद्दा केवल, देना है मोदी को गाली।
और चाहते हैं जनता से, बदले में कुर्सी की थाली।
भोली-भाली जनता को, राहु-केतु ने बहुत छला है–
अबकी बार दिखा दे जनता, उनको भी कीचड़ की नाली।

701

भेदभाव की देखिए, सीमा कितनी दूर।
एक बिसाहड़ा पर हुए, लेखक सब मशहूर।
सिक्ख मरे, पंडित कत्ल– हुए, रहे यह चुप्प–
जनता पहचाने जरा, इन चेहरों का नूर।

702

हिन्दू–मुस्लिम बीच नहीं थी, नफरत की दीवार कभी।
औरंगजेबी नेताओं ने, खड़ी करीं दीवार सभी।
उनको देश निकाला दो, जो आपस में लड़वाते हैं–
नहीं रहेंगे जब यह होगा, आपस में फिर मेल तभी।

703

इतने दीप जलाओ जिसमें, डूबे धरती का अँधियारा।
ज्योतिर्मय हो महल–दुमहले, हर कुटिया आँगन–घरद्वारा।
यह दीवाली सबको शुभ हो, सबका पथ उज्ज्वल प्रशस्त हो–
दमक उठे भू का हर कोना, चमक उठे नन्दन वन सारा।

704

वापस जो भी कर रहे, साहित्यिक सम्मान।
देशद्रोह का लीजिए अब उन पर संज्ञान।
साहित्यकार वह नहीं हैं, सच्चे कहे हितेश–
बहिष्कार उनका करे, सारा हिन्दुस्तान।

705

सहनशीलता सहिष्णुता वांछित है श्रीमान।
सभी पक्ष माने उसे, तब ही है कल्यान।
बहुसंख्यक को नसीहत, अल्पसंख्यक को छूट–
ऐसे नफरत द्वेष का, होगा नहीं निदान।

706

भारत पाकिस्तान में जब तक ना हो मेल।
भारत–पाकिस्तान की, चले न क्रिकेट रेल।
जनता की इस सोच का, करे देश सम्मान–
मना करें नापाक से, स्वयं खिलाड़ी खेल।

707

रामायण मंचन हुआ, बना वृहद पण्डाल।
आई उसको देखने, जनता बहुत विशाल।
शायद थे उस भीड़ में, राक्षस मित्र अनेक–
क्योंकि अँधेरे में हुई, कन्या एक हलाल।

708

तुम्हें दशहरा शुभ हो भैय्या, जय बोलो हनुमान की।
रक्षा करें तुम्हारी हरदम, राम–लक्ष्मण–जानकी।
आने वाले दशहरे तक, कोई अशुभ तुम्हारा ना हो–
यही कामना है हितेश की, स्वजनों के कल्यान की।

709

महँगाई को बढ़ा रहे हैं, जमाखोर गद्दार।
छापेमारी हुई– बरामद, दालें टनो हजार।
अब दालें सस्ती हो जाएँगी, लेकिन श्रीमान–
खेद यही है बहुत देर से, जागी है सरकार।

710

धरती काँपी डोल उठा नभ, महल दुमंहिले दरक गए।
घायल अनगिन हुए सैकड़ों, लोग काल के ग्रास भए।
छेड़छाड़ प्रकृति से करनी, बन्द करो दुनिया वालों–
नहीं अन्यथा सहने होंगे, हमको नित भूकम्प नए।

711

भ्रष्टाचार विरोधी छेड़ा, मोदी ने अभियान।
मंत्रियों की कुर्सी गई, यू.पी. में श्रीमान।
अच्छा अच्छी बात का, असर हुआ आरम्भ–
शायद आगे आए अब, नेता निष्ठावान।

712

जीते के पति जीत गए हैं, इसमें क्या हैरानी है।
हारे की पत्नी हारी है, यह तो प्रथा पुरानी है।
चलो चुनाव खत्म हो गए, आओ अब मिलकर बैठे–
राजनीति में द्वेष पालना, यह कोरी नादानी है।

713

दिवाली पर जाग्रत रहें सभी इंसान।
हर व्यक्ति संदिग्ध है, यदि नहीं पहचान।
तुरत सूचना पुलिस को, उसकी देओ हितेश–
लगता है जो भी तुम्हें, आतंकी शैतान।

714

भारत-पाक सीरिज को रद्द करे सरकार।
इसे देखने से करे, जनता भी इंकार।
देशभक्त शहीद का, होता है अपमान–
शत्रु के संग खेलते, जब हम क्रिकेट यार।

715

दिवाली पर जाँचकर, लो मिठाई, नमकीन।
घोल मिलावट का जहर, कहीं नहीं दे चीन।
केवल फाँसी की सजा, पाए मिलावटखोर–
जहर बाँटता रहा है, जो जिन्दगियाँ छीन।

716

पग-पग लेते परीक्षा, कलयुग में भगवान।
करें समीक्षा हार की, स्वयं आप श्रीमान।
कोई भी चाणक्य तो, लिया न तुमने साथ-
रहे समझते स्वयं को, चन्दर गुप्त महान।

717

आरक्षण की आग लगी, गुजरात जला है।
इस सुविधा से हुआ किसी का, नहीं भला है।
मंडल और कमंडल ने मारे थे, अनगिन-
बोतल से क्या जिन्न वही, फिर से निकला है।

718

पेरिस में हमले हुए, भारत रहे सतर्क।
बना रहा है विश्व को, आई.एस.आई.एस. नर्क।
सकल राष्ट्र एकजुट रहें, आई.एस.आई.एस. विरुद्ध-
हमला हो आतंक पर, करे न तर्क-कुतर्क।

719

केवल भाषण से नहीं, सुलझ सकेगी बात।
जनता को अब चाहिए, ठोस कोई सौगात।
सांसद हों सक्रिय- करें, अब विकास हित काम-
बीजेपी तब दे सके, समस्याओं को मात।

720

भड़का है नेपाल में, ज्वालामुखी अजीब।
मार रहे हैं मित्र को, बने हैं मित्र रकीब।
भारत के सामान से, लदे रहे ट्रक फूंक-
फोड़ रहे हैं आप ही, अपने हाथ नसीब।

721
न्यायमूर्ति समझते स्वयं श्रेष्ठ विद्वान।
गाय मांस का उचित ही, बता रहे हैं खान।
इनका करे समाज अब, बहिष्कार अविवाद–
जानवर कहकर गाय का, करते हैं अपमान।

722
न्यायमूर्ति बन रहे सर्वश्रेष्ठ विद्वान।
गाय मांस खाना उचित, कहते हैं श्रीमान।
जानवर कहकर गाय को, हर्षित होते मित्र–
सांड यदि कोई मिल गया, कर देगा कल्यान।

723
विश्व समूचा जूझ रहा है, आई.एस. के आतंकवाद से।
जूझ रहा है अपना भारत संसद में आतंकवाद से।
न्याय प्रक्रिया को कहते हैं, बदले की भावना हितेश–
जनता का दिल दुखा रहे हैं, हर मुद्दे पर इक विवाद से।

724
धन्य विधायक और सांसद, स्वयं बढ़ाते अपने भत्ते।
जनता का धन लूट रहे हैं, देश भक्त बनते अलबत्ते।
सेवक हैं जनता के लेकिन, जनता से पूछे बिन सारे–
अपने ही मुँह मियाँ मिट्ठू यह जोड़ा करते अरबे-सत्ते।

725
सांसद जो बाधित करते हैं, देशभक्त इंसान नहीं।
केवल शोर-शराबा करना– सिवा कोई ईमान नहीं।
रोक रहे हैं गति विकास की, भारत की जनता के शत्रु–
इनको जनता भले बख्श दे, बखशेगा भगवान नहीं।

726

जो संसद बाधित करते हैं, इन पर कुछ उपकार करो अब।
खोया है संतुलन मानसिक, इसका भी उपचार करो अब।
रोक रहे हैं गति विकास की, जनता को भी भड़काते हैं–
राजनीति से औ' समाज से, इनका बहिष्कार करो अब।

727

नाबालिग अब नहीं रहा है, निर्भया का अपराधी।
और सभी से कमतर उसको, सजा मिले क्यों आधी।
सबसे ज्यादा किया उसी ने, था जघन्य अपराध–
उसको फाँसी मिले, न्याय प्रक्रिया में हो क्यों व्याधि।

728

चाट रहे थे देश को, आज खुली है पोल।
चेहरे से हट गया है, अब दुष्टों के खोल।
मोदी के आगमन से, मिटा है भ्रष्टाचार–
दीख रहा विपक्ष के, हर नारे में झोल।

729

जनता को ना चाहिए, वादे बीस उधार।
नेता जी को चाहिए, नकद करे व्यवहार।
भूखे को रोटी मिले, नंगे को दो वस्त्र–
प्यासे पर तत्काल हो, पानी की बौछार।

730

गैंग रेप बढ़ रहे निरन्तर और हादसा नित्य नया।
हर दिन घमासान होता है, हंगामा भी रोज़ नया।
भारत की कुंडली में जैसे, राहु-केतु बैठ गये–
लगा रहे है आग निरन्तर, उठा रहे मुद्दआ नया।

731

होते हैं चुनाव साल भर, शेष समय में हंगामा।
राजनीति के नेता फाड़े, इक-दुजे का पाजामा।
भारत की प्रगति से इनको, लेना-देना जरा नहीं-
जनता भूखी मरती- माल उड़ाते हैं मंत्री मामा।

732

काँग्रेस के दर्शन में, जो सच है उसको भी पहचाने।
हर नागरिक की इच्छा है, वह भी सारे सच को जाने।
बँटवारा, काश्मीर समस्या, हिन्दू-मुस्लिम के झगड़े-
जिसने यह सौगात हमें दी, उससे रहें क्यों अनजाने।

733

नेताजी की समझ असलियत, नेताजी के बोलों से।
कालसर्प हैं बड़े भयंकर, देख हटाकर खोलो से।
इन्हें चाहिए केवल सत्ता, सगे न हिन्दू मुस्लिम के-
भ्रमित न होना भैया इनके, जयचंदी तम्बोलो से।

734

अल्पसंख्यक नाराज नहीं हों, इसीलिए कमजोर हैं हम।
देखों अपने ही भारत में, भैय्या कितने चोर हैं हम।
खुफिया तंत्र विफल है अपना, फौजों पर हथियार नहीं-
भाषण आश्वासन दे देकर, सिर्फ मचाते शोर हैं हम।

735

आतंकी हमला भारत में, मित्र नई यह बात नहीं।
हो पठानकोट या दिल्ली, कब होती है घात नहीं।
किन्तु हम अपने ही घर में, अपनों का छल सहते हैं-
पाकिस्तानी हमले पर हम, करते क्यों प्रतिघात नहीं।

736

जो पठानकोट की रक्षा, करते हुए शहीद हो गए।
देश बचाने की खातिर जो, अपनी एक मिसाल हो गए।
सारा देश कर रहा उनको, श्रद्धासुमन हृदय से अर्पित–
देश बचाने को प्राणों की, बलि देकर जो अमर हो गए।

737

जो भी आतंकिया देश में हो कहीं।
मार दो उन सभी को जहाँ हो वहीं।
देश में जो भी गद्दार हैं, शत्रु हैं–
कोई उन पर रियायत, कभी हो नहीं।

738

उन शहीदों को मेरा नमन है हितेश।
प्राण देकर सुरक्षा करी है, विशेष।
जो पठानकोट में हो दिवंगत गए–
उन सभी से बचा अपना भारत स्वदेश।

739

प्रकृति क्रुद्ध हुई है कोहरा, देखो शीश तना है।
आज सड़क पर चलना भइया, दुभर हुआ घना है।
सरदी भी बढ़ रही निरंतर, शीतलहर हावी है–
लगता जैसे बर्फ सरीखा, जड़-चेतन जमना है।

740

रूको नहीं आरंभ करो, यात्रा मंजिल पाने को।
तत्पर रहो शिखर छूने को, ऊपर तक जाने को।
सत्य सभी सपने होंगे, मनचाहा तुम्हें मिलेगा–
इच्छुक है प्रिय मित्र सफलता, तुमको अपनाने को।

741

डसा सपेरा साँप ने, रोया पाकिस्तान।
अपने ही घर में हुआ, हमलावर शैतान।
जब तक हाफिज या मसूद से, हैं आजाद हितेश–
तब-तक मरते रहेंगे, वहाँ रोज इन्सान।

742

बुलेट ट्रेन दौड़ेगी सुनकर, बात बहुत अच्छी लगती है।
भारत भू नेतृत्व करेगा, यह आशा सच्ची लगती है।
लेकिन भूख–गरीबी, बेरोजगारी मिटने की प्रत्याशा–
सुनने में अच्छी है लेकिन, होने में कच्ची लगती है।

743

जनता की अनदेखी करके, बोलो कब तक रह पाओगे।
केवल कोरे आश्वासन से, कब तक उसको बहलाओगे।
जनता जिस दिन जाग्रत होगी, तब पूछेगी प्रश्न अनेकों–
उसकी टेढ़ी नजर हुई तो, कैसे उसको सह पाओगे।

744

फाँसी दो, भई फाँसी दो– देशद्रोही को फाँसी दो।
गैंगरेप के दोषी को भी, चौराहे पर फाँसी दो।
पाकिस्तानी झण्डे को जो, काश्मीर में लहराएँ–
कमलेश तिवारी से पहले, इन सबको भी फाँसी दो।

745

संसद बाधित करने वाले, गति विकास की रोक रहे हैं।
जो कल तक सत्ता समाज की, खून चूसते जोक रहे हैं।
सत्ता छिन जाने के डर से, अब तक उभर नहीं पाए हैं–
निजी स्वार्थ में जनता के धन, और समय को झोंक रहे हैं।

746

नहीं थम रहा दुष्कर्मों का, गैंगरेप का पाँव।
सुधिजन सोचे किस तरह, इसमें हो बदलाव।
अब किशोर भी कर रहे, गैंगरेप, दुष्कर्म–
मात–पिता को दे रहे, हैं अनचाहे घाव।

747

थाने में स्कूल खुला है, नई–नई शुरूआत हुई।
पुलिस दूर कर रही अशिक्षा,यह तो अच्छी बात हुई।
गाँव मिलनपल्ली आसाम का, सबको एक मिसाल बनी–
जहाँ नहीं स्कूल वहाँ के, लिए यही सौगात हुई।

748

सब कहते हैं आतंकी का, धर्म नहीं होता कोई।
तब फिर उसके मारे जाने, पर क्यों कब्र खुदे कोई।
आतंकी की लाश चील–कव्वों को खाने को छोड़ो–
उसके लिए चिता सजाने, की भी जहमत क्यों ढोई।

749

हनुमन्थप्पा जिए देश के हर व्यक्ति की यही प्रार्थना।
हारे मृत्यु जीत हो सैनिक की सबकी है यही कामना।
अंग देने को तत्पर हैं, भारत के सारे नर–नारी–
ईश्वर जीवनदान उसे दें, पूर्ण देश की यही याचना।

750

जेएनयू के देशद्रोह के, अपराधी को फाँसी दो।
आगजनी जो करे देश की सम्पत्ति की फाँसी दो।
पाक को जिन्दाबाद कहे जो, उसको मुर्दाबाद करो–
देशद्रोहियों के सारे पैरोकारों को फाँसी दो।

751

मरा हैदराबाद छात्र जो, कायर था रणधीर नहीं।
लड़ा न जो हालात से अपने, कहते उसको वीर नहीं।
आत्म हनन तो नहीं देशहित, ना हित मरने वाले का–
कानूनन अपराध है यह तो, नैतिकता तस्वीर नहीं।

752

हनुमथप्पा अमर हो गया, मेरा शत–शत उसे प्रणाम।
सियाचिन के हर शहीद को, जन–जन करता आज सलाम।
प्राण दिए पर आन न छोड़ी, भारत माँ की रक्षा में–
ऐसे हर सैनिक का लिखा जाएगा स्वर्णाक्षर में नाम।

753

देशद्रोह के नारे गूंजे, जेएनयू में क्यों जानो।
आरक्षण में लाग लगाई, जिसने उसको पहचानो।
जितने भी गद्दार हैं, जाफर, जयचंद जैसे भारत में–
पहले उन सबको भी फाँसी, देने की मन में ठानो।

754

देशद्रोह है एक तरह से, आरक्षण की आग हितेश।
फूंक रहे सम्पत सरकारी, जनता को दे रहे क्लेश।
तब सरकार टेक कर घुटने, सहमत हो आरक्षण को–
जब पहले वह गिरफ्तार हों, जिनका है अपराध विशेष।

755

आरक्षण की चिंगारी ने, फूँक दिए बाजार–दुकान।
और जला दी पुलिस चौकियाँ, धू–धू कर जल उठे मकान।
आरक्षण के आन्दोलन ने, निगले बीस हजार करोड़–
इसको नहीं समाप्त किया तो, बन जाएगा देश मसान।

756

भारत मुर्दाबाद के नारे, देशद्रोह गर नहीं तो क्या है।
अफजल बरसी का आयोजन, देशद्रोह गर नहीं तो क्या है।
स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति का, नाम दे रहे नेता जिसको–
भारत देश विरोधी नारे, देशद्रोह गर नहीं तो क्या है।

757

मालदा में जो हुआ वही कुछ हरियाणा में भी दोहराया।
दोनों जगह पुलिस चौकियाँ, फूँकी धरना जाम लगाया।
फेल हो गया शासन-सेना, ऐसा तांडव मचा देश में–
धन्य-धन्य यह प्रजातंत्र है, जिसने सारा देश जलाया।

758

भारत में या तो चुनाव हैं, या फिर है धरना आन्दोलन।
राज्य कर्मचारी हों या फिर, अभियन्ता हो शिक्षकगन।
प्रजातंत्र में प्रजा लुट रही, गुंडे जला रहे घर-द्वारे–
आग लग रही चौराहों पर, नारों में डूबा जन-गण-मन।

759

सकल विश्व से आ गए, सभ्य सुसंस्कृत लोग।
भारत में कैसा बना सुखद मिलन संयोग।
वसुधैव कुटुम्बकम् हुआ सार्थक मित्र–
श्री-श्री ने कराया ज्ञान-ध्यान का योग।

760

देशद्रोह का भाषण देने वालों मेरी बात सुनो।
हाथ चढ़े जिस दिन जनता के, मिट जाएगी जात सुनो।
अब भी अगर लगाम न दोगे कट जाएगी जीभ मियाँ–
गद्दारी की सजा मिलेगी, हर सू होगी मात सुनो।

761

जेएनयू को बन्द करो या गद्दारों से जेल भरो।
किंकर्त्तव्यविमूढ़ बनो मत गिरफ्तार गद्दार करो।
उचित नहीं है अधिक समय तक सहना देशद्रोहियों को–
मुट्ठी भर लोगों की गाली, गुफ्तारी से नहीं डरो।

762

लोकतंत्र की हत्या होगी, जेएनयू को अगर छुआ।
गद्दारों की इस भाषा में, देशद्रोह है छिपा हुआ।
इनको माफी मिले न बिलकुल, न्यायालय भी ध्यान करें–
जनता बिलकुल नहीं सहेगी, गद्दारों की हुआ–हुआ।

763

सुख-शान्ति से बीत गया कल, होली का त्यौहार।
किन्तु कहीं पर खून में डूबा, मचा था हा–हाकार।
सहनशीलता नहीं रही है, अब लोगों के बीच–
जिम्मेदार है इसकी मदिरा और मांसाहार।

764

अब किन्नर भी राज करेंगे, खबर आई बंगाल से।
लगता है सारे दल हो गए, पौरुष में कंगाल से।
राज विधानसभा का मंजर, कैसा होगा देखेंगे–
भरी सभा में जब ताली, गूजेंगी हाथ उछाल के।

765

धीरे-धीरे नगर के दूर हुए थे रोग।
बन्द कर दिए थे सभी, सुविधा-शुल्की भोग।
जनता थी मन से सुखी, नेतागण थे नाय–
चला दिया आनन्द पर तबादला उद्योग।

766

महिलाएँ जिद जीत कर पा ही गई प्रवेश।
हाई कोर्ट ने भी दिया, था आदेश विशेष।
पुरुषों की धर्मान्धता– थी आपत्ति व्यर्थ–
शिगनापुर महिलाओं का, मिटा हृदय का क्लेश।

767

प्रत्यूषा को खा गया, बॉयफ्रेंड का रोग।
सदा अनैतिक रास्ते, कष्टों का संयोग।
मिलती है मंजिल अगर, चलते रहो सटीक–
वरना ठोकर पाँव की, बनेगी जीवन भोग।

768

अपनों के हाथों हुए, कत्ल श्री तंजील।
बुझ फरजाना की गई, जीवन की कंडील।
दुष्टों को फाँसी मिले, जनता की है माँग–
न्याय प्रक्रिया में रहे, कहीं न कोई ढील।

769

हत्या पर अखलाक की, मुआवजा अर्द्ध करोड़।
और साहित्यिक सम्मान भी, दिए कई ने छोड़।
हत्या पर नवरंग की, देश रहा खामोश–
साहित्यिक के किसी भी, उठी न पेट मरोड़।

770

बौद्ध धर्म अपना लिया, भीम राव ने मित्र।
बदल गए आस्थाओं के, सारे जीवन चित्र।
त्यागा हिन्दू धर्म को, त्यागे हिन्दू कर्म–
हिन्दू यदि पूजे उन्हें, लगता बड़ा विचित्र।

771

न्यायालय भी डरे-डरे हैं, सत्ता भी किन्नर है।
इसीलिए तो आज कन्हैया, का भी ऊँचा स्वर है।
देश विरोधी लगा के नारे, हीरो बना हुआ है–
किसकी शय पर पूर्ण सुरक्षा में चलता, विषधर है।

772

जनता प्यासी मरे भले ही, मदद केन्द्र की हम ना लेंगे।
जय हो प्रान्तीय सत्ता की, दिखा रही जनता को ठेंगे।
जनता का हित नहीं जरा भी, निजी स्वार्थ की टकराहट है–
एक दूसरे को नीचा, दिखलाने में सब व्यस्त रहेंगे।

773

अपनी पत्नी त्याग कर, पर स्त्री रुचि लेय।
ऐसा व्यक्ति दृष्टि में, है समाज की हेय।
अपनी पत्नी सुधासम– गरल अन्य को जान–
परपत्नी को समझते, मूरख शीतल पेय।

774

दूर योग से रहे कि जिनको ओम शब्द पर आपत्ति है।
भारत के अच्छे कार्यों पर, क्यों उनकी छाती जलती है।
जाने हम क्यों झेल रहे हैं, भारत में भारत के दुश्मन–
दूध पिलाकर नाग पालने, कि अब तक गलती भुगती है।

775

बंटवारे के बाद रोककर, हमने जिनको पाप किया है।
अपने पैर कुल्हाड़ी मारी, यह सब अपने आप किया है।
वो ही आंख दिखाते हैं, अब भूल गए मित्रता पुरानी–
गाँधी, नेहरू, जिन्ना की, तिकड़ी ने यह संताप दिया है।

776

जिन्दाबाद हमारी सेना, जिन्दाबाद सुरक्षा बल।
मार रही है जो आतंकी, तोड़ रही नापाकी छल।
पूरी छूट मिले सेना को, हो सम्मान शहीदों का–
नए आधुनिक हथियारों से, अपनी सेना बने सबल।

777

भारतमाता की जय बोल, या हो जा भारत से गोल।
जाग उठा है सारा भारत, देख आ रहा बजता ढोल।
सावधान हो जाए देश के, जयचन्दी गद्दार सभी–
देश विकास विरोधी नेताओं, की भी हो नाप औ' तोल।

778

हथियारों का डिपो जल उठा, साजिश है या दुर्घटना।
इस पर जाँच कभी भी आए, सिद्ध हुआ लेकिन इतना।
लापरवाही वहाँ बहुत थी, टी.वी. से स्पष्ट हुआ–
नाकाफी संयंत्र और स्टाफ वहां पर था कितना।

779

साइकिल, रिक्शा, ई–रिक्शाएँ, बाँट रही यादव सरकार।
काँग्रेस के यू.पी. में हैं, राज बब्बर जी जिम्मेदार।
कमल फूल को हाथ में लेकर, घूम रहे हैं शाह अमित–
क्या होगा यदि माया जी ने, बाँट दिए कल हाथी यार।

780

पत्थर का जवाब गोली है, समझो मोदी जी श्रीमान।
शाँति की अपील करने से, और भड़क जाते हैं श्वान।
कब तक अपने सैनिक घायल होंगे, पूछ रही जनता–
तुष्टिकरण नहीं त्यागा तो, नहीं बचेगा हिन्दुस्तान।

781
बीस ही केवल देशभक्त हैं, सौ में अस्सी हैं गद्दार।
शठे शाठयम् समाचरेत का, अब सेना को दो अधिकार।
मांसाहारी शत्रु शांति के कपोत खा जाता है–
इसीलिए अब उससे शांतिवार्ता करनी है बेकार।

782
सिद्धू दगा कर गए देखो, सिद्ध हो गया यानी।
तुष्टिकरण में मियाँ भाजपा ने, जिस-जिस की मानी।
उसने ही दी दगा– भाजपा चेती नहीं अभी तक–
ले डूबेगी बनी स्वयंभू, भाजपा को मनमानी।

783
जो विज्ञापन बेच-बेच कर, कमा रहा धन धान।
बेच रहा है वह वास्तव में, भारत का सम्मान।
क्रिकेट में धन को बटोरकर, भी ना हवस मिटी है–
भारतरत्न प्रतिष्ठा का वह, करता है अपमान।

784
नक्सलवादी हर हमले में, सैनिक मरते सदा हमारे।
बारूदी सुरंगें हम क्यों, ढूँढ नहीं पाते हैं प्यारे।
क्यों हथियार आधुनिक अपनी, सेनाओं के पास नहीं हैं–
जंग लगे हथियारों के बल, कैसे सैनिक लड़े हमारे।

785
कहीं जनता मर रही भूख से, कहीं पड़ा सड़ रहा अनाज।
क्या वास्तव में आजादी से, मिला था हमको यही सुराज।
छात्र और किसान कर रहे, आत्महत्याएँ बिना निदान–
बढ़ती महँगाई भी जैसे, उठी भयंकर कोढ़ में खाज।

786

लो चिंकारा हत्या में भी, जीत गया मैं यार।
न्याय– कार्यपालिका सभी पर भारी मम किरदार।
साल अट्ठारह चला मुकदमा, गायब हुए गवाह–
वन विभाग ने साथ दिया तो, जाता कैसे हार।

787

वही प्रश्न है चिंकारा की, हत्या की तो किसने।
सोए जो फुटपाथ पे उन पर कार चढ़ाई किसने।
जहाँ सभी कुछ बिकता है, उस ठौर सवाल यही है–
हत्यारे से सांठ-गांठ कर, उसे बचाया किसने।

788

सड़कों पर या तो गड्ढे हैं, या फिर गैंगरेप व्यभिचार।
गुण्डों की चाँदी हाइवे पर, रोज हो रही मारा-मार।
यू.पी. में अब नहीं नियंत्रण, में कानून व्यवस्था–
इसका बँटवारा होने पर, ही सुधार सम्भव है यार।

789

हाइवे पर दुष्कर्म किया, देख हौंसला गुण्डों का।
कार लुटी कल, आज लुटी बस, देख हौंसला गुण्डों का।
असली आरोपी तो अब तक, पुलिस पकड़ से बाहर हैं–
सपा राज में बढ़ा हुआ है, देख हौंसला गुण्डों का।

790

बनने चला उत्तम प्रदेश जो, बलात्कार प्रदेश बन गया।
गैंगरेप, अपहरण, लूट में, यह स्थान विशेष बन गया।
बिखर गई कानून व्यवस्था, हुआ नियंत्रण से भी बाहर–
यू.पी. का बँटवारा होना, आवश्यक संदेश बन गया।

791

वासु तर्ज पर अगुवा करने, वाला फिर निकला सद्दाम।
पर बच्चों की सूझ-बूझ से, हो गई यह कोशिश नाकाम।
गैंगरेप करने वाला भी, था सलीम बावरिया यार–
क्यों अधिकांश यही देते हैं, ऐसे नीच कर्म अंजाम।

792

दल-बदलु नेताओं की अब, है पौ बारह होने वाली।
कुछ ने सपा को थामा है, कुछ खेल रहे बीजेपी पाली।
सोच रहे हैं ऐसे नेता, अगर बदल लेंगे वह दल तो–
देश भाड़ में जाए, उन्हें मिल जाएगी सोने की थाली।

793

पतंजलि ही पतंजलि है, टी.वी. के विज्ञापन में।
रामदेव ही छाए हुए हैं, बाजारों के जन-मन में।
टा-टा, बिरला के विज्ञापन, सौ में केवल दो दिखते हैं–
पतंजलि के उत्पादों की, धूम है दूर के दर्शन में।

794

स्वाभिमान जागा है शायद, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य सभी में।
छूकर पैर बैठना भू पर, घृणा व्याप्त हो गई सभी में।
पैसे देकर टिकट बेचना, जिसने धन्धा बना लिया है–
स्वत्व बचा था जिनमें उनको, उससे नफरत हुई सभी में।

795

महबूबा ने सच कहा, देश उन्हें महबूब।
जन्नत से आतंक की, साफ करेंगी दूब।
गिलानी, यासीन की, अब न गलेगी दाल–
हिंसक की बन्दूक से, खातिर होगी खूब।

796

ऊब गया है देश, दलों के दल-बदलु नेताओं से।
डूब गया है देश, कोढ़ में खाज बने नेताओं से।
अब पुनः अवतरित हो कोई, सरदार भगतसिंह या सुभाष-
जो छुटकारा दिलवाये देश को, स्वार्थ सने नेताओं से।

797

आवाज तुम्हें देता हूँ मैं, अब आओ मेरे साथ चलो।
संसद में कुर्सी पानी है, लेकर हाथों में हाथ चलो।
यह सारे तथाकथित नेता, करते कुछ है, कहते कुछ है-
जो सांड देश चर रहे उन्हें, अब देनी होगी नाथ चलो।

798

जब-जब लड़की को छेड़ेंगे, लड़के तब-तब झगड़े होंगे।
सम्प्रदाय से सम्प्रदाय के, इसी तरह के रगड़े होंगे।
यह मत समझो जिनकी लड़की, छेड़ोगे वह चुप बैठेंगे-
लव जिहाद जो चला रहे है, उनके टुकड़े-टुकड़ें होंगे।

799

बहुत समय से छेड़ रहे थे, लड़की को शैतान।
परेशान होकर घरवालों, ने फिर किया निदान।
जो कुदृष्टि डाले कन्या पर, ताहि वधे कछु पाप नहीं-
पढ़ लो, सुन लो, गुन लो, कहती रामायण कुरआन।

800

जो शरीफ ही नहीं, शराफत का उससे व्यवहार न कीजे।
मेरी समझ से बाहर है, क्यों उस पर अब तक मोदी रीझे।
जिसने धोखा दिया हमेशा, आतंकी भेजे भारत में-
शठे शाठयम् समाचरेत, उसको अब यह समझा दीजे।

801

सही उठाया कदम, पाक को दिया कड़ा संदेश।
मोदी जी के, राजनाथ के, साथ खड़ा है देश।
वीर सैनिकों तुम्हें बधाई, मन से अभिनन्दन है–
जितनी करूँ प्रशंसा कम है, कहता आज हितेश।

802

फिर गठबन्धन बन गया, नेताओं के बीच।
इक-दुजे की टाँग जो, रहे थे कल तक खीच।
केवल सत्ता के लिए, आज हुए यह एक–
कल तक सत्ता के लिए, लड़े दाँत को भीच।

803

लक्ष्यवेध का मांगते साक्ष्य केजरीवाल।
लोकप्रिय मोदी हुए, इनकी बिगड़ी चाल।
इन्हें चाहिए जाएँ खुद, आतंकी के कैम्प–
जो सबूत यह चाहते, वहाँ मिले तत्काल।

804

गठबन्धन में बँध गए, मौसेरे सब आज।
देश-वेश की छोड़िए, इन्हें चाहिए राज।
सत्तर वर्षों से इन्हें, भुगत रहे हम लोग–
इन पर किया यकीन तो, होय कोढ़ में खाज।

805

कुत्ते जैसे भौंक रहे हों, हाथी के आ जाने पर।
या फिर बिल्ली खम्भा नोचे, राजा से खिसियाने पर।
सपने में भी राजनीति का, ऐसा ही कुछ खेल दिखा–
मर्यादाएँ भंग हुई हैं, फिर चुनाव के आने पर।

806

मर्यादा के नीचे जाकर, बोल रहा है हर नेता।
जन्म कुण्डली प्रतिद्वंद्वी की खोल रहा है हर नेता।
बाहुबली हर अपराधी के, भाव चौगुने दुगने हैं–
किसमें कितना वजन है इसको, तोल रहा है हर नेता।

807

पूछ रहे गद्दार देश के, भागे या भगाए आतंकी।
भाग रहे थे भागने देते, मार गिराए क्यों आतंकी।
हेड गार्ड शहीद हो गया, उसका इनको जरा नहीं दुख–
बहुत दुखी एनकाउण्टर पर हैं, क्या थे इनके यार आतंकी।

808

जाने कब बदलेगी सारी, परिस्थिति भारत बदलेगा।
जाने कब ठेकेदारों के, फंदे से भारत निकलेगा।
जाने कब सपूत जागेगे, राणा और भगतसिंह जैसे–
लाल बहादुर या पटेल कब जन्मेंगे भारत चमकेगा।

809

घूम रहे हैं, चोर मचाते शोर नोटबन्दी विरोध में।
अरबों काला धन है जिन पर, वह सब भी हैं बड़े क्रोध में।
नोटबन्दी वापस मत लेना, मोदी तुम्हें कसम भारत की–
भले खड़े हो जाएँ विपक्षी, गठबन्धन के शतावरोध में।

810

पाँच सौ या हजार बन्दी से लगे हैं कुछ ऐसे झटके।
खुद को ईमानदार कहने वालों के चेहरे लटके।
काले दिल वाले ही इसको, बता रहे काला कानून–
पोल खुली उनकी कालाधन जिन्होंने है अरबों गटके।

811

माथा पीट रहे हैं अपना, कालेधन के कारोबारी।
धीरे-धीरे थम जाएगी, रिश्वतखोरी, चोरबजारी।
समय लगेगा लेकिन जनता, इसकी अच्छाई समझेगी–
पाँच सौ या हजार बन्दी से, खुश है ईमानदार व्यवहारी।

812

पैसे देकर टिकट ना लेना, अगर जरा भी स्वाभिमान है।
चरण चापना नहीं किसी के, अगर जरा भी स्वाभिमान है।
ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य सभी को, जिसने जूता दिखलाया है–
उसके साथ खड़े मत होना, अगर जरा भी स्वाभिमान है।

813

सेना से शत्रु डरते हैं, ममता क्यों डर गईं बताएँ।
क्या भय किस कारण से है, अपने मन की बात सुनाएँ।
क्यों किसलिए समझती हैं वह, भारत की सेना को शत्रु–
चोर की दाढ़ी में तिनके की, लोक कहावत ना अपनाएँ।

814

बैंकों ने भी साँठ-गाँठ की, कालाधन सफेद करने में।
बैंक प्रबन्धक भी दोषी हैं, गद्दारों का घर भरने में।
लाखों और करोड़ों के जो, नए नोट बाहर पकड़े हैं–
लाया कौन कहाँ से आए, जाँच जरूरी है लहने में।

815

सेना पर भी राजनीति, कर रहे आज गद्दार देश के।
शोर मचाते घूम रहे हैं, सारे चोर-चकार देश के।
बैंकों में भी घोटाला है, जनता को यह भी छलते हैं–
भारत की जनता तो खुश है, नेता हैं मक्कार देश के।

816

बिना बात हंगामा करना, पेशा–पेशेवर चोरों का।
संसद को चलने ना देना, लक्ष्य बना है घर फोरों का।
बदले की कार्यवाही बताना, राजनीति की साजिश कहना–
यह मुद्दा बन गया आजतक, गद्दारों, रिश्वतखोरों का।

817

अपने–अपने काम में, हैं सारे मुस्तैद।
नेता–चोर–डकैत सब, क्या रोगी, क्या वैद्य।
नोटबन्दी की नीति के, जो भी हैं गद्दार–
उनको मृत्युदण्ड हो, या आजीवन कैद।

818

नोटबन्दी में देखिए, कैसा हुआ कमाल।
भ्रष्ट बैंक अफसर हुए, सारे मालामाल।
हर छापे में मिल रहे, नए करेंसी नोट–
बैंक सभी खाली पड़े, इसकी हो पड़ताल।

819

रिजर्व बैंक में भी हुआ, शायद खुलकर खेल।
एटीएम खाली पड़े, बाहर रेलम–पेल।
नेता सभी विपक्ष के, खेल रहे नित चाल–
नोटबन्दी की नीति को, कैसे कर दें फेल।

820

मोदी जी को भास नहीं था, बैंकों में गद्दारी होगी।
नोटबन्दी होने से जनता, परेशान कुछ भारी होगी।
आर.बी.आई. जैसी संस्था, में घोटाला हो सकता है–
पी.एम. ने सम्भावना ऐसी, बिलकुल नहीं विचारी होगी।

821

मुझे मिलाकर अस्सी प्रतिशत, भ्रष्ट देश में हैं भैय्या।
कैसे कैशलैस भारत की, पार लगेगी फिर नैय्या।
शायद इस पर मोदी जी ने, सोचा होगा कभी नहीं–
शाकाहारी वह क्या होगा, काट रहा है, जो गैय्या।

822

नमो नमो की नीति सफल, हो गई विपक्षी चित हैं सारे।
ताज्जुब है गद्दार हो गए, नई करेंसी के रखवारे।
कालेधन कुबेर से मिलकर जिस-जिस ने की है बटमारी–
मृत्युदण्ड की सजा उन्हें हो, हैं वह देशद्रोही, हत्यारे।

823

चलो सफल हो गई नीति यह, जनता को भी लाभ मिलेगा।
कालाधन अब नहीं रहेगा, श्वेत शुभ्र–धन कमल खिलेगा।
नतमस्तक हो जाएँगे सब, जिसने चोरबजारी की है–
भ्रष्टाचार नहीं होगा अब, न्याय नीति से कार्य चलेगा।

824

उत्तर को उत्तम प्रदेश, यदि तुम्हें बनाना है भैया।
गठबन्धन के हाथों अपनी मत कटने देना गईया।
आरक्षण का नारा देकर, लुभा रहे हैं जो प्यारे–
उनकी बातों में मत आना, कर देंगे सबकुछ ढईया।

825

इस चुनाव में अच्छे-अच्छे नेताजी नाकाम हो गए।
किसी बात पर रुष्ट हुए तो, रामदेव भी बाम हो गए।
दल-बदलु सब नेताओं के, भाव चढ़ गए आसमान पर–
जो सज्जन निःस्वार्थ व्यक्ति थे, वह सारे बेदाम हो गए।

826

किसकी करें कामना जय की, किसको विजयी भव: कहो।
जो भी होगा ठीक ही होगा, तुम क्यों चिन्ताग्रस्त रहो।
मतदाता हो– इस चुनाव से उस चुनाव तक पूछ न होगी–
जो भी जीता उसको भईया, पाँच वर्ष के लिए सहो।

827

उसने तुमको दिया न कुछ भी, मत सोचो यह भी कुछ देगा।
अब अगले चुनाव से पहले, कोई न तुमको पहचानेगा।
राजनीति भी गांधारी है, नेता हैं धृतराष्ट्र सरीखे–
रेवड़ि बाँटेंगे अपनों को, तुमको नहीं कोई पूछेगा।

828

जातिगत संघर्ष जला देंगे घर–आँगन।
वैमनस्य की आग फूँक देंगी तन–मन–धन।
हिन्दू–मुस्लिम मिल–जुलकर यदि रहें धरा पर–
पृथक्–पृथक् दोनों छू सकते हैं नीलांगन।

829

कब आएगी शर्म हमारे नेताओं को।
कब तक पिटने देंगे अपनी सेनाओं को।
जनता पूछ रही है कोई तो जवाब दे–
कब तक सजदा होगा, मुस्लिम आकाओं को।

830

आतंकी और नक्सली पर, अब कसी जाए पूरी नकेल।
पत्थरबाजों पर गोली हो, तब ही पत्थर का रूके खेल।
अपशब्द बोलना काफी है, आवश्यक ना कोई प्रमाण–
जो देशद्रोह की बात करे, उस विद्रोही को करो जेल।

831

मौसेरे-मौसेरे भाई बिखर गए वह दाँव चलाया।
देश विकास विरोधी–सभी विपक्षी को दर्पण दिखलाया।
हुआ सुनिश्चित भारत भाग्य, सुरक्षित है मोदी हाथों में–
भ्रमित चकित यह देश रह गया, ऐसा धोबी पाट चलाया।

832

भारत माँ के अंतर्मन में अब बिलकुल भी नहीं क्लेश है।
ऐसा सुत जन्मा है, जिसके लिए सर्वोपरि देश है।
सभी दिशाएँ जान गई हैं, भारत की खोई ताकत को–
मोदी-मोदी विश्व कर रहा, मोदी में कुछ तो विशेष है।

833

उलटा-सीधा बोल रहे जो, उनकी जीभ काट ली जाए।
स्वतन्त्रता की अभिव्यक्ति की परिभाषा भी बदली जाए।
क्यों हारी या कैसे हारी, टीम इण्डिया पाक शत्रु से–
इसकी भी तो सी.बी.आई. इन्क्वायरी कराई जाए।

834

पूँजीपति बने हैं जब से वामपंथियों के सम्बन्धी।
दौड़ तभी से लगा रहे हैं, सत्ता के पाने को अंधी।
लेकिन जनता मूर्ख नहीं है, समझ गई इनके मंसूबे–
स्वयं धनिक बन रहे, दे रहे धनवानों को गाली गंदी।

835

गद्दारों की खैर नहीं है, आतंकी भी सहम गए हैं।
गाली देने वालों के भी, दूर सभी हो वहम गए हैं।
हाथ उठा तो हाथ कटेगा, गाली दी तो जीभ कटेगी–
समझ गए हैं सभी राक्षस, दिखे माँगने रहम गए हैं।

836

टिकी हुई है अर्थ पर, आज हमारी अर्थ।
सन्तों के उपदेश भी, सभी हो गए व्यर्थ।
अब तक जो देखे नहीं, या ना सुने हितेश–
चलती दुनिया देख लो, होते सभी अनर्थ।

837

मंत्रिमंडल का हुआ दिल्ली में विस्तार।
कुछ के आगे हो गए, मोदी जी लाचार।
किया धरा कुछ भी नहीं, खा-पीकर पगुराए–
राज्यपाल बन जाएँगे, वह मंत्रि बेकार।

838

भाई भतीजावाद के रहे जो सख्त खिलाफ।
कर अपने गोदाम का, रहे हैं कूड़ा साफ।
बीजेपी की मोहर हो, पीठ संघ का हाथ–
ऐसे सब मंत्री बनें, खून हुए सौ माफ।

839

डाल रहे हैं, मूर्ख सभी, सरकारी कामों में व्यवधान।
आने वाले कल की अच्छाई से, हैं बिलकुल अनजान।
जी.एस.टी. या नोटबन्दि से, अर्थव्यवस्था सुधरी है–
अतिशीघ्र भारत की विश्वगुरु जैसी होगी पहचान।

840

काश्मीर से अन्य प्रान्त की भाँती हो व्यवहार हितेश ।
किसी तरह की भी क्यों उसको दी जाये सुविधायें विशेष।
पाकिस्तान चले जाये वह जो भी होते हो नाराज–
वर्तमान में बातचीत से नहीं सुलझ सकता यह कलेश।

841

यूँ तो जीत सुनिश्चित थी पर, अपनों की भी कमी रही।
बीजेपी सांसदों के अंदर, कर्मठता में नमी रही।
वोट डालने भी ना निकले, बहुसंख्यक नेता अभिमानी–
कुछ विरोधियों से मिल बैठे, बर्फ कहीं पर जमी रही।

842

घूम रहे हैं, चोर मचाते, शोर नोटबन्दी विरोध में।
अरबों काला धन है जिन पर, वह सब भी हैं बड़े क्रोध में।
नोटबन्दी वापस मत लेना, मोदी तुम्हें कसम भारत की–
भले खड़े हो जाएँ विपक्षी, गठबन्धन के शतावरोध में।

843

लेकिन अब पहचान हुई गद्दारों की।
राजनीति में घुसे हुए हत्यारों की।
पृथ्वीराज सी भूल नहीं अब दौहराना–
सजा मिले सबको उनके किरदारों की।

844

अब विजय मिली है तो उसका उपयोग करो।
शक्ति का सिंहासन का सदुपयोग करो।
जनता ने अपना तन मन तुम पर बारा है–
जनहित में तुम भी नित्य नवीन प्रयोग करों।

845

अपने मन की कह चुके बहुत सभी ने सुन ली।
जो भी बात कही तुमने सभी देश भर ने गुन ली।
अब जनता की भी बात सुनो मोदी नरेन्द्र–
जिससे जन जन को लगे सही सत्ता चुनली।

846

कल तक जितनी भी रही उपेक्षित प्रतिभाऐं।
होकर निष्पक्ष करो हल उनकी दुविधाऐं।
अब पक्ष पात का खेल न हो मंत्रलय में-
हों सम्मानित अब सबकी उचित अपेक्षाऐं।

847

सत्ता पा कर हो अहंकार की बात नहीं।
हो रही देश में सोचो क्यों बरसात नहीं।
राजा का है कर्तव्य सुखी सब रहे प्रजा-
ओझल कर देना स्वदेश हालात नहीं।

848

जल जीवन है इस पर केवल भाषण ही होते है।
वातानुकूलित कमरों में सब नेता सोते है।
हम तालाब नहीं खुदवाते हैं वाँछित क्षेत्रों में-
कर प्रलाप जल की आवश्यकता पर रोते है।

849

बरखा से पहले तालाब अगर निर्मित हो जाये।
तो वह बरखा की बूँदों से सारे ही भर जाये।
अपने अपने क्षेत्र में सांसद नल भी एक लगा दे-
तो पानी की कमी कमी का गीत नहीं हम गाये।

850

सत्ता के गलियारों में यह खेल हुए है काफी।
लूटा दिये है सम्मान पदम्श्री ले बदले में टाफी।
खून हो गया था तब सारे नेताओं का गन्दा-
आवश्यक है इन्हें पिलाई जाये हर दिन साफी।

851

अंहकार में तने रहे जो वह चुनाव में हार गये।
जो विनम्र थे झुक कर दोहरे हुए पहन कर हार गये।
उखड़ गये वह पेड़ जड़ो से आंधी में जो तने रहे-
लचक गये जो उन पर तूफानों के खाली वार गये ।

852

बादल की कर रहे प्रतिक्षा नंग धड़ंगे बच्चे।
पानी ना मिलने से अमुआ टपक रहे हैं कच्चे।
क्यों बादल नाराज हो गया आसमान क्यों रूठाँ-
पूँछ रहे हैं प्रश्न स्वयम् से सारे सज्जन सच्चे।

853

लूट रहे थे जो भारत को जनता ने दुत्कारा।
लेकिन भैय्या धोखा मत खा जाना तुम दोबारा।
तरह तरह के लगा मुखौटे वह सम्मुख आयेंगे-
उनकी बातों में आये तो देश लुटेगा सारा।

854

स्वागत श्री निशंक आपका धन्य हुआ मंत्रालय।
अब वांछित के लिए जुटायेगा साधन मंत्रालय।
चाटूकार या अवसरवादी का स्थान न होगा-
सत्यनिष्ठ की हर अपेक्षा पूरेगा मंत्रालय।

855

रात-रात भर तैयारी के बाद सुबह को बरसा बादल।
बजने लगी टीन के ऊपर वर्षा की बूँदों की छागल।
निकल पड़े है घर से बच्चे वर्षा का आनन्द उठाने-
हर जवान बुढ़े मानस की हुई खुशी से आँखे छल छल।

856

तनमन को अब मिलेगी राहत बेपनाह तीखी गरमी से।
झुलस रहे थे वृक्ष मिलेगा जीवन मौसम की नरमी से।
बार बार कर रहे प्रभु का धन्यवाद सज्जन सन्यासी-
वर्षा ना होने पर क्या क्या सोच रहे थे मनमर्जी से।

857

वर्षा की बूँदों में आजा आकर जरा नहा कर देख।
बालापन का लुत्फ है यह भी इसको जरा उठाकर देख।
नाव बना कागज की प्यारे बचपन की यादों में खो जा-
और वही फिर नाव यार नाली में जरा बहा कर देख।

858

आ गयी बारिस लो मन भावन हुआ मौसम।
घटा काली मेघ बरसे धरा पर छम छम।
खिल उट्ठे है बाल युवकों और बूढ़े मन-
बन्द हो जायेगी अब लू लपट की सरगम।

859

जब तक रिश्वत चोर बजारी सत्ता पर हावी है।
तब तक उसकी पूछ न होगी जो भी मेधावी है।
अवसर वादी चरण चाप कर सम्मानित होते हैं-
प्रतिभाओं की योग्यताओं की अन्धकार भावी है।

860

सत्ता बदल गयी है लेकिन अफसर वही पुराने।
छोड़ नहीं पाये हैं पिछली आदत को दिवाने।
एक अकेला मोदी कैसे बदल सकेगा उनको-
तेरा क्या और मेरा क्या की भाषा जो पहचाने।

861

बहुत दिनों के बाद मिला है लोह पुरूष गृहमंत्री।
शीघ्र खंगाली जायेगी भ्रष्टों की जीवन पत्री।
काश्मीर की जटिल समस्या हल हो जायेगी-
देख रहा है गहन दृष्टि से शुभ मुहुर्त को तन्त्री।

862

तुम आते हो लगता है आँगन में फैल गयी खुशबू।
तन मन के करीब से आकर जैसे टहल गयी खुशबू।
बीत गयी गई गर्मी की छुट्टी शुरू हो गई बरसातें-
जाने कितनी और प्रतिक्षा यार करायेगी खुशबू।

863

वर्षा हुइ छमा छम देखो भीग गया तनमन आँगन।
पेड़ों पौधो बेलो की पत्ती ने पाया नव जीवन।
गरमी से छुटकारा होगा आम मिलेगे खाने को-
ब्रच्चे बूढ़े युवक युवतियाँ विहँस मनायेगे सावन।

864

अपने को पहचान गया जो सर्वोत्तम ज्ञानी है।
आत्म निवेदन आत्म सुबोधन करना विद्वानी है।
नापतोल जो सबकी करता घूम रहा धरती पर-
उससे बड़ा न कोई मूरख और न अभिमानी है।

865

काली घटा घुमड़ कर आयी लौट गयी बिन बरसे।
प्यारे बच्चे रहे ताकते तन तरसे मन तरसे।
यह कैसी लीला है कैसी अरे विधाता मौन-
कहीं जलाशय सूखे रह गये कहीं भरा भर हरसे।

866

निर्मल शीतल सुविधाओं से भरा बजट है यार हितेश।
रोजगार महिला स्वावलम्बन साथ रहा है मुख्य निवेश।
जन जन को सम्पन्न देश को स्मृद्धि देने वाला -
कर दाताओं की राहत का भी रखा है ध्यान विशेष।

867

आदत है विपक्ष की अबतक करता आया सदा विरोध
लेकिन देश विकास राह में पैदा करें नहीं अवरोध।
जनादेश स्पष्ट दिया है जनता ने नेताओं को-
इसके यदि विपरीत चले तो जनता का झेलेंगे क्रोध।

868

महिला सीतारमन निर्मला देश की नेता बेमिसाल है।
बहीखाता जो पेश किया है उसमें बुद्धि का कमाल है।
मोदी की चाण्क्य नीति का देश विदेश मानते लोहा-
संसद में गृह और वित्तमंत्री का भी पूरा जमाल है।

869

अमितशाह में झलक रही है श्री पटेल की सी प्रतिभा।
वल्लभ भाई सी दहाड़ है मुख पर भी है बों ही आभा।
कल तक जो भी घुटा घुटा सा वातावरण देश में था-
अर्जित कर लेगा मंत्रालय पहले जैसी ही शोभा।

870

कल तक गृहमंत्रालय जैसे सोया पड़ा हुआ था।
इसी लिए आतंकवाद का झण्डा गढ़ा हुआ था।
जल्दी ही अब काश्मीर की नापतोल भी होगी-
सूर्य ऊगेगा वहां जहां अधियारा पड़ा हुआ था।

871

आसमां पर घर बनाने जा रहे हैं।
विश्व में शोहरत कमाने जा रहे हैं।
धरा तो संभली नहीं इन दिग्गजों से-
आसमां पर हक जमाने जा रहे हैं।

872

काम किसी भी दफतर में हो तेरा क्या और मेरा क्या।
काम किसी भी स्तर पर हो तेरा क्या और मेरा क्या।
चाहे जितना जोर लगा लो जितने चाहे घोड़े खोलो-
इस युग में तो ना बदलेगा तेरा क्या और मेरा क्या।

873

हर बेटे की इच्छा होती चले बाप के ही कदमों पर।
और बाप भी यही चाहता बेटा निकले उस से बढ़कर।
इसी लिए चाहे हर मंत्री बेटा एमएलसी बन जाये-
दोनों मिलकर छा जायेगे फिर प्रदेश की राजनीति पर।

874

अपने मन की बात सुनाकर लूट रहे हो जयकारा।
उसकी भी तो सुनो कि जो है घोर उपेक्षा का मारा।
अन्धों ने कल तक बांटी थी अपनों को ही रेवड़ियाँ-
अब कुछ ऐसा करो कि पहले जैसा ना हो दोबारा।

875

बाप पार्टी में दिग्गज है बेटा एमएलए अभिमानी।
इसीलिए लाईसेन्स मिल गया उसको करने को मनमानी।
सरकारी कामों में बाधा अधिकारी पर दे दनादन-
जनता सोच रही है जाने, अब किसकी होगी कुर्बानी।

876

एक गज़ल लिखकर बेटी पर शायर का सम्मान हो गया।
पचहत्तर चौपदियाँ लिखकर भी हितेश अनजान हो गया।
भेदभाव की राजनीति को अगर नहीं बदला तो सुनलो-
क्या होगा गर इस कारण से कुपित अरे भगवान हो गया।

877

सभी मदरसों की खंगाल हो तुरत और तत्काल अभी।
आतंकी शिक्षा के घर है एक नहीं दो चार सभी।
इससे पहले बने कोबरा इनमें शिक्षित आतंकी-
तुरत कुचल दो उसके फन को बच सकता है देश तभी।

878

आबादी बढ़ रही निरंतर सोई है सरकार हितेश।
बहुसंख्यक होने वाले हैं आतंकी किरदार हितेश।
जनसंख्या कानून नियंत्रण अब तक नहीं बना पाये-
यह जागेंगे उस दिन जिस दिन पढ़ेगी इन पर मार हितेश।

879

रात रात भर बरसे बादल उजली उजली हुई है भोर।
ताल तलैया उतराये हैं दादूर मचा रहे हैं शोर।
आम रसीले मीठे जामुन की बहार अब आयेगी -
गरमी से अब राहत होती जंगल में नाचेंगे मोर।

880

भर जायेगे चैन्नई में भी ताल तलैया इस वर्षा में।
धरती प्यासी नहीं रहेगी कहीं जरा भी इस वर्षा में।
नहीं बने तालाब जहां पर रहे सांसद मंत्री सोते-
जन जीवन बस वही तरसता रह जायेगा इस वर्षा में।

881

मेघ गंगन में आये हो तो मेरे आंगन बरस के जाना।
अपनी बूंदों से इस प्यासी धरती का तन परस के जाना।
भीषण गर्मी लपट लुओं से एक मात्र हो तुम्हीं सहारा-
अरी घटाओं खूब बरसना हमें छोड़ मत तरस के जाना।

882

जनता देख रही है जो सदनों में बाधा डाल रहे हैं।
जो भारत विकास की गति की धीमी करते चाल रहे हैं।
पहले भी यह किया इन्होंने जिसकी सजा मिली है इनको-
राजनीति में शून्य हुए अब नोंच शीश के बाल रहे हैं।

883

आतंकी अपनी हरकत से बिलकुल बाज नहीं आयेगे।
हारा पाक तो यह रोयेगे भारत हारा जश्नाऐंगे।
अमित शाह तुम लौह पुरूष हो वल्लभाई सा निर्णय लो-
यह तब मानेंगे जब पत्थर के बदले गोली खायेंगे।

884

देश तुम्हारे साथ खड़ा है अमितशाह तुम नहीं अकेले।
काश्मीर में लगने मत दो अब तुम गद्दरों के मेले।
अब अलगाववादियों को भी देश निकाला या फांसी हो-
फौजें भी हिसाब चुकता ले जिन्होंने अब तक पत्थर झेले।

885

गृहमंत्री व पी.एम. दोनों ही थोड़ा सक्रिय हो जायें।
धीरे धीरे दृढ़ कदमों से अपने सारे वचन निभाऐं।
आड़ मदरसों की लेकर जो पाल रहे हैं आंतकी-
देश के बाहर जाने का अब उन्हें रास्ता तुरत दिखाऐं।

886

न्यायपालिका कांग्रेस के गाली देने से डरती है।
मांग जमानत कुछ हजार की इसीलिए मुक्ति करती है।
कई करोड़ के घोटाले में सिर्फ जमानत कुछ हजार की–
न्यायपालिका से जो आशा कभी नहीं थी वह करती है।

887

जब जरूरत थी, नहीं आया कोई हमदर्द जाँ।
ढूढ़ते फिरते हैं, मुझको अब जमीनों आसमाँ।
यही सच हैं गुमशुदा की सभी करते हैं तलाश–
और जो मौजूद हैं रखते है उनसे दूरियाँ।

888

हारे न्यूजीलैंड से अपने श्री विराट।
पूछ रहा है देश क्यों खड़ी हो गई खाट।
एक एक रन बना कर क्यों दोनों आउट हुए–
दोनों शतक बनायेंगे था विश्वास अकाट।

889

आप क्यों नाराज है इसका पता कुछ तो चले।
किस लिए क्यों बन्द कर बैठे हैं सारे सिलसिले।
मैंने कुछ चाहा नहीं मांगा नहीं कुछ आपसे–
यह बताये मुझसे नजरों को बचाकर क्यों चले।

890

अपराधी मैं हो गया बात न मानी तोर।
अपनी ही सम्पत्ति का बन बैठा मैं चोर।
गूढ़ बात का क्यों नहीं समझ रहे तुम अर्थ–
करो वार्ता बैठकर व्यर्थ करो मत शोर।

891

जर जमीन जोरू बने झगड़े का आधार।
इस कारण सम्बन्ध में पड़ती सदा दरार।
रिश्तों पर क्यों हो गया हावी धन का लोभ-
पिता पुत्र भाई बहन इस पर करें विचार।

892

धन सम्पत सब व्यर्थ हैं जीवन के अनुबन्ध।
है महत्व सबसे अधिक सत्यनिष्ठ सम्बन्ध।
काम क्रोध मद लोभ का भले करो मत त्याग-
किन्तु बात वह मत करो जिसमें हो दुर्गन्ध।

893

राजनीति रिश्ते नातों में होना सचमुच दुखदाई है।
कल तक जहां धूप थी उज्जवल काली घटा वहां छाई है।
मीठे मीठे से उलहाने बदल गये है व्यंग बाण में-
सम्बन्धों के अर्थ व्यर्थ हो गये हवा कैसी आई है।

894

रत्नाकर बन जिये बहुत दिन तुलसीदास अब तो बन जाओ।
लिखा बहुत श्रृंगार विरह पर अब श्रीराम भजन गुणगाओ।
कविता गज़लें लिखना छोड़ो रचो ग्रन्थ अब रामायण सा-
साहित्यिक संसार लोक में अपना नाम अमर कर जाओ।

895

चार पहर बरसा है बादल।
गांव शहर में है जल ही जल।
बूंद बूंद को जो व्याकुल थे -
पानी से हो रहे है विकल।

896

भूल गये बो जिनकी यादें बन हिचकी अक्सर आती थी।
तरस गया हूँ उस पाती को जो संदेशा शुभ लाती थी।
दीवाली हो या कि दशहरा एकाकी त्यौहार हो गये-
पहले इन सब त्यौहारों पर भीड़ सुहानी जम जाती थी।

897

कहीं कहीं पर बाढ़ है भीषण गिरी हैं कई इमारत।
चीन और नेपाल का पानी भुगत रहा है भारत।
प्रभु की लीला नियम अनोखे कोई समझ न पाया-
जो जल संकट को रोते थे अब हैं जल से आहत।

898

निष्ठा या विश्वास यहां क्या ढूंढ रहे हो भैया।
पुनर्विचार करो तुम अपनी इस तलाश पर भैया।
कलयुग में यह शब्द किताबों में शायद मिल जायें-
किन्तु आचरण में अब मिलना सम्भव नहीं है भैया।

899

मेरा जो अपमान करोगे मैं वह भी सह लूँगा।
मोड़ा है मुख सदा हवा का अब संग में बह लूँगा।
तुम से कोई गिला शिकायत नहीं करूँगा लेकिन-
मुझको जो कुछ कहना होगा ईश्वर से कह लूँगा।

900

प्रजातंत्र में न्याय और अन्याय सिर्फ सत्ता की इच्छा।
हानि लाभ यश अपयश सब कुछ मिलता है सत्ता की इच्छा।
रामायण की वह चौपाई जिसमें सब विधि हाथ लिखा है-
प्रजातंत्र में नही प्रभावी है केवल सत्ता की इच्छा।

901

केवल अपनों अपनों को ही अगर रेवड़ी बांटोगे तुम ।
जो सुपात्र है उन सब ही का नाम अगरचे काटोगे तुम।
सच मानो फिर जन्म में अगले तुम भैया धृतराष्ट्र बनोगे-
फिर कैसे इस भरी भीड़ में अपनों को ही छांटोगे तुम।

902

राजनीति में नीति नहीं है बस केवल आपाधापी है।
जिसकी लाठी भैंस उसी की क्या इतना सच नाकाफी है।
जितने दल है उससे से ज्यादा दलबदलु नेता है उनमें-
उसके भाव बहुत है जिसने हर दल की चौखट लांघी है।

903

हार गये है जो चुनाव तो बना दिया है उन्हें गवर्नर।
देश उन्हीं का राज उन्हीं का जो भी है सत्ता के गिरधर।
जनता की जनता के द्वारा जनता की सरकार नहीं है-
कोई दल हो राजनीति में करता है कोरा आडम्बर।

904

बदले की कार्यवाही बताकर जो मुहँ से विष उगल रहा।
उससे पूछो किस बदले की कार्यवाही की बात कर रहा।
जिसने जो भी किया है उसकी जवाब देहि करनी ही होगी-
बदले की क्या बात नियम से कार्यवाही कानून कर रहा।

905

पुनर्वास हो हर पंडित का उसके अपने काश्मीर में।
अब उनकी हो पूर्ण सुरक्षा हर प्रकार से काश्मीर में।
यह घोषणा करें गृहमंत्री होकर निडर देश के हित में-
अगर एक भी पंडित मारा बीस मरेंगे काश्मीर में।

906

उसे जेल में डालो जो भी भू माफिया हुआ है घोषित।
उन सब की वापस जमीन हो जो किसान भी रहे हैं शोषित।
जो भी उसके साथ रहे हैं उन सब की भी नापतोल हो-
प्रतिबन्धित वह दल हो जो भी अब तक रहे है उसके पोषित।

907

मैंने जिसके साथ किया है जो भी वह मैं ही भुगतूँगा।
अन्य किसी को दोष न दूँगा जिम्मेदारी खुद पर लूँगा।
मैं उनमें से नहीं जो अपनी करनी निर्दोषों पर थोपे-
होनी हो या अनहोनी हो कभी पलायन नहीं करूँगा।

908

बढ़ता देख तनाव लग रहा युद्ध कभी भी हो सकता है।।
अमेरिका-ईरान कभी भी धीरज अपना खो सकता है।
विधवा महिला भूखे बच्चों की संख्या फिर बढ़ जायेगी-
धरा और आकाश विश्व भी खून के आँसू रो सकता है।

909

मैं क्या हूँ मुझसे मत पूछो मेरी उपलब्धी को देखो।
मेरे क्रियाकलाप टटोलो मुझको प्राप्त लक्ष्य को देखो।
चाटुकारिता नही करूँगा अवसर वादी नहीं रहा हूँ-
करलो चाहे घोर उपेक्षा मुझको देखो या मत देखो।

910

तत्कालीन गृहमंत्री ने महामहिम श्री राज्यपाल ने।
अटलबिहारी वाजपेयी की घोर उपेक्षा की दोनों ने।
इन्हें हटा कर इनके पद से मोदी जी ने उचित किया है-
अटल समर्पित पुस्तक का जो नहीं विमोचन किया इन्होंने।

911

मौत जैसी नींद में सोता है जब भी आदमी।
बेखबर हो होश को खोता है जब भी आदमी।
भोर में उसको जगाता है पिता परमात्मा-
और देता है खुशी रोता है जब भी आदमी।

912

तुम धरा पर आये हो कुछ कर्म करने के लिए।
और आपद्धर्म में भी धर्म करने के लिए ।
प्राप्त करने के लिए तुम लक्ष्य को रूकना नहीं-
पॉव सौंपे हैं प्रभु ने तुम्हें चलने के लिए।

913

चिन्ता की चिन्ता नहीं करिये मित्र हितेश।
कर्म और कर्त्तव्य पर दीजे ध्यान विशेष।
जीवन जो यह मिला है युद्ध क्षेत्र है मित्र-
हार जीत सोचे बिना युद्ध करो अनिमेष।

914

सिर्फ अपने ही लिए मत हर घड़ी चिन्तित रहो।
मार्ग पर कर्त्तव्य से चलने से मत वंचित रहो।
तुम करो चिन्ता जगत में दीन दुखियों की हितेश-
तुम्हारी चिन्ता करेंगे राम तुम निश्चित रहो।

915

जगत में उपकार करना श्रेष्ठ उत्तम धर्म है।
सार गीता का यही है वेद का यह मर्म है।
उनको दो सामर्थ से अपनी जो वंचित है हितेश-
जो भी परहित में किया सच्चा वही सत्कर्म है।

916

मेरा भारत देश महान मेरा प्यारा हिन्दुस्तान।
सफल हो गया पूर्ण रूप से चन्द्रयान अभियान।
देख रही है सारी दुनिया अब भारत की ओर-
हर भारतवासी को इस पर आज हुआ अभिमान।

917

बेटा बोला पापा पापा मेरी गुल्लक ले लो।
उसमें जितने भी पैसे हो उन्हें बैठकर गिन लो।
टिकट दिलाओ मुझको तुम मैं चन्द्र गृह जाऊँगा-
अगर कम पड़े पैसे तो कुछ अपने शामिल कर लो।

918

उन्हें सुरक्षा देने का कोई औचित्य नहीं है।
जिनका अपने पद पर अब कोई अधिपत्य नहीं है।
साधारण नागरिक हो गये है जो पूर्व हुए है-
जनता में अब जनता बनकर रहे कि सत्य यही है।

919

जो आरोपी घोटालों के उन्हें सुरक्षा कैसी।
लूटमार कर जिन्होंने की है देश की ऐसी तैसी।
वापस उनकी सभी सुरक्षा हो फिर चले मुकदमा-
उसको वैसे ही भुगताओं जिसकी करनी जैसी।

920

घड़ी दो घड़ी सही मगर खुशबू से महक उठा आंगन।
रिमझिम रिमझिम करता जैसे कभी बरसता है सावन।
बच्चों ने जब जब पूछा है अपने मातपिता का हाल-
महक उठा है तब फूलों सा जीवन का सूखा उपवन।

921

काँवड़ लेकर चले भक्तजन बोले जय शिव शंकर की।
करी नहीं परवाह किसी ने सड़क के काँटे कंकर की।
जलाभिषेक किया भक्तों ने हर हर महादेव कहकर-
सबका ही कल्याण करें-जय कामारि प्रलयंकर की ।

922

मनचाही तब ही होती है जब मन में विश्वास जगे।
भक्ति भाव से राम भजन के शब्द सभी हो प्रेम पगे।
श्रद्धा हो तो राम सभी के मन की वाणी सुनते हैं-
आधे मन से माथ नवाने वाले रहते ठगे ठगे।

923

तुमने जब पूछा नहीं कुछ मैं ही फिर कुछ क्यों कहूँ।
अब तो बेहतर है कि रक्खूं जप्त कजदन चुप रहूँ।
जो पसन्दे गुफत्गू करते नहीं मुझसे हितेश-
इस लिए मैं साथ उनके नाव में बैठूँ बहूँ।

924

प्यार राधा ने किया श्रीकृष्ण से।
लगी मीरा की लगन श्रीकृष्ण से।
सूर ने भी वन्दना की कृष्ण की-
तू भी आत्मालीन हो जा कृष्ण से।

925

अतिवृष्टी अनावृष्टी सभी ईश्वर की माया है।
कहीं सूखा कहीं पर बाढ़ उसका ही रचाया है।
मनुज के हाथ में कुछ भी नहीं वह तो खिलौना है-
कृपा ईश्वर की हो तब ही कहीं पर धूप छाया है।

926

परशुराम का भाला चमके हनुमान की गदा उठे।
देश द्रोहियों को फांसी की चतुर्दिशा से सदा उठे।
भारत के सच्चे सपूत अब जागृत और सचेत रहे-
उसे फोड़ दो जो मोदी की तरफ द्वेष की आँख उठे।

927

फांसी दो मोदी की हत्या साजिश के सब दुष्टों को।
गोली मारो टुकड़े टुकड़े गैंग में शामिल भ्रष्टों को।
देश निकाला दो उन सब को जो भारत के दुश्मन है-
दूर करो जल्दी से जल्दी भारत माँ के कष्टों को।

928

धीरे धीरे जिन्दगी के पृष्ठ खुलते जा रहे हैं।
आँसूओं में भ्रम संजोय थे जो घुलते जा रहे हैं।
हो गयी है नयी सम्बन्धों की परिभाषा हितेश-
हम पुरानी मान्यताओं पर ही चलते जा रहे हैं।

929

बदजुबान जो भी नेता है उनकी सजा मुकर्रर हो।
मानहानि के प्राविधान से नहीं जरा भी कम तर हो।
लोकसभा में बोल अनर्गल संसद का अपमान समझ-
ऐसा नेता सहन नहीं हो संसद के भी बाहर हो।

930

आना अच्छा लगता है पर जाना भी लाचारी है।
इस अवसर पर हर व्यक्ति का हो जाता मन भारी है।
व्यवसायिक या पारिवारिक बन्धन होते जीवन में-
मजबूरी के आगे भैया मन की इच्छा हारी है।

931

बाढ़ भी आकर चली गयी है बाढ़कोष भी निबट गया।
अरबों रूपया साल तिरेसठ के अन्दर ही सिमट गया।
बाढ़ का आना बन्द हुआ ना और कोष भी चालू है-
पता ना चलता बाढ़कोष कब किस रपटे पर रपट गया।

932

पत्र फरवरी का जौलाई में चेती सत्ता सरकार।
अब रिपोर्ट के लिए हो रही उस पर छानबीन बेकार।
प्रासंगिकता उस चिट्ठी की अब तो कुछ भी नहीं हितेश-
शायद इसे लाल फीता शाही कहते हैं मेरे यार।

933

गंगा उफन रही है मालन के रपटे पर पानी है।
वर्षा रेगिस्तान में होना बात बड़ी लासानी है।
होते गर तालाब वहां पर जलसंचय हो सकता था-
संचय नहीं किया तो पानी का रोना बेमानी है।

934

कारगिल विजय दिलाने वाला हर इक सैनिक वंदनीय है।
सिद्ध हो गया अपनी सेना सकल विश्व में अतुलनीय है।
अभिनन्दन है हर सैनिक का हर शहीद को नमन हेमारा-
त्याग और बलिदान शहीदी परिवारों का पूजनीय है।

935

पाकिस्तानी झण्डा जो भी लहराते हैं उन्हें मिटा दो।
काश्मीर से गद्दारों का नाम निशानी सभी हटा दो।
सहन न होंगे देश के दुश्मन अब भारत की सर ज़मीन पर-
जिन्दाबाद प्रिय मोदी जी लाल किले से यह बतलादो।

936

चलो विजय का पर्व मनाये खुशियाँ बाँटे दीप जलायें।
हर शहीद के घर पर जाकर उनको धीरज धैर्य बंधायें।
ऊँचा रहे मनोबल अपनी सेना का ऐसा करने को-
दीपावली दशहरा होली सेना के संग चलो मनायें।

937

इस जन्माष्टमी पर हितेश जी कृष्ण जन्म हो कंस मरण हो।
मिटे राक्षस काश्मीर के राजनीति का नहीं हरण हो।
देश द्रोहियों के ही पुतले दशहरे पर फूंके जायें-
प्रथा बन्द पुतलो पर लिखना भैया रावण कुम्भकरण हो।

938

रक्षाबन्दन पर सैनिक के हाथों में बाधों दो धागे।
भाव हमारी सेनाओं के विश्व विजय का मन में जागे।
बहना करे कामना अपने हर सैनिक की रहे सुरक्षा-
ऐसा शौर्य जगे सेना में शत्रु पीठ दिखा कर भागे।

939

सावधान शासन अधिकारी निकट आ रहे हैं त्यौहार।
और मिलावट खोर हो गये घोर मिलावट को तैयार।
नकली दूध विषैला मावा बनने लगा है गाँवों में -
जिसको खा कर मोक्ष मिलेगा होगा नहीं सिर्फ बीमार।

940

जब तक जिन्दा रिश्वतखोरी घोर मिलावट नहीं मरेगी।
त्यौहारों में नकली घी से बनी मिठाई खूब मिलेगी।
हर वस्तु में घोर मिलावट रिश्वत के बल पर जिन्दा है-
मृत्यु दण्ड हो, सिद्ध मिलावट हो जाने पर, तभी रूकेगी।

941

उस अफसर की नापतौल हो जहाँ मिलावट पकड़ी जाये।
जन्म कुण्डली स्वास्थ निरीक्षक की भी जरा खंगाली जाये।
मिली भगत से ही चलता है चोरी का धन्धा मिलावटी-
त्यौहारों से पहले ही निगरानी सख्त बढ़ा दी जाये।

942

मीडिया जिम्मेदारी से कर्त्तव्यों का निर्वाह करे।
बिके नहीं खबरों को छापे बिना जरा परवाह करे।
सत्य छापना एक पुन्य है सत्य छिपाना चोरी है-
सत्य उजागर करे मीडिया बिना ऊह या आह करे।

943

अन्तरिक्ष में यान भेजने की कहता है पाकिस्तान।
शेखचिल्लियों की भाँति कर रहे घोषणा श्री इमरान।
कर्ज के पैसे से नापाक चला रहा है अपनी कार-
उसके मुँह से यार घोषणा यह लगती सिरफिरा बयान।

944

मेरे उपवन में आती है छोटी सी इक चिड़िया रोज।
फुदक फुदक कर हर डाली पर जाने क्या करती है खोज।
कभी कभी थाली में रखें दाने चुन चुन खाती है-
पेट भरे उड़ जाती है नील गगन में करने मौज।

945

कल क्या होगा यह मत सोचो आज हाथ से मत जाने दो।
कर्म और कर्त्तव्य निभाओ कुत्तों को रोने गाने दो।
आज हाथ से निकल गया तो दोबारा आना मुश्किल है-
ज्यादा मत सोचो अब श्री धर सारे पत्ते खुल जाने दो।

946

न्यायाधीश नहीं है पूरे इसीलिए है न्याय विलम्बित।
सभी प्रकार के न्यायालय में अनिस्तारित वाद असीमित।
न्यायपालिका शासन मिलकर रिक्त पदों पर करें नियुक्ति-
वह अन्याय कहा जाता है न्याय अगर होता है लम्बित है।

947

अधिक अपेक्षा करने वाला दुखी सदा रहता इन्सान।
सह जाता जो घोर उपेक्षा करता है उन्नति महान।
इन दोनों के अन्तर को जो भी हितेश पहचान गया-
जीवन में वह नहीं रहेगा कभी निराशाओं की खान।

948

तीन तलाक कानून बन गया श्रीमन् मोदी जिन्दाबाद।
बोल रही मुस्लिम महिलाऐं भैया मोदी जिन्दाबाद।
नहीं चलेगी धमकी घुड़की नहीं चलेगी मन मानी-
बच्चे अब अनाथ ना होंगे और न महिलाऐं बरबाद।

949

भेद भाव हिन्दू मुस्लिम का करने वाले हैं गद्दार।
भारत में रहने वाले सब भारतवासी हैं स्वीकार।
मानने होंगे हर भारतवासी को भारत के कानून-
धर्म और मजहब आधारित कानूनों से हो छुटकार।

950

जनसंख्या के तुरत नियंत्रण पर भी हो कानून समान।
अब समान आचार संहिता मांग रहा है हिन्दुस्तान।
न्यायपालिका 35ए पर अपना निर्णय करे तुरन्त-
असहमत जो इन बातों से छोड़ जाये वह देश महान।

951

नमन हृदय से सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक मुंशी प्रेमचन्द्र को।
अभिनन्दन सम्राट कथाओं के हम सब का प्रेमचन्द्र को।
तुम वह पहले व्यक्ति थे जो साहित्यिक मुंशी कहलाऐ-
श्रद्धा सुमन सभी अर्पित है भारत गौरव प्रेमचन्द्र को।

952

ग़बन और गोदान सरिखी तुमने लिख दी अमर कहानी।
साहित्यिक भण्डार भर गये तुम ओ साहित्यिक सेनानी।
अधिक मुझे कुछ ज्ञात नहीं है लेकिन इतना कह सकता हूँ-
पढ़ा बहुत कुछ किन्तु तुम्हारा लेखन था सबसे लासानी।

953

कभी किसी की कभी किसी की रोज जयंती बना रहे हैं।
अपनी भक्ति अपनी शक्ति हम समाज को दिखा रहे हैं।
किन्तु आचरण उसके जैसा हम जीवन में नहीं कर रहे-
पुण्य तिथि या जन्म तिथि हम आत्माओं की भुना रहे हैं।

954

अपराधिक संदर्भों में अब राजनीति की बात न हो।
दुष्कर्मी को सजा मिले पर निर्दोषों पर घात न हो।
न्याय प्रक्रिया के चलने में बाधा हो बरदाश्त नहीं-
छोटा हो या बड़ा कोई भी संग में पक्ष:पात न हो।

955

हर घटना को हर किस्से को राजनीति से मत जोड़ो।
सरकारी कामों में बाधा जो भी डाले मत छोड़ो।
बदले की कार्रवाई बताये जो भी न्याय प्रक्रिया को -
उसकी जन्म कुण्डली देखो फिर उसके मुँह को तोड़ो।

956

देवालय हो पंचालय हो भले विश्व का विद्यालय हो।
मजलूमों की भूमि कब्जा कर निर्मित कोई आलय हो।
न्याय प्रक्रिया को अपना कर हो कर, पूर्ण दबाव रहित-
तुरत गिर दो चाहे किसी भी बाहुबली का धर्मालय हो।

957

क्या उन्नाव पीड़िता अपने खड़ी पाँव पर हो पायेगी।
सपने जो देखे थे उसने क्या जीवन में बो पायेगी।
ईश करने ना अगर पीड़िता नहीं बची पर दुष्ट बच गये-
सच मानो फिर नहीं भाजपा इस पीड़ा को ढो पायेगी।

958

सीबीआई जांच क्या होगी बिना प्रभावित हुए किसी के।
पुलिस कार्यप्रणाली पर है मन में शंका आज सभी के।
जनता पूछ रही सत्ता से और देश न्याय मुखिया से-
पूर्ण विषय दुर्गन्ध युक्त है शक होते हैं भगत मिली के।

959

सबके मन को हर्षाता है राखी का त्यौहार सलोना।
भाई भरते बचन हमेशा रहे सुरक्षित मेरी बहना।
राखी के इन दो धागों में ईश्वरीय संदेश छुपा है-
भाई रक्षा का व्रत लेता बहने करती सुखद कामना।

960

भाग्यवान है वह घर जिसमें बहने राखी लेकर आतीं।
सुख से जिये हमारा भैया मन में यह कामना मनातीं।
राखी के धागों का बन्धन हर बन्धन से सर्वश्रेष्ठ है-
भाई भी कर्त्तव्य निभाता बहने भी हैं धर्म निभाती।

961

आजादी का अर्थ है श्री सुभाष बलिदान।
क्रान्तिकारियों से हुआ शुरू यही अभियान।
अवसरवादी ले गये मुफ्त में इसका श्रेय–
झूले फांसी पर मिली तब थी यह श्रीमान।

962

याद करो श्री भगत सिंह सावरकर अशफाक।
आजादी हित स्वयम् को किया जिन्होंने खाक।
बिस्मिल ऊधम सिंह सहित हुए अनेक शहीद–
नमन उन्हें जिनका रहा योगदान बेबाक।

963

गाँधी जी की नियत भी रही सदा से नेक।
किन्तु खटकती हृदय में बाते हमें कुछेक।
हिन्दू अत्याचार पर रहे सदा वह मौन–
कातिल मुस्लिम के लिए अनशन किये अनेक।

964

जिनके कारण मिली है आजादी श्रीमान।
नहीं भूलना देश पर जो मिट गये महान।
पन्द्रह इसी अगस्त को उनको नमन हितेश–
आजादी हित जिन्होंने प्राण किये बलिदान।

965

नाच रहे है मोर कहीं पर कूक रही है देखो कोयल।
आम वृक्ष सब लदे हुए हैं हर डाली पर हैं फल ही फल।
ईश्वर तो दोनों हाथों से हमको वह सब कुछ देता है–
जो जीवन में आवश्यक है केवल हम ही करते है छल।

966

सकल विश्व में जलप्रहार है जिससे हर प्राणी आकुल है।
कल तक जो जल को व्याकुल था आज वहीं जल से व्याकुल है।
जल की कमी बताने वाली सभी घोषणाऐं फर्जी हैं-
संचय कर सकते हो कर लो प्रभु के पास असीमित जल है।

967

गौर से देखोगे तो तुमको साफ नजर आयेगी जड़ता।
लापरवाही बाढ़ें लाती जानबूझकर सूखा पड़ता।
अफसर शाही धन्य हमारी जितना गर्व करें हम कम है-
भूखी कहीं मरे है जनता और कहीं पर गेहूँ सड़ता।

968

कल की चिन्ता क्यों करते हो आज से कुछ बेहतर ही होगा।
हर घटना पर नजर है उसकी जिसको तुमने कभी न देखा।
कर्म करो सत्कर्म करो है अविछिन्न अधिकार तुम्हारा
सत्कर्मों का दुष्कर्मों का रखता है वह लेखा जोखा।

969

जल के जीव सड़क पर आ गये सड़क के डूबे पानी में।
अस्तव्यस्त हो गयी जिन्दगी लहरों की तुफानी में ।
शहर शहर में नाव चली है डूब गये घर गाँव सभी-
कहीं कहीं तो लोग रह रहे पेड़ों बनी मचानी में।

970

काश्मीर का प्रश्न हो गया हल श्री मोदी जिन्दाबाद।
जो समझे जागीर बाप की उनके दाबे मुर्दाबाद।
गद्दारों की नाप तोल हो चाहे कोई नेता हो-
उसके भी पर कतरे जाये जो गुलाम बनता आजाद।

971

अमितशाह को मोदी जी को शुभकामना बधाई ढेर।
सही समय पर लिया है निर्णय हुई ना इसमें देर सबेर।
भारत के दोनों पुत्रों को जनता के आशीष अनेक-
और शक्ति दे ईश्वर इनको भारत माता की है टेर।

972

नेहरू गांधी की गलती को मोदी जी ने दिया सुधार।
काश्मीर का अमितशाह के हाथों हुआ आज उद्धार।
जन्नत नरक बना रखी थी बढ़बोले नेताओं ने-
हुआ विरासत और रियासत दोनों पर ही कड़ा प्रहार।

973

समझ रहे थे काश्मीर को अब्बा की जागीर मियाँ।
गीदड़ धमकी देने वाले निकले बड़े हकीर मियाँ।
वर्ष छियासठ लगे मुखर्जी का सपना पूरा होने में-
अमितशाह ने किया दूध का दूध नीर का नीर मियाँ।

974

जिन्दाबाद हमारा मोदी अमितशाह भी जिन्दाबाद।
काश्मीर के पंडित भी अब होगे जन्नत में आबाद।
लाल चौक पर हिंसा करने वालो की अब खैर नहीं-
मुर्दा हो जायेगा वह जो हमें कहेगा मुर्दाबाद।

975

अपने घर में चीन ने जैसे विद्रोही थे किये हलाक।
वैसे ही अलगांववादियों पर भी डाली जाये खाक।
भड़काने वाला कोई हो या कोई हो पत्थरबाज-
बात करो उससे गोली से देशद्रोही जो हो नापाक।

976
कुत्ते भौंक रहे हैं लेकिन सिंह निकलकर चला गया है।
हाथी साथ साथ है उसके बुरा गया या भला गया है।
नाच रहे हैं मन मयूर से दादूर गीत सुनाते हैं-
कोयल कूक रही हर्षित हो सबका मन छलछला गया है।

977
जन्नत के सारे ही प्राणी बन्धन से आजाद हो गये।
जो नाशाद रहे थे कल तक वह सारे दिलशाद हो गये।
आज विरासत और सियासत दोनो जड़ से उखड़ गयी है-
भारत की जनता फौजों के दिल जैसे फौलाद हो गये।

978
जेएनयू के गद्दारों की नाप तोल अब हो जाये।
टूकड़े टूकड़े गैंग हमेशा कहीं शून्य में खो जाये।
केवल चन्द गिरफ्तारी ही कर देगी माहौल सही-
इनकी जुबां खींच लो मुँह में रह केवल गो गो जाये।

979
देश भक्त थीं बहुत निडर थीं बुद्धि में थीं श्रेष्ठ महान।
श्रीमति सुषमा स्वराज का दुःखद हुआ देह-अवसान।
श्रृद्धा सुमन तुम्हें अर्पित हैं ईश आत्मा को शांति दें-
स्मृतियों में अमर, तुम्हें ना भूल सकेगा हिन्दुस्तान।

980
तुम जब भी भाषण देती थी सुनते थे होकर स्तब्ध।
आज तुम्हारा निधन सुना तो सभी रह गये फिर स्तब्ध।
ईश तुम्हारी आत्मा को दे शांति, धैर्य परिजन पुरजन को-
सुषमाजंलि तुम्हें अर्पित करती है भारत माँ स्तब्ध।

981

सारा सदन जिसे सुनता था तुम ऐसी सुषमा स्वराज थी।
निडर मुखर मर्यादित वक्ता तुम केवल सुषमा स्वराज थी।
पक्षी और विपक्षी सारे देशी और विदेशी नेता-
तुमको भूल नहीं पायेंगे तुम सब की सुषमा स्वराज थी।

982

श्री कृष्ण की तुम गीता थी तुलसीदास की रामायण थी।
नीति निपुण थी कर्म क्षेत्र में कर्त्तव्यों में नारायण थी।
सबके प्रश्नों का उत्तर तुम सरल सहजता से देती थी-
भारत हित में सदा समर्पित राजनीति में पारायण थी।

983

शत् शत् तुम्हें प्रणाम विदुषी शत् शत् तुम्हें नमन करता हूँ।
भावों की पुष्पार्जलि-श्रद्धासुमन तुम्हें अर्पण करता हूँ।
आशीर्वाद बाँसुरी को है नमस्कार है श्री स्वराज को-
इनको धैर्य बधाये इस हित ईश्वर का वंदन करता हूँ।

984

हक तो नहीं दहेज कि जिसको मुँह से मांगा जाये।
और नहीं मिलने पर पत्नि का शव टांगा जाये।
इसको तो सामर्थ खुशी से पिता पुत्रियों को देता है-
अनुचित है धन के कारण मर्यादा को लांघा जाये।

985

भूखा सोया बाप बनी है बेटों के घर खीर।
और कहीं पर पुनः हुआ है हरण द्रोपदी चीर।
मुक्त होये परिवार रहे थे जो कल तक संयुक्त-
भाई बहन के पति पत्नि के मध्य चल रहे तीर।

986

बेटे बन गये बाप जब बाप बन गये बोझ।
उनके हित अब हो रही वृद्धाश्रम की खोज।
निर्बल बूढ़ा क्या करें सोचो जरा उपाय-
कभी कभी भूखा रहे गाली खाये रोज।

987

बच्चा जब इतिहास पुराना पढ़ता है।
फूट देख अपनी जाति में कुढ़ता है।
अंग्रेजी शासन हो या युग मुगलों का-
हिन्दू ही देखा हिन्दू से लड़ता है।

988

तीन सौ सत्तर खत्म हुई मुस्लिम खुश है।
बड़बोला हिन्दू नेता ही ना खुश है।
यहीं स्थिति तीन तलाक की है प्यारे-
हिन्दू हैं विरोध में मुस्लिम संतुष है।

989

फूट हमारी हम पर अब तक हावी है।
रहीं इसी से सदा प्रभावित भावी है।
हिन्दू हिन्दू का विरोध जब करता है-
मन में खुश होता शत्रु मायावी है।

990

जिसमें निष्ठा नहीं देश के और धर्म के प्रति हितेश।
जो विश्वास घात करता है और रोज देता है कलेश।
ऐसा नेता देश द्रोहियों की सूची में डाला जाये-
उसको मिलने वाली सारी खत्म करो सुविधाऐं विशेष।

991

औरंगजेब अभी जिन्दा है उसको पहचाना जाये।
जहाँ कहीं भी नाम लिखा हो कालिख पुतवाना जाये।
मुगलेआजम की पैरो-कारी करता है वह अक्सर-
वह अलगाववादियों से भी बदतर है जाना जाये।

992

झेल रहा है बाढ़ भयंकर अपना आधा हिन्दुस्तान।
अचरज हुआ जानकर डूबा है पानी में रेगिस्तान।
ईश्वर कृपा करे अब हम पर छुटकारा दे पानी से-
डूब गये है गांव शहर सब डूब गये काफी इन्सान।

993

तीन सौ सत्तर हटी तो झूमा हिन्दुस्तान।
हिन्दू सिक्ख ईसाई भी है प्रसन्न सलमान।
लेकिन अपने देश में जिन्दा हैं गद्दार-
हो गये खड़े विरोध में कुछ हिन्दू श्रीमान।

994

नारा तो आदर्शवाद का देते है सारे गद्दार।
भला बुरा हिन्दुस्तान का नहीं सोचते है मक्कार।
निजी स्वार्थ में विकृत बुद्धि केवल सुर्खी में रहने को-
तीन सौ सत्तर हटी तो उसके हैं विरोध में रगे सियार।

995

हो सके जितने भी उतने पाप कर।
है मुझे भी गर्व अपने आप पर।
छप रहा हूँ मैं समूचे विश्व में-
मत बहुत खुश हो मुझे ना छाप कर।

996

छप चुकी अब तक बहत्तर पुस्तकें।
और भी तैयार हैं कुछ पुस्तकें।
मेरा आश्वासन है यह साहित्य को-
सौ करूँगा पूर्ण लिखकर पुस्तकें।

997

इतना न कर घमंड कि वह शाख टूट जाये।
हँसते हुए बैठा है रोता ही नजर आये।
ऐसा ना हो कि सोचें तट पर खड़े सभी-
अब डूब रहा है तो, जाने दो डूब जाये।

998

वैद्यराज की बात को सुनें अगर दे कान।
तो भी करना ना पड़े कोई रोग निदान।
रोग भोग से दूर रहे नित्य करो तुम योग-
तन मन दोनो श्रेष्ठ हों बने सुदृढ़ बलवान।

999

फल सब्जी में छिपा है स्वास्थ खजाना मित्र।
नियमित जो सेवन करे निखरे जीवन चित्र।
मौसम के फल खाईये प्रातः उठकर रोज-
तन मन में फिर देखना परिवर्तन अविचित्र।

1000

दुआ अधिक ले दवा से थोड़ा करें परहेज।
मातपिता की दुआ को भैया रोज सहेज।
शाकाहारी व्यक्ति के तन मन रहते स्वस्थ-
स्वहित मांसाहार से करिये सदा गुरेज।

1001

माँ के आशीर्वाद से तन मन रहे निरोग।
उसकी स्नेहिल दृष्टि ही करती दूर कुयोग।
यात्रा के आरम्भ पर ले माँ का आशीष-
जो पहला पग राखते बने सुखद संयोग।

1002

तेरा बुरा जो सोचते कर दे उनको माफ।
ईश्वर अपने आप ही कर देगा इन्साफ।
शुभ शुभ सबका सोच तू पूजा यही हितेश-
हर शत्रु का एक दिन गिर जाता है ग्राफ।

1003

जो कुछ भी मैं कहता हूँ उसका कथन गूढ़ समझो।
अर्थ व्यर्थ आलोचनाओं को बन्द करो मूढ़ समझो।
जो जनहित में हो उसको ही लाओ निज व्यवहार में तुम-
एक एक शब्दाक्षर का तुम अर्थ बूढ़ बूढ़ समझो।

1004

जैसे हटी तीन सौ सत्तर अंग्रेजी वर्चस्व हटे।
न्यायालय में कार्यालय में इसका तुरत प्रयोग घटे ।
नौकरी में संसद विधायिका में हिन्दी आवश्यक हो-
अंग्रेजी की आवश्यकता सभी क्षेत्र से मित्र मिटे।

1005

बीत गया राजी सुखी राखी का त्यौहार।
गहरा हल्का छलक गया भाई बहन का प्यार।
रक्षाबंधन की मगर है कुछ बात विशेष-
यो तो भारत वर्ष में हर दिन है त्यौहार।

1006

स्वतंत्रता की वर्ष गांठ पर गांठ खुले अब हिन्दी की।
निःसंकोच घोषणा हो अब राष्ट्र की भाषा हिन्दी की।
निज भाषा पर गर्व करें हम अंग्रेजी से दूर रहे-
ऐसा करें प्रयास कि लौटे चमक हमारी हिन्दी की।

1007

चीन हमेशा पाकिस्तानी पक्ष लिया करता है।
बात सही हो या कि गलत हो उसके साथ खड़ा रहता है।
कई हजार अरब डालर का कर्जदार है पाक चीन का-
कर्जदार को अपने साहूकार नहीं मरने देता है।

1008

चीन उसे मरने ना देगा जनता भी जीने ना देगी।
काश्मीर में तीन सौ सत्तर हटी उसे सोने ना देगी।
चेहरा देखो मुरझाया है आँख पपोटे भी भारी हैं-
भूखा-है इमरान खान पर फिक्र उसे खाने ना देगी।

1009

पीओके में धीरे धीरे रोज बगावत उबल रही है।
अपनी परछाई के डर से पाकी तबियत उछल रही है।
अजब गजब हालत चमगादड़ जैसी है पाकी फौजों की-
जिस मुँह से खाती है अपने उस ही मुँह से उगल रही है।

1010

खुश है बच्चे बुढ़े सारे काश्मीर में रुत बदली है।
हर चेहरे पर इक सुकून है जैसे धूप नई निकली है।
तैर रहे हैं आज शिकारे आजादी से डल के ऊपर-
बिगड़ी हुई व्यवस्था सारी धीरे धीरे अब सँभली है।

1011

जीवन पर हावी रहती है मानव के कर्मों की छाया।
जान नहीं पाता है प्राणी उसने क्या खोया क्या पाया।
भूल भूल्लईया लालबुझक्कड़ जैसा जीवन हम जीते हैं-
अजब गजब है लीला उसकी अजब गजब है उसकी माया।

1012

जिसने सम्पत्ति को हानि पहुँचाई।
उसको ही करनी होगी अब भरपाई।
आँच ना आये निर्दोषों पर ध्यान रहे-
सजा सख्त हो सभी दोषियों को भाई।

1013

गोली के संग अंगारों की बारिश थी।
छवि खराब हो भारत की यह कोशिश थी।
मुस्लिम वोटों के जो भी सौदागर हैं-
सोची समझी यह सब उनकी साजिश थी।

■■■

पारिवारिक फोटो



एक पारिवारिक फोटो, नीचे बैठे हुए बांये से उमा, बीच में पूनम (नौकर की गोद में), रमा, कुर्सी पर बैठी हुई अम्मा तथा गोद में लता, बीच में दादी तथा बांये पिताजी, पीछे खड़े हुए हरीश, सरोज तथा हितेश कुमार शर्मा